साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 34, अप्रैल(प्रथम), 2018

उस पार

संतोष गोयल

वह ट्रेन में चढ़ चुका था. अपने लिए जगह भी खोज ली थी. बैठ गया. मन शांत हुआ ! शांत मन से उसने सोचा-- अब अपने घर के बारे में सोच सकता हूं .परिणाम- माँ, बाबा तथा छुटकी सभी याद आने लगे---एक-एक करके !. आखिर वह उन से जुड़ा भी तो था. बाबा जब भी आते उसे दूर-दूर घूमाने ले जाते बाहर खाना खिलाते ,छुटकी के लिए चॉकलेट और गुड़िया लाते 15 दिन भी रहते तो भी इतना प्यार देते कि हम साल भर तक उनकी याद में रह लेते. ऐसे थे बाबा. हालांकि बाबा सदा खर्च भेजते रहते फिर भी अम्मा शास्त्री जी के घर में काम करती तथा हमारे लिए पैसे लाती. वह हमें अच्छी शिक्षा देना चाहती थी अच्छे स्कूल में पढ़ाना चाहती थी! यह अबबा अम्मी दोनों की इच्छा थी! अब वह एमबीए कर चुका था तथा इंटरव्यू देने मुंबई आया था !दिल्ली के लिए वापसी का सफ़र करना था बस अपने घर पहुँच जाना था!ववह बहुत खुश और शांत था तभी जोर का धमाका हुआ! स्टेशन पर भगदड़ मच गई! चारों तरफ भयानक शोर था !लोग चिल्ला रहे थे! ट्रेन सारी खाली हो गई! सब नीचे उतर गए उसको लगा ट्रेन में कोई धमाका हुआ है परन्तु पता नही! वह सोचता रहा और धीरे-धीरे स्टेशन पर आ गया! पूछे किससे क्या हुआ है? पुलिस वालों के जूतों की आवाज़ आने लगी--ठक--ठक!वह एक कोने की ओर जा कर खड़ा हो गया !वहां बहुत भीड़ थी!बहुत से लोग थे! वह चुपचाप भीड में खड़ा रहा ! सोचने लगा किससे पूछें ! लोग आपस में बात करने रहे थे! जोर-जोर की चीख़ रहे थे!उसे समझ नहीं आ रहा था कौन क्या कहना चाहता है पर सभी बम के बारे में बात कर रहे थे! सभी के मन में अनेक प्रश्न जन्म ले रहे थे! उसने कुछ वक्त लोगों के बोलने का इंतजार किया!फिर बराबर वाले से पूछा कि क्या हुआ है

उसे खुद कुछ नहीं पता था !वह भी लोगों से पूछ रहा था पर सब लोग घबराएं थे कोई कुछ नहीं जानता था पर जानना बहुत कुछ चाहता था !

तभी अनाउंसमेंट हुआ -सब स्टेशन से बाहर निकलें और घरों में छुप जाएं.! शायद किसी दूसरे धमाके का अंदेशा था. सबके साथ वह भी भागा और छिपने की कोशिश करने लगा तभी एक पुलिसवाला सामने आया! उससे प्रश्न करने लगा !उसका नाम पूछा! अमन ने बताया-

“अमर”

“ अमर क्या ?आगे?

“ जी !अमर महाराज.”

“ महाराज ?महाराज की कोई जाति होती है!”

“ मेरे पिता एक महाराज का काम करते है इसलिए हम यही लिखते है.”

“ अच्छा कहां काम करते है?.”

“ कराची में.”

“ क्यों ।कराची में क्यों?. यहां यहां क्यों नहीं करते?”

“ पता नहीं सर. मैंने तो हमेशा उन्हें वहीं जाकर काम करते देखा है क्यों करते है मैंने कभी नहीं जानना चाहा.अब की बार आएंगे तो पूछ लूंगा. कहूंगा कि बाबा यही काम कर ले. जनाब.”

कहकर उसने मुंह सामने की और घुमाया और बाहर की तरफ देखने लगा,जिस तरफ़ बहुत अफ़रा तफ़री मची थी!

थोड़ी देर में पुलिस वाला दूसरे आदमी के पास चला गया जिसका नाम पूछा तो पता चला कि उसका नाम अरशद है.

नाम

अरशद !

पुलिस वाला कुछ चौकन्ना हुआ उसने अरशद का हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ ले चला. सभी हैरानी से उसकी ओर देखने लगे. किंतु पुलिसवाला सब की निगाह की और ध्यान न नहीं देता हुआ चलता गया! वह अरशद के बारे में सोचने लगा ! सच तो यह था तो उसका खुद का नाम अमन खान था किंतु वह इतना डर गया था कि उसने अपना नाम भी बदल कर बता दिया . ऐसा क्यों हुआ ,नहीं जानता था! शायद मन के किसी कोने में था कि यह हिंदुस्तान है यहां बम फटने पर मुसलमान होना गुनाह हो सकता है.!

समय भी अजीब चीज है कैसे और क्या बात कब दिमाग में आती है क्या बात मन असर करती है कारण क्या होता है कुछ समझ नहीं आता! स्थिति और उनके प्रभाव अपने आप बदलने लगते है. अमर को यह बात समझ आ गई थी पर यह समझ नहीं आया था उसने अपना नाम अमर क्यों चुना ?शायद अमन का सबसे आसान अमन ही बनता था इसलिए!

स्टेशन पर भगदड़ मची थी.

इस समय अमन के दिमाग में दिल्ली पहुंच कर घर जाने और फिर लौटकर मुंबई आ नौकरी करने की चिंता कहीं अधिक थी किन्तु यह चिंता भी थी की बम कहां !कहां फटा कितना नुकसान हुआ कौन लोग थे जिंहोने बम चलाया और क्यों. अरशद की भी याद आई आखिर पुलिसवाला उसे लेकर कहां गया? अमन

सोचता रहा और अपनी अकल पर अपना कंधा थपथपाता रहा कि उसने समय रहते अपना सही नाम नहीं बताया. पर वह डर बहुत गया था.

स्टेशन के बाहर लगे गली टेलीफोन बूथ पर लंबी भीड़ थी लोग अपने-अपने घरों पर बात करने के लिए बेचैन थे । धक्का मुक्की हो रही थी वह भी उस लाइन में जाकर खड़ा हो गया जो इतनी लंबी थी के बाहर तक जा रही थी. एक घंटा बीत गया उसका नंबर आया और उस ने मम्मी को टेलीफोन पर सब समझा दिया यह भी तो उसकी नौकरी लग गई है वह एक दो दिन में दिल्ली पहुंचेगा सामान लेकर वापस मुंबई आएगा तथा नौकरी पर लग जाएगा. मम्मी बहुत खुश थी. आखिर उनके द्वारा की गई मेहनत रंग लाई है उनका बेटा पढ़ लिख कर नौकरी पर लग गया है इससे अच्छा क्या हो सकता है किसी मां बाप के लिए. अब अमन अपने नाम को सोचने लगा उसके सारे सर्टिफिकेट पर उसका नाम अमन खान लिखा ही लिखा है कोई किसी भी समय उसका असल नाम जान सकता है तब क्या होगा यह सोचकर वह काँप गया. अब उसका ध्यान अपने नकली वह उसी समय बनाए गए नाम की ओर गया।. उसे कोई अच्छा बहाना चाहिए था यदि किसी को पता ना पड़े तो क्या बताएगा क्या कहानी सुनाएगा क्या बहाना लगायेगा।यह सोचने लगा। तब अपने स्कूल का दोस्त अमर याद आया अमर---- अमर शर्मा था वह जिसे उसने अमर महाराज बना दिया था. उसे तसल्ली मिली कि यह तो सही था के बाबा महाराज के नाम से जाने जाते थे पाकिस्तान में भी और दिल् ली में अपने पास पड़ोस में यहां तक शास्त्री जी भी उन्हें महाराज यह कहकर पुकारते तथा इज्जत देते.

अमन जिस मोहल्ले में रहता है वह असाधारण गरीब लोगों का मोहल्ला था. शास्त्री जी जैसे लोग एक आध ही थे. अधिकतर लोगों का काम खेती-बाड़ी था कुछ लोगों की किराने की दुकान थी कुछ साइकिल स्कूटर ठीक करने वाले मकैनिक थे परंतु शास्त्री जी उन सबके सर परस्त माने जाते थे. उनकी पत्नी दोनों सभी लोगों के सुख-दुख का ध्यान रखते उनकी सुविधाओं को देखते उनके बच्चे पढ़ते है या नहीं इसकी जांच पड़ताल करते तथा समय-समय पर उनकी सहायता करता है इसीलिए शायद छोटे से मोहल्ले के माननीय आदरणीय महानुभाव माने जाते सभी लोग हिंदू या मुसलमान उनके पैर छूते उनके कथन को पत्थर की लकीर मानते है ऐसे थे शास्त्री जी और ऐसे थे मोहल्ले में रहने वाले लोगों दिन के भीतर ना हिंदू होना अर्थ रखता था न मुसलमान होने के कोई मायने थे. ऐसे मोहल्ले में रहते हुए भी बम फट ने जैसी घटनाएं मन में दहशत पैदा करती थी परिणाम हर कोई वहां से बचने की कोशिश करता ही था जो अहमद ने ने भी की.

बटवारा होने से पहले भी वह कराची में ही स्टेशन के पा के ढाबे में काम करता और पता नहीं क्यों लोग उसे महाराज या खान सामा कहते और वह चुपचाप य खाना आना किसी ने कहा गाना उसने सोचा कि उसे अपना नाम सबको बताना चाहिए जिस का परिणाम उसे बहुत बाद भुगतना पड़ा उसे ही नहीं पुत्र को भी और यह अब बाद में.

लोग इधर-उधर सिखने की कोशिश में आंख भी असलियत जानना चाहते थी है इसलिए काम लोग की बातों की तरफ लगे हुए थे अफवाहें चार और बोल रहे थे नवा की तेजी से इधर-उधर भागती फिर पता चला कि वह किसी झुग्गी झोपड़ी बस्ती के भीतर रखें कूड़े के डिब्बे डिब्बे में कटा था और सारी झोंपड़ियां जल गई थी एवं काफी ताकतवर था असल में तो सड़क पर चलते लोगों पर भी उसका प्रभाव पड़ा अनेक लोग घायल हुए थे रोने की आवाज़ ढूंढ रहे थे और यह रिश्ता स्टेशन के काफी आसपास था इसीलिए स्टेशन पर इतनी शोर का धमाका सुनाई पढ़ा था. यह सब जान लेना आनंद के लिए बहुत ही दुखद था वह घबरा रहा था अब घर वापस कब और कैसे लोट पाएगा ।अ मन की अम्मा को फोन पर उसने जो बताया काफी शांति दायक था किंतु अब समस्त स्थिति का सच जो रेडियो पर संध्या के समय आई सुनकर मम्मा तनाव आ यह बात सोचकर वह घबरा उठा था उसने फिर से मां का फोन मिलाया उसे समझाया और यह बताया की गाड़ी से नहीं अब वह बस से दिल्ली आएगा शायद पहुंचने में ए समय अधिक लगे इसलिए दे चिंता ना करें छुटकी का ध्यान रखें और खुश रहें. इतना सब तैयारी के बाद यह शांत हुआ.

आसपास के लोगों से बातचीत की बस अड्डे का पता किया और यह भी दिल्ली की बसें चल रही है या नहीं यह भी की ट्रेन कब तक चल पाएगी. ट्रेरी चलने का तो किसी को पता नहीं था अतः में बस अड्डे का पूछकर उस औरत चल दिया. बस में बैठकर इस स्थान से निकल जाना ही सबसे बड़ा हम दिखाई दे रहा था. बस स्टॉप पर आ कर उसने धाकरे चलती हुई बस को पकड़ा आशा भाग्य से वह दिल्ली ही जा रही थी विकेट लिया और दिल्ली की तरफ चल दिया. उसका अभियान पूरा हो गया था. नौकरी भी मिल गई जो उसे अगली पहली तारीख को जॉइन करनी थी तथा आइस बीच में ए कराची जाकर अब्बा का बाबा का ना पता चलेगा ना था आओ आईमुझसे मिलना भी था आखिर बाबा इस साल आए क्यों नहीं थे क्या हुआ फिर उन्होंने चिट्ठी भी नहीं ले कि आखिर क्यों ना पैसे भेजे जो कभी नहीं भूलते ए वह कैसे भूल गए अब्बा ठीक है कहीं बीमार तो नहीं यह सोचता हुआ वह बस में बैठा रहा बस चलती रहेगी धीरे-धीरे उसे झपकी आई और वह सो गया अजीब बात है इस पंप फटने जैसी तनाव भरी घटना के साथ होकर भी वह जरा सा दूर आते ही सो पाया? यह मानव का कौन सा रूप है कैसा मन है एक पल मेंे तनाव से पाला पड़ जाता है तो दूसरे ही पल शांत हो कर सो जाते है? हैं अजीब सी पर यह भी सच है.

नमन पाकिस्तान जाने की सोचने लगा था समझौता एक्सप्रेस चल रही थी अब उसे चलते हुए भी तीन वर्ष हो गए थे इस में जाना आसान भी होने लगा था परंतु इस बम फटने की घटना के बाद कहीं स्थिति बदलना जाए यह सोच कर वह घबरा भी रहा था. उसने निश्चय किया कि वह मां को कुछ नहीं बताएगा हां आज 8 तारीख है मुझे नौकरी पर ए पहली तारीख को जाना है तब तक 22 दिन है यदि कल ही टिकट बनवा लूं और कराची की ओर चल दी तो22 दिन में वापस भी ला सकता हूं. इस सोचने उसे अब्बा के चारो तरफ लाकर खड़ा कर दिया अब्बा से मिलकर अमन उनके स्नेह और प्यार में डूबने लगा ना अब्बा से गले

लगने लगा और और नौकरी की बात बताने के लिए आ बेचैन होता उसे लगा बब्बर रब्बा सामने है शायद वह है सपना देख रहा था तभी तो अब्बा का हाथ उसे अपने सिर पर महसूस हुआ.

था सपने कितनी खूबसूरत होते है हम जो चाहते हैं वह सपने में ही लेते हैं अब्बा से मिलना भी एक सुंदर सपना था वह मुंबई से दिल्ली के सफर में अब्बा के पास पहुंच गया था आखिर यह पूरा होने पर मैंने शांत और प्रसन्न क्यों ना होता.

दिल्ली के बस अड्डे पर पहुंचते ही अब उसका मान भागने को करूं था उसे लगा कि जल्दी से जल्दी घर और पहुंच अम्मा से मिलो छुटकी को प्यार करो और अब्बा के पास जाने की तैयारी करो ज़रुर रब्बा ऐसे ही होंगे जैसे मेरे सपने में मिले थे इतना मजा आएगा ए उसने सोचा और खुशी तो ए सैकड़ों दिए जल उठे.

अम्मा के पास पहुंच कर लगा मानव वह अपने घर आ गया हूं अम्मा के साथ हर शब्द जुड़ा होता है शायद पर अत्यंत प्रसन्नता मां ने कहा

अमन कैसा था मुंबई?

अम्मा देख कहां पाया कुछ भी एकदम घर वापस आ गया था क्योंकि पहली तारीख से नौकरी शुरू करनी है उससे पहले में बाबा से मिलने जाना चाहता था समय कम था इसलिए बस ली और एकदम उसने जवाब और छुटकी को गोद में उठा कर घुमाने लगा अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करने का इससे अच्छा तरीका उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था अमन की अम्मा सोच रही थी कि अमन खुश क्यों है? नौकरी का लग जाना उसका ही नहीं हम और बाबा का भी सपना था और वही आप मिल गई थी अभी खुश है अम्मा ने उसी दिन घर के घर पर हलवा बनाया था और सब ने साथ ले ले कर खड़ा था खुशी की क्या परिभाषा को कोई नहीं पता नहीं मन कब किस बात पर खुश होता है और कब निराश? अबे कुछ समय पहले मुंबई में खड़ा वह है निराशा ने जूस निराशा से जूझ रहा था और आप इतना प्रसन्न की प्रसन्नता भी दर्शना नहीं रही थी सबके खिला रहे थे अब्बा की कमी महसूस हो रही थी और वह जल्दी करना चाहता था कि अब्बा से मिलने जा सके अगले ही दिन वह स्टेशन पर गया समझौता एक्सप्रेस जो काफी समय से चल चुकी थी उसी के टिकट लेने ए की कोशिश करना चाहता था जो नहीं मिल पाया. मुंबई दुर्घटना का कुछ तो असर था. समझौता एक्सप्रेस ने टिकट मिल ले बंद आयशा हो गए थे उस के लिए टिकट की व्यवस्था करना आ मुश्किल हो उठा था अभी उसे ए सुमन के भाई नमन की याद आए अब मैं समझा कि मुंबई में एजर पुलिस वाले ने नाम पूछा था तब की उसने नमन कहा आखिर नाम से वहपरिचित था इसीलिए शायद यही नाम उस समय ध्यान आया जिस कारण वह बच कर वापस अपने घर आ गया थैंक्यू गॉड उसके मन में आया. नमन ही स्टेशन स्टेशन के खोखो में उसे ढूंढने की कोशिश कि वहां बहुत से लकड़ी के छोटे-छोटे गंदे से बने हुए थे जिनमें में बहुत भीड़ थी. उसने उस दिन में नमन को खोजने की कोशिश की किंतु उस दिन में किसी

को खोजना अत्यंत कठिन था अचानक दूर से आता हुआ उसे नमन दिख गया है खुश हुआ अच्छा हुआ है कि नमन बाहर ही मिल गया आगे बढ़कर उसने नमन से मुलाकात की हाथ फैलाया उसे गले लगा आ सब का हाल पूछा आसम सुमन की तबीयत का हाल पूछा इस प्रकार अपनापन जाहिर करते हुए उसके साथ-साथ उस पर खोखे पर आ ग ओके पर आ गया

बताओ क्या काम है?

यहां आने का मतलब किसी टिकट की जरुरत ही होती है जहां तुम हो वहां पर यही काम महत्वपूर्ण होता है. अमन ने उसका महत्व को दर्शाती हुई कहा

न नमन हंस पड़ा मुस्कुराते हुए पूछा

हां हां बताओ क्या चाहिए ? नमन को विश्वास था किधर है अमन की समस्या का हल कर सकता है अतः अत्यंत विश्वास से पूछा था आ किंतु अमन की समस्या तो बहुत बड़ी हो गई थी मुंबई में बम फटने की घटना से बहुत कुछ प्रभावित हुआ था जिसमें पाकिस्तान का सफ़र करना इतना आसान ना रहा था समझाता एक्सप्रेस के टिकट नहीं मिल पा रहे थे अमन के बताने पर कि उसे समझाता एक्सप्रेस में टिकट चाहिए वह अपने पिता के पास जाना चाहता है नमन का मूल अटक गया और उसने कहा

; यह तो आज बहुत मुश्किल है.

क्यों भाई क्या हुआ?

आ क्यों क्या आप मुंबई की घटना नहीं जानते

जानता हूं पर कल जी की तो बात है इतनी देर में क्या फर्क पड़ गया

पड़ गया भाई जब भी कोई बंबू फटता है तो असर हिंदुस्तान पाकिस्तान के रिश्तों पर पड़ता है यही रखता है किस के पीछे पाकिस्तान की किसी संस्था का ही हाथ है.

एक ही दिन में सब कुछ हो गया सब बदल गया. आपस में क्या करुं मुझे तो अब्बा से मिलने जाना ही है कुछ जुगाड़ लगाओ कुछ करो और टिकट का इंतज़ाम कर दो किसी भी तरह.

शायद कुछ खर्चा ज्यादा हो देखो कोशिश करता हूं.

नमन कुछ ऐसे लोगों को जानता था जो इस तरह का धंधा करते थे तभी उसने अमन को विश्वास दिलाने की कोशिश की थी हमने मान लिया था चाहे खर्चा ज्यादा हो तभी समझौता एक्सप्रेस का टिकट चाहिए ही अतः वह वहीं बैठ गया नमन टिकट का इंतज़ाम करने चल पड़ा

दो घंटे बीत गए नमन अभी तक लौटा नहीं था अमन के बनने चिंता घर कर रही थी उसने अब्बा से मिलने की जो योजना बनाई थी जो खुशी उसके मन में हिलोरे ले रही थी वह अब हम पढ़ने लगी उसके स्थान पर डर बैठ गया शायद वह अब्बास अब्बा से मिल उसे बुरा लगा मन ही मन दुख हुआ निराश इधर-उधर देख रहा था तभी तभी नमन दिखाई दिया आप क्या था उसकी आशा आंखों में उतर आई थी आशा भरी निगाह से नमन को देख रहा था नमन जिस तरह चल रहा था उसी से उसे लगा कि शायद काम हो गया है नमन

को देखकर खड़ा हो गया खोके से बाहर आया और आंख आंख काम हो जाने का इशारा देखकर खुश हो गया उसी के आलम में मैडम से निपट गया और टिकट थाम कर शांति की लंबी सांस लेने लगा.

थैंक यू दोस्त बहुत बड़ा काम किया है तुम ना होतेतो क्या होता?

कुछ नहीं भैया मैं ना होता तो कोई और होता काम तो होता ही है और वह भी जाने चाहिए बहाना कुछ भी बने चलो अब यह कल का टिकट है ध्यान से जाना इस समय थोड़ा और तनाव भरी स्थिति है अतः ध्यान रखना जरुरी है. अपना आईकार्ड अपने कुछ पहचान पत्र अब्बा के सभी परिचय की चीजें बेशक अपने साथ रखना ताकि है अगर कोई पूछे तो तो सही सही परिचय देश को ओके बेस्ट ऑफ लक,

ए कहते हुए नमन नमन उसे जाने का इशारा किया क्योंकि भीड़ बहुत थी और वह दो घंटे से वहां था नहीं उसे अपने और काम निपटाने थे उसने अमन से पैसे लिए और बाय-बाय कहां

टिकट लेकर जाते हुए अमन के पैर हवा में उड़ रही थी अब्बा से मिलने की पाकिस्तान जाने की कल्पना ने एजेंट खुशी दी थी उसको दहन व्यक्त करने में असमर्थ पा रहा था जल्दी-जल्दी घर पहुंचना चाहता था ताकि अम्मा को बता सके जो पिछले साल भर से अब्बा की कोई खबर ना मिलने पर अत्यंत दुखी थी तनाव व्यस्त थी और चाहती थी ओके कोई अब्बा की खबर ना के थे उनसे मिल कर आए ओके पता चल पाए कि वह ठीक-ठाक है यूं ही काम पर जाती की वजह से नहीं आ पाए है.

घर पहुंच कर उसने और मां ने मिलकर भाग दौड़ कर तैयारी की कुछ कपड़े रखे कुछ अब्बा के लिए चीज़ें कुछ अपने जरूरी कागजात टिकट कुछ पैसे ए सच्ची में रखकर वह तैयार होकर छुटकी को ले चुटकी को लिए घर से निकल निकल गया शास्त्रीय जी के यहां जाने के लिए उनके यहां जाना और अपनी समस्त स्थिति बताना बहुत आवश्यक था उनका आशीर्वाद लेना अत्यंत जरुरी शास्त्री जी की पत्नी जिन्हें वह बड़ी अम्मा कहता उनके पास होना बहुत जरूरी था आशु जी के यहां पहुंचा शास्त्री जी घर पर नहीं थे बड़ी अम्मा थी गाउन है मेमरी अम्मा के चरण स्पर्श किया आशीर्वाद लिया चुटकी को अम्मा ने गोद में उठा या प्यार किया और बैठने को कहा.

थोड़ी देर में शास्त्री जी भी आ गए उन्होंने सब का हाल पूछा. जब अमन ने अपनी नौकरी और अब्बा से मिलने जाने के बारे में बताया तो दोनों बहुत प्रसन्न हुए. दोनों ने एसर पर हाथ रखा आशीर्वाद दिया अब्बा के संबंध में ए शुभकामनाएं दी कुछ रुपए उसके हाथ में रखते हुए कहा

; यह रख लो समय पर काम आए

अमन ने लिखते हुए दे रुपए लिए और फिर से एडोन का चरण स्पर्श किया

केवल शास्त्रीय जानते थे कि इस मोहल्ले में रहने वाले लोग के बीच अमन नाम का एक मुसलमान परिवार रहता है उंहोन्ने किसी और को नहीं बताया था कारण स्पष्ट उठाने नहीं चाहते थे ए के लोग उनकी उपेक्षा करें अथवा ने अलग नजर से देखें यह. ए बाथ अमन के परिवार के इसलिए बहुत महत्वपूर्ण थी शास्त्री जी इसलिए उनके लिए बहुत आदरणीय तथा पूजनीय थे,

अगली सुबह इमरान के लिए ए नई सुबह कि ब वदह हवा से मिलने जाने वाला था अम्मा से मिलकर छुटकी को गोद में उठा कर प्यार कर वह अपनी अटैची उठाकर स्टेशन के लिए निकल गया राष्ट्रीय में उसे नमन बिना उसने उसे पुनः शुभकामनाएं दी हाथ मिलाया और अमन चल दिया .उसे नहीं पता था की टिकट की व्यवस्था किस प्रकार की गई है किसने की है और उसके पीछे कितने अगर मगर छिपे है वह तो खुश मनसे ए अपने पिता से मिलने जा रहा था स्टेशन पर पहुंचा समझौता एक्सप्रेस स्टेशन पर ही खड़ी थी उसके चलने मेरा भी एक घंटा पापी था चारो तरफ भीड़ थी आप आ जाते बची हुई थी वह चाहता था आप यह बहुत कुछ ले खरीदे अब्बा के लिए ले चले परंतु कुछ नहीं किया सामान स्टेशन पर ढेरो की तादाद में दिख रहा था इतना सामान ट्रेन नेचर कैसे पाएगा वह यह है सोचता रहा किंतु सोचने से क्या लाभ और उसके पास तो एक अटैची भर्ती उसे तो वही लेकर उस दिन भगत के में ट्रेन में जाना था उसने टिकट को देखा अपना सीट नंबर जांचा और ट्रेन के भीतर फंस गया उसे पता था कि शीट ऋषभ है अतः शांति था उसकी सीट पर किसी और का सामान रखा था जैसे उसमें कटवाया आओ और अपनी सीट पर बैठ गया लोगों ने कोई हेलो चेतना की उसके टिकट पर नाम नमन लिखा था उसने देखा तो हैरान हुआ यहां से ठीक है यहां हिंदुस्तान में उसका नाम नमन ठीक है कोई दिक्कत नहीं करेगा आप इन तो पाकिस्तान में ए क्या होगा वह सोचने लगा परंतु अब कर ही कह सकता था .अमन के पास चिंता करने को बहुत कुछ था उसने सामान अपने पैर के पास रखा है घोड़े और सामान के ऊपर रख कर बैठ गया ट्रेन में बैठे हुए लोग अलग-अलग भाषा भाषा थे सब अपनी भाषा में बात कर रहे थे उसके पास एक बुजुर्ग दंपत्ति बैठे थे जो खालिसपुर दो बोल रहे थे मैं उनसे बात-चीत करना तो नहीं चाहता था आप और वह लोग चुप बैठने वाले नहीं थे ए पहले तो यह उनकी बातें सोचता रहा उनकी बातों से पता नहीं लगा कि वह मुंबई में अपने बेटे की शादी के लिए आए थे लड़की का पासपोर्ट ना बन चुका था बहू को लेकर नहीं जा सक रहे थे यही उनकी चिंता का विषय था और यही विनती बातचीत का मुद्दा भी लड़की अपने घर रह गई थी ताकि पासपोर्ट बने और वह पाकिस्तान पहुंच सके ट्रेन धीमी गति से चल तू कभी भागता हुआ एक कमजोर आदमी डिब्बे में चाहा और उसके बगल में बैठ गया था वह सब को भूकंप दे रहा था सत्य सामान चेक कर रहा था मानो वह कोई बड़ा अफसर हो ट्रेन में गति पकड़ अली अमन ने चैन की सांस ली और यह समझ लिया कि अब वह कराची पहुंच जाएगा अब वह अब्बा से मिलने की योजना के बारे में सोचने लगा उसे विश्वास हो चला था कि वह अब्बा से अवश्य ही मिलेगा खुदा करें वह स्वस्थ बीमार ना हो क्या कारण था कि उंहोन्ने परिवार को याद नहीं किया आ चिट्ठी नहीं देखी और ना आए अमन ने अब्बा को अपने कराची आने के कार्यक्रम के बारे में नहीं बताया था ना वह पुणे चुपके से वह ने चुपके से मिलना चाहता था आ मैं जानता था ए के असल स्थिति जानने के लिए चुपचाप पहुंच ना ही बेहतर रहेगा.

ट्रेन के चलने पर लोग में शांति की सांस ली सब अपनी-अपनी जगह जमकर बैठ से इस इंतजार में कि अब उन्हें अपने अपने स्थान पर पहुंच जाना है पहुंच जाना है धीरे-धीरे लोगों में से एक दूसरे को जानने समझने तथा उन से बातचीत करने की इच्छा जाग ईसब आसपास में पूछने लगे कि वह कहां जा रहा है और कौन है उसका नाम क्या है इत्यादि अमन किसी से बात तो ना करना चाहता था पर व्यवस्था थी जब इतने लोग बात कर रहे हो तो चुप ही कैसे रहे उन लोग से धीरे-धीरे चुपचाप में रहते हुए भी बातचीत होने लगी है ट्रेन अमृतसर की ओर जा रही थी फिर उसे फिर उसे अटारी बॉर्डर पर पहुंचना था यह जान कर एक व्यक्ति ने अपने अनुभव शरण सुनाने शुरू कर दिए कहने लगा

जानते हो हम यहां बैठे है बागा बॉर्डर से सिर्फ एक किलोमीटर की दूरी पर पहुंचेंगे यहां हर दिन मिलिट्री की स्ट्रीट सेरेमनी होती है अगर मौका मिला तो शायद हम देख पाए

सुनने वाले उस उस को दे दी थी उस सेरेमनी को देखना चाहते थे ए किसी एक ने पूछा

‘ ना यह कैसी सेरेमनी है क्या दिल्ली के रिपब्लिक डे पर लड़की ऐसी कुछ है या वेटिंग है फिर कैसी यह तो बहुत बढ़िया होती है तो यह भी बहुत अच्छी होती होगी’

बात करने वाले ने उत्तर दिया

‘ पिछली बार जब मैं अमृतसर गया था तो देखा था यह तेरे मनी हर दिन शाम को होती है जब मैं वादा में था तो पता है क्या देखा शेरशाह सूरी द्वारा बनाई गई ग्रैंड ट्रंक रोड तो जानते हो ना उस पर दो चमकता आता लोहे के दरवाजे लगे थे कोई ना फिट की दूरी होगी एक दूसरे के सामने एक भारत की सीमा पर था तो दूसरा पाकिस्तान की सीमा की परख दोनो ओर से सैकड़ो लोग खड़े थे बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स के लोग ने हम लोगों को शांति से बिठाया और पाकिस्तान विरोधी ना रे ना लगाने की हिदायतो अभी जब भी ट्रीट कसम आया हर कोई शायद के किनारे की पटरी के पास के साथ आया था कि मर एंड देख सके.’

डिब्बे में चुप्पी छा गए सर नुकसान तो पेपर है हाल सुन रहे थे सुनाने वाले ने तब बताना शुरु किया

‘ बड़े सलीके से बाड़े पर खड़े दोनों तरफ सर ने तेज़ आवाज़ में अपने-अपने गार्ड्स को कहां अब दरवाजा खोलो दोनों के सैनिक अपने भारी बड़े चमकते जूतों को ढंग की बड़ी आवाज में करते हुए जमीन पर मारते हुए आगे बढ़े हुए मुझे लगा कि अपने दूसरी ओर चले जाएंगे पर अचानक से अपनी और के गेट के पास रुपए सीधे तने खड़े रहे मानव कोई अगर विलम ओर को जो बॉर्डर के दूसरी ओर खड़े अपने विरोधी की ओर देख रहा हूं क्रोधित मुर्गो की तरह अपनी गर्दन मरोड़ रहे थे इन दोनों के सैनिक लंबे तथा झगड़े थे ने साफ-सुथरी ड्रेस पहनकर बड़े स्मार्ट लग रहे थे उनके सिर कीटोपी रंग भरी वीटी अनुसार थी उन्हें देख कर हम लोग के मन में भी देश भक्ति की भावना जाग उठी थी अचानक लोहे के गेट को खुला bsf का इंस्पेक्टर जो अभी तक सामांय लग रहा था अचानक क्रोध से भर उठा सकती से गेट के पास दाएं बाएं करके उसी

बीच की खाली जगह तक गया जो किसी की भी नहीं थी वहां एक दूसरे ने हाथ मिलाया आदो एकदम पीछे हटें मानो कोई बिजली का करंट लगा उनके चेहरे पर एक दूसरे के लिए बेहद घृणा कर जल्दी ही दोनो डे और अपने स्थान पर आ गए अनेक सैनिक गेट पर चाहता कि अपने झंडों को नीचे कर सके सब लोग देख पर जा सकते थे अचानकभारत माता की जय और उधर के लोग पाकिस्तान जिंदाबाद थोड़ी देर बाद दोनो के लोग एक दूसरे की ओर दोस्ती भरा हाथ मिलाने में सारा वातावरण अजीब था भारतीय होने का गर्व मेरे भीतर भी पैदा हो रहा था

बहुत ध्यान से सुन रहे हो उत्तेजित भी हो रहे थे अमन को लगा कि वह लोग अभी नारे लगाने लगे गए लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ धीरे धीरे ट्रेन अमृत अमृतसर स्टेशन से चलने लगी और आगे बढ़ने लगी लोग ने स्टेशन से खाने के पैकेट लिए और खाने लगे अमन ने भी एक खाने का पैकेट लिया और गाड़ी के भीतर आकर लेट गया

अमृतसर बीता अटारी भी गया आ अब ट्रेन पाकिस्तान की सीमा में धीरे-धीरे खुश न लगे कस्टम अधिकारी भी ट्रेन में घुसे और सामान की जांच पड़ताल करने लगे सभी लोग अपने अपने सामान की जांच करवा रहे थे पहचान बता रहे थे और कस्टम ऑफिसर्स इस सवाल का आप उत्तर दे रहे थे ने यह लोग के पास सामान दादा से ज्यादा था अष्टम अधिकारी उन्हें सामान छोड़ने के लिए कह रहे थे तथा बता रहे थे कि इतना सामान लेकर वह पाकिस्तान नहीं जा सकते

आखिर वह गंतव्य आ गया जिसके लिए हमने इतने रुपए खर्च की है तथा इतने मेहनत की पाकिस्तान पहुंचकर अमन को एक और खुशी हो रही थी पर तू श्री और उसे अजीब भी लग रहा था यह कैसा भाव था वह नहीं बता सकता था पाकिस्तान में वह अब अब्बा के अतिरिक्त नहीं उसके पास शास्त्री जी का दिया हुआ कराची का एक पता था तू जिसका इस्तेमाल में है जरूरत पड़ने पर करना चाहता था या फिर उसे उस ढाबे का पता मालूम था जहां अच्छा काम करते थे ने उसे चिंता थी कि अब्बा को लिखी गई अनेक चिट्ठियों का जवाब क्यों नहीं आया यह सोच उसके भीतर तनाव पैदा कर रही थी वह पहले भागकर ढाबे पर पहुंचना चाहता था ताकि अब्बा को देख सके उसने अखबार में पढ़ा था कि कराची एक खतरनाक जगह हो गई है क्योंकि अनेक मूवमेंट सरकार का विरोध करते फिर रहे है इस कारण रोक-टोक बढ़ गई है हिंदुस्तान जाने वाली चिट्ठियां रखी जा रही है अब वह पहुंच गया है शायद स्थिति अधिक समझ में आए यह सोचकर वह स्टेशन पर उतरा और चलने की तैयारी करने लगा उसने अपना सामान था ना अबे सोचने लगा कि क्या शास्त्री जी के लिए पते पर जाएं अथवा सीधा-साधा थे पर मैं पैदल ही चलता रहा उसने ना स्कूटर लिया निरीक्षण बस चलता रहा अपनी सोच में मग मगन..

सड़क पर बहुत भीड़ थी अधिकतर पुरुष लोग सलवार और कमेंट्स में थे औरतें इस गर्मी में भी निकालें ब** के मेथी खाने की उसने हिंदुस्तान में भी ब** के पहने ए मुस्लिम औरत को देखा था परंतु यहां इतनी तादाद में देखकर आश्चर्य हो रहा था अधिकतर लोग उर्दू बोल रहे थे आज इसे समझने में अमन को कोई

कठिनाई नहीं हो रही थी पर मैं समझ नहीं पा रहा था कि उसे हिंदी बोलनी चाहिए जो इसकी भाषा है या उनकी तरह उर्दू जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया लोग उसकी तरफ मुस्करा कर देख कर स्वागत करते हुए निकल जाती उसे लगा कि सभी लोग मित्रता का भाव रखते है किसी में मुंबई फटे पंप कोई प्रभाव नहीं दिख रहा था शायद यहां पर पहुंची ही ना हो ऐसा अमन ने सोचा

ट्रेन में ही उसके साथी या तुरंत उसे कहा था

[अरे भाई अब तुम पाकिस्तान में हूं आजादी से बोल सकते हो अपने दिक्कतें छिपाने की जरुरत नहीं है यहां हिंदू नहीं है जो तुम्हे कुछ कहे कराची में हिंदुओं को देखो अमन की दिक्कत है समझते है उन्हें अच्छी नौकरी या नहीं मिलती वह आज भी हिंदुस्तान की सोचते हैं अगर वह चाहे तो इस देश को छोड़ सकते हैं पर वह कहते रहते हैं कि पाकिस्तान के लिए उसी तरह वफादार है जैसे मुसलमान हम जानते है कि वह आज तक हिंदुस्तान के ही वफादार है.'

कहीं आई हुई यह बात अक्सर अमन को याद आती वह सोचता रहता कि वह है कौन है क्या वह हिंदुस्तान में रहने वाला हिंदुस्तानी है या पिता के पाकिस्तानी होने के कारण पाकिस्तानी है कैसा प्रश्न है यह भी कोई बात हुई हम कहीं भी रहे किसी भी देश के हो है तो इंसान ही इंसान और इंसान में फर्क क्यों होना चाहिए सोचो कितना भी मन परंतु कोई उत्तर नहीं मिलता ऐसा भारत में भी सुना था. अमन सोच रहा था भारत में भी मुसलमानों की अपनी-अपनी समस्याएं है गणित के दिनों में वो हिंदुओं द्वारा सताए जाते है अपने को बचाए रखने के लिए अधिक लड़का और जातिवादी हो गए है भारत के मुस्लिम को कभी सबी अधिकार बराबर मिले है कुछ घटनाएं ऐसी होती है जो उत्तेजित करती है पर उन्हें दबाया नहीं जाता एक जैसा पाकिस्तान में लोग सोचती है इसका जीता जागता उदाहरण था अगर आपके पास योग्यता है तो धर्म रास्ते में नहीं आता नहीं आना चाहिए अमन अपने साथी या तो को समझाते हुए यात्रा कर रहा था वह बता रहा था कि भारत में मुसलमान अपमान का जीवन नहीं जीते है यह है उसका अपना अनुभव था

कराची पहुंच गया था कराची एक अलग सा शहर था अधिकतर आदमी यहां कमीज और पेंट पहने थे बहुत सी औरतें पुर के के बिना भी घूम रही थी वह वहां के लोग और अमन के बीच कोई फर्क ढूंढना कठिन था यह बता सपना मुश्किल था कि अमन भारत से आया है और यहां के लोग पाकिस्तानी है किंतु जो हमने ढाबे की जानकारी लेने के लिए वह खोला वह समझ गए कि अमन भारतीय है वह भारत से आया है किंतु उनके व्यवहार में कोई अंतर ना था ना कोई घना का भावना था वही उठ सकते कि कोई उसकी सहायता करें अतिरिक्त सहायता भी करने के लिए तैयार थे तभी वह आदमी उसके साथ चल दिया आधा में के पास पहुंच कर अमन ने इधर-उधर झांका शायद अब्बा कहीं देख जाएं परंतु नहीं अब्बा नहीं दिखे थावे के अंदर भीड़ थी बहुत से लोग बैठे हुए खाना खा रहे थे अनेक लड़के भाग दौड़ कर सर्विस कर रहे थे कुछ कुर्सी मेज

बाहर पटरी पर भी लगी है लोग बाहर की खुशियों पर भी बैठे थे वह धीरे-धीरे चल कर ढाबे के पास पहुंच गया अब्बा को मिल पाने की संभावना अधिक हो गई थी उसका दिल धड़कने लगा मैं ऊपर से शांत दिख रहा था पर मन के भीतर बेहद शपथ श घबराया थाआशा आशा थी कि अब्बा स्वस्थ होंगे पढ़ाई में घुसा इधर-उधर दे देखा जान मिल ए में सोच रहा था देखें कि अब अब्बा देखें और और हैरान रह जाए.

उसके मन में ऐसा क्यों था कि शायद ढाबे में लोग उसे पहचानते हम ऐसा कोई जाना पहचाना चेहरा नहीं दिख रहा था कहीं नहीं दिख रहे थे उसने सोचा अब तो रसोई में होंगे उसने सोचा और एक बारे के पास गया.

आ बैठ मेरे पास आके देख कर कहा

जरा सा रुपए जनाब वह सामने की मेष खाली होने वाली है आप वहीं बैठ जाएं कहते हुए लड़का तेजी से चला गया फिर घर का समय था और उसे बहुत मुझ पर शक करना था.

कुछ सोचता हुआ अमन कैश काउंटर की तरफ चल दिया वह व्यक्ति बेहद व्यस्त था वह जिस तरह बैठा था जिस तरह लड़को को बता रहा था जिस तरह से पैसे ले रहा था आ गले में डाल रहा था निकालकर वापिस कर रहा था उससे वह इस ढाबे का मालिक लग रहा था . अमन ने उसे सलाम किया फिरअपने अब्बा का नाम लेकर की बे कहां है यह भी बताया कि वह यहां काम करते है और वह है मेरे अब यह जानकर भी फ्रेश काउंटर पर बैठे व्यक्ति है कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई चुपचाप बैठा काम करता रहा और मेरी शकल देखता रहा उसे अजीब लग रहा था आ की कोई लड़का आए और एक व्यक्ति का नाम लेकर कहे कि वह है उसका अप्पा है फिर कुछ सोचकर उसने कहा

बेटे वहां सामने जाकर उस मेज़ पर बैठ जाओ मैं खाली हो कर तुम्हारे पास आता हूं फिर लड़के से कहा कि एक कप चाय और समोसा उसे खाने को दे.

इस तरह अमन बाबा से मिलने को बेचैन सामने की मैच पर बैठकर इंतजार करने लगा कि कबवह व्यक्ति मेरे पास आए और मेरे अब्बा के बारे में बताएं.

ढाबे में सब लोगों ने दादा कह रहे थे वैसे भी एक बुजुर्ग से व्यक्ति उनका आ बेटा भी वही ढाबे में इधर-उधर काम कराता घूम रहा था थोड़ी देर बाद उन्होंने ए अपने बेटे को बुलाया आ हसमत यहां आओ उसे गले पर बिठाया और खुद मेरे पास चले आए.

मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए प्यार से थपथपाते हुए हुए कहने लगे अरे बेटा तुमने बताया नहीं तुम आने वाले हो फिर तुम्हारे अब्बा क्यों नहीं आए. वह तो एक महीने के लिए कह कर गए थे अब तक कहां रह गए? क्या तुम हवा के बारे में ही बता ना आए हो?

अमन हैरान परेशान उनके शक्ल देखता रहा और सोचता रहा यह क्या कह रहे है? क्या यह नहीं है फिर कहां है?

नमन को हैरान परेशान देखकर दादा ने एक लड़के को आवाज़ थी यानी मंगवाया उसे शांत होने को कहा और कहा

कहां पर क्या बात है? महाराज कहां है? उंहोन्ने एना तो कोई चिट्ठी लिखी ना आए क्या कारण है?

पर रब्बा वहां तो नहीं है ना ही दे भारत पहुंचे है. नए उनके ना आने के कारण उनसे मिलने यहां आया हूं यह सोच कर कि शायद उनकी तबीयत नाराज हो.

अच्छा आ महाराज भारती नहीं पहुंचे तो फिर क्या यही है यही है तो मिलने क्यों नहीं आए कहां रह गए? क्या किसी मुसीबत में है यदि हां तो भी उहे हमें फोन करना चाहिए था किसी के हाथ ही कहरवा सकते थे. यह शायद वह यहां होंगे ही नहीं. भारत में ही होंगे अभी तुम्हारे पास दिल्ली नहीं पहुंचे होंगे इसी कारण आ जाएंगे. श्री करुणा करो अगर वह यहां है तो जल्दी पता लग जाएगा- और--- सुनाओ सुना होगा सब ठीक है तुम्हारी मां तुम्हारी बहन सब अच्छे से है.

ओ जी हम सब अब्बा की इंतजार करवो नहीं आए तो मां घबरा गए उनकी घबराहट के कारण मैं यहां आ गया था कि अब्बा से मिल सकूं और उनका हाल जान सको

अब विधाता कहलाने वाले पुर्जे चिंता में पड़ गए उन्होंने अपने बेटे हसमत को बुलाया और कहा

बेटा म्हारा भारत नहीं पहुंचे है अबे यही है घर कहां तेरा पता तो करो यह त्वचा उनका बेटा है जो उनसे मिलने आया है जाओ इसके साथ रहमत चाचा के यहां इसे भी ले जाओ और उनसे पता करो कहीं उनकी तबीयत तो खराब नहीं है क्या बे उनके घर पर है या कहीं और. जाओ बेटा आ जल्दी करो अब तो मुझे चिंता होने लगी है.

फिर अमन की ओर देख कर बोले

ओए चिंता की कोई बात नहीं पर है नहीं कुछ तो निकाल ना ही है कि क्या हुआ और वह कहां रह रहे हैं?

जय उठा आप सिर्फ जाते हुए आय कुछ सोचते हुए चेहरे पर मुस्कान ना आकर मुझे समझाने लगे

घबराना नहीं बेटा आ में हूं यहां ना आ मैं सब देख लूंगा तुम्हारे अब्बा आ मिल जाएंगे अगर यही है तो अगर भारत में है तो घर आ ही जाएंगे.

यह कहते हुए अबे अपनी जरुरत पर चले गए ए हंस मत मेरे पास आया आ मुझसे ए गले मिला और कहां

गांव चलो पहले खाना खा लेते हैंखेल चाचा के घर जाएंगे. ठीक है अरे भाई महाराज मिल जाएंगे ए कहां जाएंगे या तो भारत यह फिर चाचा के यहां मेरा यहां ढाबे में और कहीं तो वह जाते ही नहीं चलो अंदर चलो हम वहीं बैठ कर खाना खाएंगे फिर लड़के को बताते हुए की क्या-क्या खाना देना है अबे मुझे पीछे के कमरे में ले ले उसी के आगे रसोईघर था . अब्बा यही खाना बनाते होंगे मैंने सोचा आवर किसी और को देखकर ऊंचा यह कौन है जो रसोई में खाना बना रहा है अश्मित ने बताया आखिर वह महाराज का आ ही चला है जिसने उनसे ही खाना बनाना सीखा है.

खाना खाकर दादा और हंस मत से बात करके इशांत होकर अमन आज मत के साथ उनके घर चल दिया जिन्हें है चाचा कहता था रहमत चाचा यही उनका नाम था उनके घर पहुंचने तक मेरी चिंता बेचैनी फिर से लौट आई थी.

अब्बा नहीं मिले तो? क्या होगा आ मैं क्या करुंगा आपने कहा ढूंढूंगा हाल है कि सब लोग मदद करेंगे फिर भी पता नहीं वह किस मुसीबत में है

सुमन सोचता कितना भी रहे है पर अब सोचने का नहीं ढूंढने से खोजने और और काम करने का समय था अतः वह अश्मित के साथ साथ सांस मिलाता हुआ चलता रहा

रहूं रहमान अपनी पत्नी के साथ जज्बा गांव में रहते थे वह गरीब लोग की बस्ती थी बहुत करीब तू नहीं है खाते-पीते मध्यम वर्गीय लोग तेरे जितना कम आते हैं उसी में अपना घर खर्च चलाते थे फालतू खर्च करने के लिए नव के पास पैसे थे ना वक़्त . रहमान साहब के पास गांव घर का मकान था इसलिए उनका जीवन यापन अच्छी तरह हो रहा था अमन से मिलकर रहमान साहब बहुत खुश हुए अत्यंत गरम जोशी से उंहोन्ने उस को गले लगाया और ऐसे स्वागत किया मानव व उनके परिवार का हिस्सा हो.

किस्मत ने जब जाने कारण तो है चिंतित हो गए है अभी तक कोई भी यही ख्याल था कि महाराज भारत में है अपने परिवार के पास किंतु क्या वही रुक गए थे या अभी आ नहीं पा रहे है इन प्रश्नों का उत्तर उनके पास नहीं था पर आज पता चला कि वह तो भारत में भी नहीं है तो फिर कहां है- रहमान साहब सोचते रहे पर अपने चेहरे पर चिंता के भावना कर अमन को चिंतित नहीं करना चाहते थे थोड़ी देर सोचने के बाद उंहोन्ने अमन के कंधे पर हाथ रखा और कहा

; घबराओ नहीं कल कल उनकी खोज यहां पुलिस मेंमेरे दोस्त है उनसे मिलकर बातचीत करते हैं फिर और भी जगह खोजने की कोशिश कल ही की जाएगी अब तो रात हो रही है इसलिए तुम रात को यहीं ठहर जाओ. रहमान चाचा के बहुत ही सुधार करने पर आखिर अमन ने वही चेहरे का निश्चय कर लिया फिर इत्मिनान से बैठ कर अपने घर के बारे में अपनी मां और बहन के बारे में भारत की दशा के बारे में जाने कितनी बातें होने लगी तभी एक सुंदर सी लड़की बाहर निकल कर आए आई वह चाय और कुछ नाश्ता साथ लाई थी उसे उनके सामने रख वह पीछे कमरे में चली गई अभी दादा भी आ गए अब क्या था अब सब लोग दादा से अपनी अपने ही दुखद सुखद सभी दास्तान मान करने लगे अब्बा के बाद बार-बार अनिल दादा और रहमान के गाने अगले दिन का प्रोग्राम बनाया था कि वे अब्बा को ढूंढने के सभी रास्ते एक साथ कॉल सकें. काफी शांत हो कर अमन ने अपना सामान लेने ढाबे पर चला गया 12 ही तो था उठा लाया और रहमान चाचा ने इस बीच में उसके लिए ए कैमरा ठीक कर दिया चाचा के घर में तीन कमरे थे एक ड्राइंग रूम जैसा था एक पढ़ने का और सोने का कैमरा था आप और तीसरा कैमरा उसने सामान भी रखा था साथ ही अलग बात हैतीन कमरे सामान से भरे हुए थे किंतु हो जाते है ड्राइंग रुम में सो से किसका कर मेरे उसके

सोने का इंतजाम कर दिया था वही को है मैं उसे डाक्टर का आया और फिर बाहर चौक में आ गया जहां खाने का इंतजाम किया गया था. सब ने मिलकर रात का खाना खाया और इस प्रकार अमन थे उस घर में से एसिटिक गया मानव है उसी का घर है. खुश कि बहुत लोग हैं जो आपको कुछ लेने में मदद करेंगे पर बिस्तर पर लेट से ही उसे बाबा की चिंता नहीं फिर से घेर लिया नींद आसमान पर उड़ कर चली गई वह करवटे बदलता रहा जब थोड़ा सा सोया दो बाबा के सपने लेता रहा उसे बार-बार लगा बाबा चीज रहे है बाबा रो रहे है बाबा बुला रहे है और कहां है बाबा गुलाब कैसे पहुंचे हूं के पास इतने सारे अगर मगर उनके बीच में फंसा था.

अगले दिन सुबह सो कर उठा अमर तो अंखियां आई अब है बचाव अब्बा को ढूंढने में लगाएगा उसके पास मात्र एक महीने का भेजा था उससे अधिक वह है नहीं सकता था. एक महीना बहुत होता है उसने सोचा है और यह भी यह बाकई इधर-उधर होंगे शायद बीमार हूं किसी अस्पताल में होंगे ए रहमान चाचा के साथ मिलकर जल्दी ही पटाखा डालेंगे.

थी तभी रहमान चाचा ने कहा चलो मेरे साथ चलो और बे पुलिस स्टेशन पहुंच गए. पुलिस स्टेशन देखकर आशा अमन कुछ घबराया ना कुछ चकराया और किंतु शांति से ए रहमान चाचा के साथ और चलता रहा.

आते थेशाह साहब सामने बैठे उस इंसान ने कहा वह एक अच्छी कद काठी वाला प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला इंसान था उसने पुलिस की वर्दी पहन रखी थी और वह बहुत शानदार लग रहा था अनुमान चाचा ने अभी वालेकुम सलाम कहा और अमन का परिचय दिया और बताया यह कैसे उसके पिता आ नहीं मिल रहे है एक बहुत अच्छे और भले व्यक्ति है, दे यहां तो पाकिस्तान ने पाकिस्तान बनने से पहले से काम कर रहे है इतने बड़े बुज़ुर्ग शायद ही आसानी से मिलते हो पिंटू दो महीने पहले ए भारत जाने के लिए निकले थे एना महा पहुंचे एना ना यहां वापिस आए कहां रह गए कुछ नहीं पता. यह बच्चा अपने अब्बा को मिलने आया है पर रब्बा नहीं मिले.

क्या आप इसमें हमारी कुछ मदद कर सकते हैं?

यह पूछ कर रहमान चाचा चुप हो गए

शाह शाह का पूरा नाम मुशर्रफ शाह था. वह थे तो पुलिस में ऊपर उनके चेहरे से उन उनकी शराफत टपक रही थी मुस्कुराकर बोले.'

ए अजी रहमान साहब बुक कहां जाएंगे और भला आ किसी अच्छे भले आदमी का क्या नुकसान हो सकता है बीमार तो नहीं है यह अस्पताल में आप भी देख मेरे में भी दिखाता हूं बहुत जल्दी से. थी कल तक पता

चल जाएगा कि वह बीमारी के कारण अस्पताल में तो नहीं है तब देखेंगे आगे क्या करना है इस बीच में इस बच्चे से कहो अपनी मां से पता करें कि कहीं चब्बा अपने घर तो नहीं पहुंच गई है.'

बात खत्म हो गई पर शाह साथ न जाने कब इशारा करते चाय बनवा ली थी आंधी साथ में आया था हमने चाय पी और खाया और बाहर निकल गए. रहमान चाचा ने ए मुझे अस्पतालों का नाम दिया समझाया आओ और खुद अपने काम पर चले गए में अस्पताल की ओर जाने लगा चिंतित तो बहुत था परंतु अब्बा का पता करना उनके हाल के बारे में जानना -एक बहुत बड़े जद्दोजहद थी जिसके लिए वह खुद को तैयार कर रहा था.

पुलिस वाले शहजी भी अत्यंत मददगार साबित हुए उन्होंने अभी सभी अस्पताल से पता करवा लिया परंतु अब्बा का कहीं पता ना चला उनके नाम का कोई मरीज किसी अस्पताल में नहीं था निराशा शाम को घर वापस आ गया चाचा से बात की फिर से अगले दिन की योजना बनाई जाने लगी यह जानना ज़रुरी होता डाकिया फिर अमन के अब्बा कहां चले गए कहां गायब हो गए और क्यों? अब सबको चिंता होने लगी थी अभी तक केवल अमन को चिंता थी किंतु अब धागे वाले दादा ए आर रहमान चाचा के साथ पुलिस वाले आईशा हुआ अंकल भी शामिल हो गए थे अगले दिन थे और कई जगह पर मित्रों के घर जान-पहचान वालों के यहां चक्कर लगाने के बारे में फेस वॉश आ गया भारत फोन करने की बात हुई एक और है खाना खाकर सो गए किंतु अमन की आंखों में नींद कहां उसे लग रहा था कुछ गलत हुआ है कुछ गलत हो रहा है और क्या हो रहा है यह इसका जवाब कौन थे कहां से मिले अचानक? मन में आ क्या अब इसी कारण जेल चले गए है कराची यह आयोजन होता रहता है आप के कारण भी दिन बात के भी और भला आदमी इन सब चीजों में जल्दी ही फंस जाता है पर सच यह भी है कि अब ना किसी को जानते थे होटल से बाहर निकलते थे एना उनके कोई दोस्त थे एना वह शराब यह बीड़ी पीते थे अबे तो अत्यंत साधारण के सब के इंसान थे जो सामान्य तरीके से अपनी जिंदगी जी रहे थे उनका मकसद केवल अपने परिवार का पालन पोषण था आवे भारत में भी नौकरी कर सकते थे 1 इन टू दादा के प्रति उनकी वफादारी बहुत पुरानी और काफी गहरी थी इसलिए एवे भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध बनाएं रख दे रहे.

अमन की सभी आशाएं बिखर गई थी किंतु पुलिस वाले शो हां चाचा ने उसे आशा दिलाएं और सलाह दी लिए के अन्य जानने वालों के यहां तथा पोलिश अन्य जगहों पर जैसे जेल वगैहरा मेया पुलिस की फाइल मेंउनका नाम ढूंढने की कोशिश करेंगे हालांकि यह भी कहा'

यहां पुलिस रिकॉर्ड कोई बहुत ढंग से नहीं रखे जाते है कंप्यूटर तो गए है पिंटू कंप्यूटर में रिकॉर्ड करने वाला कभी भी कोई भी गलती कर सकता है अपने आप चेक करुंगा यह मुझ पर छोड़ दो शांत होकर घर जाओ मैं कल मिलूंगा आ किसी अच्छी खबर के साथ अगर तुम्हारे अब्बा कराची में है तो अवश्य ही मिल जाएंगे अगर किसी दूसरे शहर में है तब थोड़ा सा वक्त लगेगा शंकर जी यह बातें तसल्ली बख्श देती यह सुन कर भी अमन शांत नहीं बैठना चाहता था वह खुद ही कुछ करना चाहता था आसर समय किसी परिचित का

आपता लेकर उनके यहां कुछ नहीं चला जाता था और इस प्रकार अपना समय बिता रहा था धीरे-धीरे पुलिस वाले अंकल के बारे में भी बहुत कुछ जानने लगा था . मुशर्रफ हिंदी अच्छी बोलते थे थे तभी उसे पता चला आकिब पहले हिंदुस्तान में ही रहते थे जालंधर में तभी हिंदुस्तान हिंदी भाषा हिंदुस्तान के लोगों को प्रति एक सदभावना थी

नीतीश के दिन पुलिस वाले अंकल मिले और बेहद निराश.मुझे कोई खबर नहीं मिली थी वह क्या बताते उंहोन्ने शुद्ध पुलिस स्टेशन जेल ए पता क्या किंतु कहीं भी अमन के अब्बा का ऐसा नाम नहीं मिला आना उनकी शक्ल के किसी इंसान का पता चला.

अमन के लिए यह बहुत निराशाजनक थी थी थी इतनी निराशा ओके उसकी हड्डियो तक में एक लहर सी उठी जो कपकपातें हुई उसके दिमाग में पहुंच गए. पुलिस वाले अंकल है कहां'

आवे ज़रूर भारत में ही कहीं पर होंगे किसी रिश्तेदार के घर चले गए होंगे शायद उन्होंने चिट्ठी लिखी हो किंतु आंख की गड़बड़ी के कारण तुम्हें ना मिली हो यह भी हो सकता है पाकिस्तान से लिखो

चिट्ठियां तो अनेक पहुंचती ही नहीं है तुम फिर से मां से पूछो उन्हे बताओ फिर भी अपने रिश्तेदार के यहां बताएं---------- लेकिन रुको शायद तुम अपनी मां से कहोगे अबे बहुत घबरा जाएगी अकेले इसलिए तुम केवल अब्बा के बारे में जानकारी ले कर और यह बता कर सब ठीक है फोन बंद कर देना.

को तो पहले ही लग रहा था आ के कुछ गड़बड़ तो है खाती. दुर्घटना के शिकार हो गएहै यह सोच अमन के भीतर एक ठंडी लहर उठी थी और वह उसमें डूब डूब जाता.

पुलिस वाले अंकल ने उसे बहुत तसल्ली दी थी किंतु वह घबराया हुआ था अब वह हवा के बारे में और अब्बा के ना मिलने के निराशा के बारे में सोचना ही नहीं चाहता था वह कही खो जाना आया दूर जाना चाहने लगा था आप और रहमान चाचा ने बहुत सारा प्यार देकर बहुत सी दुर्घटनाओं क्या हवाला देकर उसे समझाया आती बुरा वक्त आता तो है किंतु समय के साथ खत्म भी होता है इसलिए आशा को नहीं छोड़ना चाहिए आए अब्बा जरूर मिलेंगे मेरा मन कहता है अबे ठीक है और कहीं इधर उधर किसी काम की वजह से रुक गए है जल्दी ही आ जाएंगे ओम शांति से रहो कल शह शाहजी जेल में भी अच्छी तरह छानबीन करवा लेंगे यदि कुछ हुआ है तो पता चल जाएगा

कहकर रहमान चाचा एनी उसके कंधे पर हाथ रखा तथा आ कहा'

आ अब चलो घर चलते हैं खाना खाते है और फिर अगले दिन का सोचते है. मेरी होटल वाले दादा से भी बात हुई थी बेबी अपनी ओर से ए सभी लड़कों को महाराज को खोजने के लिए ए इधर-उधर भेज रहे है पता करवा रहे है जब इतने सारे लोग खोज रहे है तो जल्दी ही पता लग जाएगा चलो आओ अब तुम्हें एक बात और बतानी है और पूछनी भी है.

नमन हैरान था आके रहमान चाचा को क्या पूछना है और क्या बताना है. उसके भीतर उत्सुकता जाग रही थी घर आने पर उनके ए बेटी ने खाना लगा दिया और भी खाने की टेबल पर बैठ गए. यह दूसरी बार था आ

की मैंने ए रहमान चाचा की बेटी को देखा था आ मुझे वह सुंदर ही नहीं बहुत भली तथा भोली लगी एक समझदार शुशील लड़की अभी बच्ची से थी और फिर भी बड़की से परे पतासे ए भरपूर थी खा लेती छुटकी थी तो समझता आप अभी ज्यादा लाडली होने के कारण शैतान की छुटकी याद आई. नमन का मन किया कि वह उसका नाम पूछे पिंटू चुप रह रहमान चाचा से पूछना अच्छा नहीं लगा.

आत अभी निगहबान चाचा बोले

‘ ने अच्छा यह बताओ ओके अब्बा ने कभी किसी लड़के के बारे में बातचीत की है जिसके बारे में ए तुम जानते हो क्या इसको भी इ किसी लड़की के लिए ए लड़का खोजने की चर्चा हुई है घर में ए तुम्हे पता है क्या?

आजी नहीं मेरे सामने तो कभी कोई बात नहीं हुए ए हमसे हुए हो तो मुझे नहीं पता किंतु क्या अपने अब्बा को कोई विवाह योग्य लड़का खोजने को कहा था आज अभी भारत में.

ए हां बेटा, असल मेंतुम्हारे लिए यह जानना जरुरी है मेरी बेटी इसे ए मिले तो हो उसका नाम है रोशनी सचमुच घर के रोशनी है वह और यह भी बताओ के हम असल में हिंदू है यह इस मोहल्ले में ए रह रहे है इस कारण स्वयं को इस तरीके से दिखाते है के हम पाकिस्तान के ही लोग है इस तरह से नारी सुरक्षा हो पाती है अन्यथा आ रहा जब तक बंदे हो जाते है और खुद को बचाना आ मुश्किल खासा मुश्किल हो जाता है.

अमन यह बात सुनकर बहुत हैरान था क्या अजीब स्थिति है? हम मुसलमान होकर वहां हिंदू कालिदास पहनते है और यहां हिंदू लोग स्वयं को ओ मुसलमान दिखाकर जिंदा रहते है क्यों है यह अब? आखिर आप हिंदू हो या मुसलमान होना इंसान से बढ़कर तो नहीं है अगर हमसे इंसान है और यह सारा का सारा संसार विश्व कप बनाया हुआ है यह खुदा नहीं बनाया है तो फिर कहीं भी किसी भी धर्म को मानकर क्यों नहीं रह सकते लड़ाई-झगड़ा यह बटवारा क्यों सभी पचवारा का अंत खून खराबा ही होता है तो क्या हां इंसानियत का फोन करते है यदि हां तो क्या हम इंसान कहलाने लायक है शायद नहीं इंसान बनने के लिए अबे हमें और बहुत सी सदियां लगेगी बहुत से लोग देखेंगे आज तक शायद हूं इस पशुओं को छोड़कर इंसान बन पाएंगे यही तो सिखाते है सब श्रद्धा फिर भीयह युद्ध यह यह लड़ाइयां यह यह मार काट क्या होती है यह सब तो इंसानियत की मौत है हम इंसानियत को मार देंगे तो फिर बचेगा क्या क्यों होती है ज़िंदा रहने को क्या बचेगा? सोचता कितना भी रहे अमन के पास ना कोई जवाब दे ना बाकी जानकारी देने का कोई रास्ता वह एक मकड़ी जाल में फंसा था आज इस से बाहर निकलने की अभी तक तो कोई गुंजाइश नजर नहीं आ रही थी क्या करे हम माशा साहिब एस के के सोचते विचार देंगे और भी दिन बीत गए एक हफ्ता हो गया था अभी तक अब्बा की सूचना अंधेरे में थी?

सात दिन बीत गए अगले दिन आशा शाहिद रहमान अंकल के घर आ गए उनका चेहरा उतरा हूं वह कुछ उदास थे लग रहा था की खबर कोई अच्छी नहीं है आशा साहब ने पुलिस ने काम करते हुए अपने

अन्य दोस्तों की सहायता ली थी न कि अब्बा के बारे में जानने की कोशिश की थी किंतु कोई नतीजा नहीं निकला था मिलिट्री पुलिस की भी मदद ली थी जिस से पता चला था कि कुछ समय पहले इस शक्ल सूरत का कोई आदमी उन्होने जेल में ले जाया गया देखा था पिंटू वह एक पाकिस्तानी नहीं था शायद अभी जेल में हो और पूछताछ चल रही हो यह शंकर अमन एकदम हड्डियों तक ससुरा हट से भर गया उसे यह लग गया था कि अब बात जरुर जेल में है तभी तो बाहर कहीं किसी को कोई जानकारी नहीं मिल पा रही है अवश्य ही कुछ गलत हुआ है अब्बा के साथ भी और अब्बा के कारण थी अब इमरान चाचाजी कुछ रास्ता दिखा सकते है यह सोच कर वह ऊंट खड़ा हुआ और चाचा से बोला.

s4 मेरा ख्याल है अब हम शाह अंकल की मदद से सभी जेल मैं अंदर जाकर कैदियों से मिले नॉर्थ पहचानने की कोशिश करें कभी तस्सली होगी.

रहमान चाचा कुत्ते चुप रहे थे बोलें.

बोल एक तो तुम ठीक रहे हो पिंटू यह काम बहुत मुश्किल है और मुश्किल ही नहीं असंभव है जेल के अंदर कोई नहीं जा सकता ना तोमहाराज जी की कोई फोटो है ना कोई आइडेंटिटी कार्ड ना कोई हमारे पास इजाजत नाम है जिसे लेकर हम जेल में घुस सके.

समस्या बड़ी से बड़ी होती जा रही थी कठिन से कठिन रास्ता हमारे सामने आ गया था ऐना रास्ते पर आंचल सपने की कोई तस्वीर सूज रही थी ना ही समस्या का कोई हल.

सारा दिन इसे उधर घूमने के बीतता गया. सोच विचार कर शाह जी ने कहा.

अमन तुम सबसे पहले जेल में घुसने का कोई इजाजत नामा ब्लू जिसके लिए तुन्हें इस्लामाबाद जाना पड़ेगा वहीं पर विदेश मिनिस्ट्री है वहां जाकर अपने पिता के एक परिचय देकर एक एप्लीकेशन डालो अगले दिन तुन्हें इजाजत नामा मिल जाना चाहिए.

अमन जल्दी जल्दी तैयार हुआ मेहमान चाचा से इजाजत ले लिए रास्ता पूछा समझा और इस्लामाबाद की ओर चल दिया.

ट्रेन को ट्रेन में जल्दी ही सीट मिल गई अमर आराम से बैठ कर इस्लामाबाद चल दिया उसे लगता था कि अब शायद समस्या का कोई हल मिल जाए और यह अब्बा का पता लगा ले. मन ही मन वह जेल में अब्बा के होने की संभावना पर विचार करने लगा था उसे काफी तस्सली थी वह अब अब बात में नहीं जाएंगे. वह यह भी सोच रहा था कि शायद देने पड़े अब्बा का केस लड़ने के लिए उसे दोबारा वीजा लगवा कर पाकिस्तान आना पड़ेगा वह इन सब बातों में खोया हुआ था कि इस्लामाबाद पहुंच गया

मर के अलावा चूतियों के सामने बना हुआ इस्लामाबाद बेहद आधुनिक और बड़ा शहर था बहुत अच्छे तरीके से योजना बना कर बनाया गया था सॉरी गलियां थी उनमें पेड़ों की कतार थीम बड़ी-बड़ी कोठिया की शानदार बिल्डिंग और बीच में अच्छी तरह ठहरे हुए बाजार थे यह तक की बड़ी-बड़ी गलियों में चोरी-

चोरी पटरिया थी जिन पर पेड़ की कतार भी किनारे-किनारे पर लगी हुई थी गुलाब चमेली गोविंद बेलिया आदि की बेलें छोटे कोठियों के कंपाउंड में ढेरों की तादाद में लगे हुए थे जो उन्हें और भी खूबसूरत बना रहे थे

चोरी-चोरी छोड़कर चारों ओर का खुला खालीपन देख कर ऐसा लग रहा था जैसे यहां सभी लोग अमीर है गरीबी का कहीं निशान ही नहीं है कहीं झुग्गी झोपड़ी दिखाई नहीं दे रही थी यही कारण है कि इस्लामाबाद को पाकिस्तान का स्वर्ग माना जाता है दफ्तरों की लंबी कतार में अमन विदेश मंत्रालय को देखता हुआ चलता रहा वेक जगह उन्हें उसे विदेश मंत्रालय की का का बोर्ड दिखाएं . विदेश मंत्रालय की इमारत के पास जाकर वह मोहब्बत खड़े सिक्योरिटी गार्ड की तरफ गया उन्हें अपनी समस्या बताई और उस से संबंधित अधिकारी से मिलने की बात की सिक्योरिटी गार्ड काफी मदद कर रहा उसने समस्या को समझा और फिर उन्हें अंदर भेज दिया बक्सर का नाम बताएं असलम और समझाया के पहला कमरा छोड़कर दूसरे कमरे की आखिरी मेष के पास जो बैठे है वही असलम साहब है वही आपकी मदद करेंगे.

दमन को अच्छा लग रहा था कि सब काम समय पर हो रहा है शायद अंदर वाला अवसर भी इतना ही मदद कर होगा वह असलम साहब को पूछता हुआ अंदर गया और उनके सामने जाकर खड़ा हो गया असलम साहब लंबे चौड़े कद्दावर जवान थे सूट पहने थे ऐसा लग रहा था कि वह काफी समय विदेश में रहता हूं वह प्रभाव उनके उठने-बैठने खड़े होने में बातचीत ने झलक रहा था.

अस्सलाम वालेकुम- दमन ने कहा

वालेकुम सलाम. कैसे आना हुआ जनाब क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूं.

जी मैं हिंदुस्तान से आया हूं मेरे पिता यही काम करते है दो महीने पहले वह भारत अपने परिवार से मिलने के लिए चले थे किंतु पहुंचे नहीं इतना समय बीत गया तो मम्मी ने मुझे यहां अब बाकी जानकारी के लिए भेजा है मुझे पता चला है कि वह शायद किसी जेल में है अस्पतालों में मैं सभी जगह देख चुका हूं यहां मेरे चाचा रहमान साहब रहते है उनकी सहायता से यह सब कर चुका हूं किंतु आप कहीं और ना पा कर वहां के पुलिस इंस्पेक्टर ऊषा साहिब ने जेल देखने का भी तरीका सुनाया अब्बा बहुत भले और अच्छे व्यक्ति है किंतु पता नहीं किस तरह खेलने पहुंच गए होंगे यह सब हम सोच रहे है सच कितना है यह नहीं जानते किंतु जेल को देखने के लिए हमें इजाजत नाम चाहिए जो आपके मंत्रालय से मिलेगा कृपया मेरी सहायता करें मैं बहुत मुश्किल में हूं अब बापू ढूंढना खोजना और उससे मिलना मेरे लिए बहुत जरूरी है आप समझ ही सकते होंगे सर आपसे बहुत मदद की आशा करते हुए मैं आपके पास आया हूं.'

मैं समझ गया मिस्टर नाम क्या है आपका?

जी अमन खान.

मुस्कान आपके अब्बा का नाम क्या है?

अशरफ खान,

यहां कहां काम करते है.

कराची में होटल में रसोई बनाने का काम करते है.

मतलब?

जी वे खाना बनाते है. खानसामा है.

होटल में लड़ाई झगड़ा हुआ होगा यही हो सकता है जिसकी वजह से वह जेल में चले गए

जी नहीं मैं इस होटल में गया था वहां के मालिक से मिला था उन्होने बताया था कि वह तो एक महीने की छुट्टी लेकर हिंदुस्तान से अपनी फैमिली को मिलने जा रहे थे. असल में अब्बा यहां होटल में आजादी से पहले भी काम कर रहे थे तो उन्होंने यह काम नहीं छोड़ा और हम उसी तरह हिंदुस्तान में ही रहते रहे यहां नहीं आ पाए न हीं अब्बा वहां जा पाए

चलो यह तो कोई बात नहीं अब अगर तुम्हारे अब्बा जेल में है तो उनका पता कैसे लगाया जाए तुम ऐसा करो कि एक एप्लीकेशन लिखकर दे जाऊं मैं अपने tarh पता करने की कोशिश करता हूं और तुम्हारा इजाजत नामa बनाने की भी बनवाने की भी कोशिश करता हूं अब तुम जाओ दो तीन दिन में आना.

अमन नीचे सिर झुकाए फिर भी बैठा रहा.

थोड़ी देर बाद अफसर ने सवालिया निगाह से देखा तो उसने कहा,

जनाब बहुत कम समय है मेरा वीसा जल्द खत्म हो जाएगा मुझे अब्बा को खोजना है यदि मुझे इजाजत नामा कल मिल जाए तो मैं जल्दी ही कराची पहुंचकर अपना काम शुरू कर दूंगा. आप ही कर सकते है जनाब. प्लीज मेरी मुश्किल को समझते हुए मेरी मदद करें.

अफसर कुछ वक्त चुप रहे फिर बोले.

अच्छा अच्छा. कल सुबह आना तब देखते है मैं क्या कर सकता हूं.

aमन उठा सलाम किया और बाहर निकल आया.

मतलब है मुझेआज रात यहीं रूकना पड़ेगा . मेरे पास बहुत पैसे तो है ही नहीं कम खर्च में यह महीना और इस से जुड़ा खर्च करना होगा

वह चलता रहा और सोचता रहा कि यह इस्लामाबाद तो बहुत महंगा शहर होगा इतने बड़े-बड़े मकान इतनी ऊंची बिल्डिंगे इतनी चौड़ी सड़कें इन सब में कोई छोटा सा होटल कहां मिल पाएगा सोचता हुआ वहां स्टेशन पर आ गया उसने रावलपिंडी जाना ठीक समझा शायद कोई सस्ती जगह रात को ठहरने के लिए मिल जाएगी और उसे मिल भी गया एक एक होटल जो बिल्कुल स्टेशन के किनारे था और काफी छोटा और सस्ता लगता था. अमन उस में घुसा .उसका मालिक मिलनसार व्यक्ति लग रहा था.

होटल का नाम इंटर होटल का मालिक का नाम अकरम था उसने बताया था कि यह है उसके दादा का बनाया होटल है जो पिछले 100 साल से इसी जगह पर इसी तरह खड़ा है सबसे पुराना होटल और सबसे

सस्ता भी यहां जो कोई आता है वह किसी होटल का होकर रह जाता है हम उससे दोस्ती कर लेते है और फिर हमारी दोस्ती का दायरा बढ़ता जाता है तुम भी मेरे दोस्त हो कहां से आए हो.

आया तो हिंदुस्तान से हूं पर मेरे अब्बा यही काम करते है उन्हीं से मिलने आया हूं तुम गए हो कभी हिंदुस्तान.

एक बार गया हूं दिल्ली दिल्ली में चांदनी चौक की सड़कों पर बहुत घुमा हूं पिंडी के लिए जगह चांदनी चौक से मिलती जुलती ही महसूस करता हूं और समझता हूं कि मैं हिंदुस्तान और पाकिस्तान कि के बीच पुल हो अच्छा यह लगता है यह सोच कर कि मैं चांदनी चौक और पिंडी दोनों का मजा ले सकता हूं.

अकरम बहुत बातें बनाने वाला था बोलता रहा और सुनता रहा आखिर करता भी क्या मुझे समय बिताना था सुबह तक का समय तो निश्चित ही बिताना था मेरे पास कुछ करने को भी नहीं था जब कुछ करने को ही नहीं था तो अकरम की बातें सुनना सुनते रहना ही एकमात्र तरीका था अकरम भी यह भी बताया.

वह आजादी के बारे में थोड़ा-बहुत जानता है क्योंकि मैं बटवारे के समय का बच्चा हूं मेरे पापा पिता ने कुछ तो बताया था किंतु मैं उससे कभी भी जुड़ नहीं पाया था ना उनका हिस्सा बन पाता था मुझे हमेशा महसूस होता था हिंदुस्तान और पाकिस्तान कभी अलग नहीं हो सकते आज भी यही लगता है अब तुम्हें दे लो खुद को मुझ में और तुम में क्या फर्क है क्या कोई बता सकता है कि तुम हिंदुस्तानी हो और मैं पाकिस्तानी नहीं ना तो फिर क्यों यह बटवारा यह हुआ है क्यों

मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता कि हम सब दोस्त है सिर्फ कश्मीर को लेकर के थोड़ा बहुत तनाव है यह भी नहीं होना चाहिए यह सब शायद राजनेताओं का किया जा रहा है आम आदमी को इस बात से कोई मतलब नहीं कश्मीर कोई समस्या ही नहीं है आम आदमी के लिए उसे तो बस अपनी सारी जरूर याद पूरे करने को चाहिए उसके बाद और कुछ नहीं वह इन राजनीतिक बातों के बारे में सोचना ही नहीं चाहता.

मेरे कुछ कहते ही कश्मीर की चर्चा होते ही उसने अपना मत रखा.

‘ उसका कहना था हिंदुस्तान बहुत बड़ा देश है अगर कश्मीर का कुछ हिस्सा पाकिस्तान तो देवी देखा तो भी बड़ा ही रहेगा और इस प्रकार दोनों देशो में दोस्ताना पक्का हो जाएगा दोनों देशों के लोग जो इधर-उधर रहते है पर आसानी से एक दूसरे से मिल सकेंगे यह तो एक छोटा सा कदम है जो हिंदुस्तान को मान लेना चाहिए.

अमन नेकश्मीर के बच्चे को लेकर कोई खास सोच विचार न किया था उसे हमेशा लगता था कि कश्मीर को लेकर पाकिस्तान ज़िद्द पर अड़ा है उसे छोड़ दे तो सब ठीक है आखिर यह पाकिस्तान क्यों आतंकवाद फैला रहा है और क्यों सारा अमन चैन खत्म कर रहा है पर उसमें कुछ कहना ठीक नहीं समझा वह चुप रहा और अकरम की बातें सुनता रहा है आखिर एक राशि ही तो बाकी है रात भर बिताना चाहता था सुबह की इंतजार थी .

राजस्थान आकर वह यह भी जान गया था एकी यहां के लोग मिलन सार है हर इंसान से दोस्ताना व्यवहार करते है मेहमान नवाज है पर कश्मीर के मसले पर कुछ मानने को तैयार नहीं है

इसी तरह रात पीठ गई थोड़ी देर नींद आई पर अधिकतर वह जाता रहा अब्बा के बारे में सोचता रहा एक तरफ से सारी रात इंतजार में बीत गई अब वह सुबह उठकर जल्दी से तैयार हुआ और फिर सुबह सुबह ऑफिस खोलने से पहले ही विदेश मंत्रालय की की बिल्डिंग के सामने जाकर खड़ा हो गया उसे लग रहा था जरा सी देर हो गई तो असर अफसर मिल पाएगा या नहीं थोड़ी देर बाद अशरफ आता दिखा तो अमन के चेहरे पर थोड़ी मुस्कुराहट आई मिंटू अशरफ को देख कर और उस पर चेहरा देखकर वह शहनशाह गया. ऑफिस के अंदर घुसा वह चुप्पी थीवह भी अवसर के सामने चुपचाप खड़ा हो गया. थोड़ी देर थोड़ी देर तक हसरत फाइलें इधर-उधर करता रहा कुर्सी पर बैठा है और क्यों धीरे-धीरे कहने लगा.

मुझे अफसोस है कि तुम्हारे लिए मेरे पास कोई अच्छी खबर नहीं है.

यमन का दिल टूट गया. अशरफ आगे कहने लगा

मेरे सारे लोगों ने एक बार नहीं दो-दो तीन-तीन बार चेक किया हम जानते थे कि तुम थोड़े समय के लिए हिंदुस्तान से आए हो मैंने खुद ही जेल के अफसरों से मुलाकात की पर तुम्हारे पिता के नाम का कोई व्यक्ति महान ना मिला न पाकिस्तान न हिंदुस्तानी यहां तक कि तुम्हारे पिता के होली का तथा से मिलता-जुलता कोई व्यक्ति जेल में नहीं मिला. तुमने जो नाम बताया था उस नाम का एक व्यक्ति दो महीने पहले पिंडी के चेले था उसका कसूर यह था कि उसने वीसा का वक्त भी जाने पर भी यहां रुकने की गलती की थी उसे दिल में रखा गया था किंतु फिर जल्दी ही जुर्माना लगा कर छोड़ दिया गया था वह शायद हिंदुस्तानी था हिंदुस्तान वापस लौट गया होगा मुझे अफसोस है तुमने यहां आकर अपने अब्बा से मिलने की कोशिश की यह तू नहीं मिल पाए मेरा ख्याल है की तुम्हारे अब्बा हिंदुस्तान में ही कहीं होंगे किसी कारण रुक गए होंगे

अशरफ ने अपनी बात खत्म कर दी मानो ओपन दे दिया कि अब मैं जाऊं किंतु अमन कहां जाए और किससे पता करें फिर इजाजत नाम आप भी तो नहीं मिला था. थोड़ी हिम्मत जुटा कर वह बोला.

‘ कराची में मुझे बताया गया था कि अब्बा के हुलिया का कोई आदमी तीन महीने पहले चैक किया था जिसका कोई रिकॉर्ड तो होगा ही ना अन्यथा कोई कैसे बताएं अशरफ ने फिर से अत्यंत शांत भाव से समझाने की कोशिश की

‘ देखो दोस्त तुम इतने दूर से आए थे तुमने बहुत मेहनत की थी तुम्हारी बेचैनी देख कर मैं बेचैन हूं उठा था इसलिए मैंने पूरी तरह जांच की थी लेकिन तुम्हारे अब्बा का कोई रिकॉर्ड नहीं मिला था मेरा सवाल है

कि यहां रह कर अपना समय बिताने से बेहतर है की तुम वापस जाओ और हिंदुस्तान में ही पता करो कि अब्बा कहां है

अमन की समझ में आ गया था अशरफ और मदद नहीं करेगा. कुर्सी से उड़ने लगा यह अचानक उसे इजाजत नानी का ध्यान आया उसने पूछा की इजाजत नाम तो मिल जाए ताकि वह कराचीअपने चाचा को दे पाए.

आपके चेहरे से पता लग रहा था कि उसे अमन का और बैठा रहना अच्छा नहीं लग रहा है वह सख्त आवास में बोला

‘ ऐसा करो अब तुम कराची जाओ तुम्हारा भी शादी कराची तक का है तुम इधर-उधर नहीं हो सकते वक्त भी बहुत कम है अच्छा हो क्या तुम किसी घंटे में मत पड़ो और सीधा कराची से हिंदुस्तान लौट जाओ अगर कुछ गड़बड़ हो गई तो तुम भी घर जाओगे शायद जेल ही जाओ अब तुम जाओ समय खराब ना करो मेरी सलाह मानो अपने चर्च के जाकर सब कुछ बता दो.

दमन घबरा गया उठ कर खड़ा हो गया और धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़ने लगा उसे समझ ना आया कि कल तक बहुत प्यार से मदद करने वाला यह व्यक्ति आपके इतना बदल क्यों गया है आज तो उसने उसे दर का ही दिया है लगता है अशरफ को कहीं ज्यादा पता है कुछ खास पता है जो वह अब बस से मिलने नहीं देना चाहता क्या किया होगा अब्बा ने अमन सोचता रहा

शायद कोई बड़ा गुनाह --- तो ऐसा है जो अशरफ को पता चला और वह बदल गया कल तक तो मैं बहुत मदद करता हूं फिर उसे किसने बताया कि मेरे पास पिंटिया इस्लामाबाद का वीजा नहीं है उसे यह भी पता था मैंने रावलपिंडी की बिना इजाजत सफ़र किया है वह मुझे रुकने से भी क्यों रूक रहा है क्यों कह रहा है कि मैंने सोचा वापस चला जाऊं?

तुम्हारे कृष्णा सेजू चिता सोचता वमन कराची की ट्रेन में बैठकर निराश नाम बेचैन दुखे. यह वही है जहां से वह चला था कहीं आगे नहीं बढ़ पता नहीं अब क्या होगा?

आते समय यह कितना खुश था ना उसे पक्का पता था कि अब्बा मिल जाएंगे उसे अपने भीतर समेट लेंगे वह अब्बा से लिपट जाएगा अब्बा खुश होंगे और खेल यदि कोई खास कारण नहीं होगा तो मैं अब्बा को लेकर हिंदुस्तान वापस जाऊंगा पर अब सब कुछ गड़बड़ आ गया था ना मिल रहे थे उनका पता लग रहा था शौर्य कहां खो गए थे कैसे थे किस जेल में थे क्यों थे सब गंद मत सदमा करनाल की तरह उलझा हुआ कैसे सुलझाए कोई सिरोही पकड़ाई में नहीं आ रहा था विनाश रहकर कहीं भागे का गोला बन सकता है ईश्वर में खोया हुआ अब तो उलझन में डूबा हुआ Amanaat कराची पहुंच गया उसी पता था कि कराची में

मेहमान चित्र है तथा चाहत पुलिस वाले अंकल भी है वह जरूर मदद करेंगे इसी आशा से बना हुआ और विदेश मंत्रालय के अवसर की बताई हुई सूचनाओं के हिसाब से कुछ जरा सहना हुआ अमन कराची आ गया यहां आकर ही उसे शायद खुद अपने तरीके से अब्बा को कुछ ना होगा यह ले लेता यह फैसला करके और यह भी सोच कर अगर वीजा खत्म हो गया और अब्बा नहीं मिले तो वह दोबारा लौट कर आएगा ना किंतु अब्बा को खोज खोजेगा जरूर उसे पता था कि अल्लाह एक रास्ता बंद करता है तो दूसरा खोल देता है हालांकि वह मेरा इधर भी पर पूरी तरह नहीं था उसे अपने ऊपर इमरान चाचा के साथ होटल वाले दादा तथा शाहजी पुलिस मैं कल सभी पर विश्वास था ऐसा भी नहीं था कि पाकिस्तान ने लोगों ने उसकी मदद होना होने की सब अच्छे दोस्त की तरह उसको उसकी मदद कर रहे थे होटल के सभी लड़के लोग कि अब्बा को खोजने के काम में जोडने थे जितनी सारी मदद हो तो अल्लाह की सहायता भी मिल ही जाएगी इस सोचने अमन को तसल्ली दी

मुंबई धमाके की खबर से पाकिस्तान के अखबार भी भरे पड़े थे अमन सभी खबरों को ध्यान से पढ़ना था अखबार के अनुसार कुछ लोग पकडे भी गए थे यह तूने नमन का नाम कहीं ना था खुश था बहुत आसानी से हिंदुस्तान वापस जा सकता हैउसका नाम कहीं नहीं आएगा. उसके भीतर सैकड़ों बातें पूछ रहे थे बड़ी होती जा रही थी और धीरे-धीरे मन के भीतर सैकड़ों taहनिया फैल रही थी कुछ ढूंढ रही थी कुछ सहला रहे थे कुछ शांत कर रही थी कुछ बेचैन कर रही थी तभी उसने उसे रहमान चाचा याद आए साथ ही उनकी प्यारी सी बेटी याद आई . उनका हिंदू होना याद आया उनका अपनी बेटी के लिए किसी लड़के की खोज वह भी हिंदुस्तान यह भी ध्यान आया यह सब बातें अब्बा जानते थे अब्बा ने कभी बताया नहींया कोई बात नहीं अब अब मिलेंगे तो उससे पूछूंगा का कोई अंत ना था एक latar थी जो जहां जगह पाती वही फैलती चली जा रही थी समूचे अमन को अपने भीतर सन्नाटा लग रहा था वह मन नहीं को ऐसा लग रहा था वह मन नहीं पन्ने पर लिखा कोई व्यक्ति है जो चल तो रहा है जीवित भी है तू पर कैसे किस प्रकार कितनी उलझन में खोया हुआकोई व्यक्ति है जो चलता जा रहा है .

दो दिन पहले तक अमन मेन अब्बा को मिलने की उम्मीद कहीं ज्यादा थी जो आज बिल्कुल खो गई थी आज वह अपनी उदासी को दूर करने के लिए क्या करें उसे समझ नहीं आ रहा था तभी बाजार में उसे एक गिफ्ट्स की दुकान देखिए वह उसमें खुश गया और उसने रहमान चाचा के लिए एक छोटा सा कैलेंडर खरीदा जो वह भारत जाने से पहले रहमान चाचा को भेंट करना चाहता था वह पुलिस वाले अंकल के लिए भी कुछ खरीदना चाहता था किंतु पैसे की किल्लत बहुत थी वह चुपचाप दुकान से निकल गया और चलता हुआ धीरे-धीरे रहमान चाचा के घर का नाश्ता ले लिया उसे लगा कि कोई उसका पीछा कर रहा है दबे पांव

उसने पीछे मुड़कर देखा कुछ नहीं देखा वह निश्चिंत होकर चलता रहा किसी के पीछे करने का सवाल ही नहीं था वह कोई मुजरिम नहीं था उसने कोई गलत काम नहीं किया था. अभी तीन ही बचे थे अभी से घर जाकर करूंगा अभी क्या उसने सोचा रहमान चाचा तो आगे नहीं होगी अतः अमन छोटा सा चाय का खोका देखकर उसी में घुस गया जिस कुर्सी पर बैठा था उसके सामने एक कुर्सी और रखी थी जिस पर एक आदमी आकर बैठ गया अमन हैरान था आप और भी जगह खाली है वह यहां क्यों बैठा है? अमन ने उसकी तरफ देखा उस की निगाहों में सवाल था उस आदमी ने के मुंह पर उंगली रखते उसे चुप रहने का इशारा किया. कम अमन हैरान होता आखिर कौन है यह है मुझ से क्या काम है मेरे पीछे क्यों आ रहा है है क्या कहना चाहता है? मन एक प्रश्न कुछ ही पल में मन के भीतर छोटे-छोटे तारों की तरह उगाएं पर बहस शांत रहा उसके चेहरे पर कोई भाग नहीं आया उसने चुपचाप चाय का आर्डर दिया और मुंजी जाकर पीने लगा सामने वाले आदमी ने भीचाय बन गई सिर झुका कर वह भी चाय पीते पीते बोला.

‘ चुपचाप बैठे सुनते रहो जो मैं कह रहा हूं. मुझे यहां किसी ने भेजा है यह कहने के लिए कि तुम रहमान साहिब के यहां नहीं जाना अगर घर जाओ भी तो सामान लेकर एकदम स्टेशन पहुंच जाना वापसी का टिकट मैं दे रहा हूं तुन्हें वापिस हिंदुस्तान चले जाना चाहिए यही तुम्हारे लिए अच्छा है.’

सिर झुकाए चाय पीते हुए मैंने पूछा,

‘ किसने भेजा है किसने कहा है. रहमान चाचा के साथ किया हुआ है क्या कोई हादसा हुआ है. वहां क्यों नहीं जा सकता?’

‘ तुम्हारे पास कुछ पूछने कान्हा तो वक्त है नहीं मौका तूने सिर्फ एक ही मौका दिया जा रहा है कि तुम घर चले जाओ अपने अब्बा को खोजने की कोशिश मत करो वह मुझे हिंदुस्तान आ जाएंगे जब उन्हें मौका मिलेगा.

गमन कहां थे टिकट देते हुए उसने कहा. वापसी का टिकट लेते हुए अमन उसकी और देखता रहा फिर बोला,

‘ मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा भाई आखिर बात क्या है? मैंने किसी का क्या नुक्सान किया है? मैं तो अपने अब्बा से मिलने आया हूं और और बस. मुझे किसी कुछ नहीं चाहिए अब्बा से मिलो तो मैं खुद ही जाना चाहता हूं मुझे नौकरी पर जाना है अगली पहली तारीख को इसलिए अब्बा से मिलने के अलावा और कोई काम नहीं है.’

मैं आदमी हूं थोड़ी देर चुप रहा फिर बोला.

‘ मुझे कुछ नहीं पता मुझे जो कहा गया है मैं वही कर रहा हूं इतना जरूर समझ गया हूं और तुम्हें भी समझा देना चाहता हूं कि यहां तुम्हारे लिए खतरा है इसलिए तुन्हें एकदम वापस चले जाना चाहिए यही अच्छा है फिर तुम्हारा वीजा भी जल्दी खत्म हो जाएगा तुम कराची के अलावा और कहीं जाओगे तो पकड़े जाओगे सिर्फ हिंदुस्तान ही तुन्हें बचा सकता है अच्छा अब मैं चल रहा हूं मैंने तुम्हें टिकट दे दिया है और समझा

दे दिया है अब अगर तुम ना समझे तो कुछ भी हो सकता है यह याद रखना चारों और किसी ना किसी की नजर तुम पर है यह तूने समझ लेना चाहिए.'

उसने खड़े होते हुए कहा और फिर वह चुपचाप निकल गया

अमन के सोच का कोई अंत नहीं डाला कितनी दिक्कतें कितने सवाल और किसी का कोई जवाब नहीं.

वह मन ही मन डर गया अब उसे लगने लगा के जरूर इस सब का संबंध अब वैसे है शायद अब्बा से कोई बड़ा गुनाह हो गया है. तभी तो यह लोग उनके बारे में कोई खबर नहीं देना चाहते ना मुझे खोज भी करने देना चाहते है और मुझे जल्दी से जल्दी यहां से भेज भी देना चाहते है.

अमन को लगा वास्तव में उनकी खोज यहां के सरकार के लिए किसी खास हादसे का सूचक है क्या मुंबई धमाके से इसका कोई संबंध है धीर परंतु अब्बा का क्या ? अब्बा जैसे सीधे-साधे व्यक्ति का सबसे क्या वास्ता? क्या उन्हें फहंसाया गया है यह भी तो होता ही है. सीधे-साधे व्यक्ति की गलत तरीके से उपयोग होता है अनेक बार सभी देशों में सभी स्थानों पर. और तू क्या हादसे का शिकार बने है?

अमन के वापिस जाने के रास्ते में सैकड़ों सवालों के साथ बिछे थे उन्हें आप वह स्टेशन कैसे जाएं फिर अभी तो रहमान चाचा के पास भी जाना है उन को साथ लेकर हिंदुस्तान जाना था यही प्रोग्राम था पर रहमान चाचा के साथ क्या हुआ है मुझे उस आदमी ने वहां जाने से क्यों रोका है कुछ तो है जो इस एक दिन में हो गया है यह समय मेरा इस्लामाबाद गया हुआ था.

अमन के सामने इस्लामाबाद में सबसे से मिलना उसका पहले दिन का व्यवहार और अगले दिन का बदलाव सबका चित्र खींच गया उसे समझ आ गया कि कुछ गड़बड़ है क्या है यह कौन बताएं अब उसे पुलिस वाले अंकल याद आने लगे रहमान चाचा के स्थान पर रहे पुलिस वाले अंकल से मिलने थाने चला गया. वहां जाकर देखा तो कुर्सी पर कोई और बैठा था पुलिस वाले अंकल शाह साहब का कहीं निशान ना था उसने पूछा तो पता चला कि उन्हें किसी और थाने में भेज दिया गया है वह यहां नहीं है.

यही आश्चर्य की बात थी आखिर एक दिन में ही सब कुछ हो गया.

क्या कोई यहां का ताकतवर आदमी इस सब के पीछे शामिल है जरूर ऐसे ही कुछ है पर क्यों? इस जगह रहने वाले लोगों का किसी राजनेता से यह किसी ताकतवर आदमी से किसी जमीदार से या किसी साईं कोई नहीं फिर क्यों? अमन को लगा ओके इस सब के पीछे कोई ना कोई राजनीतिक चाल है.

वह सतर्क होकर इधर-उधर देखता हुआ अपने पीछे का जायजा लेता हुआ रहमान चाचा के घर की ओर चला वहां पहुंचते ही अंदर जाते ही अभी कुछ कह भी ना पाया था कि दो पहलवान लोग अंदर घुस जाए , जोर से बोलें,

' यहां अमन कौन है?

रहमान चाचा चुपकेचुप रहे अमन नहीं आगे बढ़ कर कहा जी मैं हूं कहिए क्या काम है?

तुम अभी तक वापस नहीं गए चलो अब तक नहीं गए तो अब हमारे साथ चलो.

कहां जाना है मैंने क्या किया है किससे मिलना है और क्यों क्या अब्बा का पता चल गया है?

अमन मन में घबरा रहा था ऊपर से स्वस्थ जान बनने की कोशिश कर रहा था.

चाय की दुकान पर मिलने वाले आदमी के कहने के रंग से वह समझ तो गया था कि कुछ गलत हो रहा है उसके साथ ही नहीं उसके अब्बा के साथ भी है और शायद लोग मुझे सब पता नहीं लगने देना नहीं चाहते थे कि मैं अब्बा से मिलो और उनके बारे में जा जानू.

तू रहमान चाचा ने जल्दी से अमन का सामान ला कर उसे देते हुए कहा,'

यह तुम्हारा सामान है बेटा यही तो लेने आए थे ना भाई यह जा रहा है सिर्फ सामान यहां पर आना उसे ही लेने गया था----- अमन अब तुम जाओ जाकर अपनी अम्मा और बहन से मिलो उन्हें हमारा सलाम कहना फिर कभी आने की कोशिश करना ठीक है अब जाओ.

सब कुछ समझता हुआ अभी नासमझ बना रहा.

पर वह दोनों आदमी अमन को जाने देना नहीं चाहते थे उन्होने उसका सामान लिया अमन को साथ लिया और उसको लेकर कहीं चल दिए दोनों के बीच मेंकुछ नहीं कर सकता था बाहर निकलकर 19 से एक ने कहा,

' तुम रहमान की लड़की से चक्कर चला रहे थे तुम भी नहीं पता कि जिस पर साईं की नजर हो उसकी तरफ देखना भी गुनाह है तुम्हें पता नहीं है क्या तुम्हें तो पता होना चाहिए वैसे भी पाकिस्तान में किसी लड़की की तरफ देखना उसे इश्क लड़ाना दोनों ही जेल पहुंचाते है यह सब इस पर लोग रहते है अब तुम्हारे हिंदुस्तान में क्या होता है हमें नहीं पता पर अभी तो तूने साईं ने बुलाया है तुम्हें उनके सामने जाना होगा उन्हें बताना होगा कि तुम क्या कर रहे हो किसलिए आए हो और उस लड़के से तुम्हारा क्या जाता है.

अमन ने स्वच्छ सुना उसे यकीन नहीं हुआ कि ऐसा भी कुछ हो सकता है? मैं उसका दम आसान हो गया अजीब जगह फंस गया है अब क्या कहें किससे कहें और क्या करें उसने सोच लिया था कि वह साईं के सामने जाएगा और उन्हें समझाने की कोशिश करेगा कि मैंने तो उस लड़की को देखा तक नहीं है बात करना तो दूर.

अमन मुन दोनों के साथ चुपचाप चलता रहा जब तक की वह बहुत बड़े खुले मैदान में पहुंचे मैदान में दरवाजा था चारों तरफ बाढ़ थी उस दरवाजे से भीतर घुसे तो दूर कहीं एक एक हवेली दिखाई दी जो चार मनचले थी उसने चारों तरफ दरवाजे और खिड़कियां दिखाई दे रहे थे जाने कितने कमरे होंगे शायद यही साईं का घर होगा साईं का मतलब यह सोचकर आप शायद इस तरह का कोई ताकतवर आदमी को हमारे गांव के जमींदार की तरह अमन ने सोचा. ऐसे चुपचाप चलता रहाचाय की बैठक में पहुंच गया साईं नाम का यह व्यक्ति का कटे बड़ी-बड़ी मूछे वाला चमड़े का जूता पहने हुए एक बहुत महंगा सोनौली हुए लंबे चौड़े सोफे पर फैला हुआ बैठा था मुझको ताव दिया हुआ था ऐसा लगता था मानो पर है उसको किसी राजा महाराजा या भगवान से कम नहीं समझता यह भाव उसके चेहरे पर दिखाई दे रहा था दोनों आदमी उन्हें

जमीन तक झुककर उसे सलाम किया अमन खड़ा रहा उसे समझ नहीं आ रहा था इसके उसे ही सलाम करना चाहिए पर उसने बोल कर कहा सलाम वालेकुम.

वालेकुम सलाम भाई ने जवाब दिया साईं की आवाज नहीं कोई बहुत शक्ति उसके मूछों की तरह नहीं थी यह एक साधारण व्यक्ति की आवाज की जो ऐसा नहीं लग रहा था कि अपनी ताकत का गलत इस्तेमाल कर सकता है या करता है. अमन की जान ले जाना है उसे लगा कि वह एक इंसान कोई सामने डरने कोई बात नहीं.

तुम रहने रहमान क्यों बह रहे थे उसकी लड़की से तुम्हारा क्या वास्ता है भाई उसे छोड़ दो . वह हमारे घर की लड़की है हमारे लिए है उसका किसी और से कोई वास्ता नहीं तुम उससे कोई नाता नहीं रख सकते.'

जी जनाब आप सही कह रहे है मैं तो अभी कुछ दिन पहले हिंदुस्तान से आया था. और रहमान चर्च चचा मेरा जानने वाले है इसलिए उनके घर बाहर गया था मैंने तो उनकी बिटिया को देखा भी नहीं बात कर बात भी नहीं की मुझे तो अपने आप से मिलना था जिसके लिए ही इधर-उधर भटक रहा था अब पता नहीं कहां गए क्यों गए किसके साथ गए अभी तक उसे उलझन में था यह आज समान चाचा ने मेरा सामान देते हुए कहा कि मैं अपने ठहरने का इंतजार कहीं और कर लो और मैं बाहर निकल ही रहा था कि आपके इन बंधुओं ने मुझे पकड़ लिया और आपके सामने ले आए मैंने कुछ नहीं किया सीजन में तो एक सीधा-साधा मिलती हूं जो अब्बा से मिलकर वापस अपने घर लौट जाना चाहता हूं.

कहकर अमन चुप हो गया.

सांई अपनी असलियत पर आ गया अमन से कहा

' तो तुम कहना चाहते हो तुम बेकसूर हो. मुझे तुम्हारा कसूर पता चला इसीलिए तुम्हें यहां लाया गया. हर मुजरिम अपने आपको बेकसूर ही कहता है तुम भी यही कह रहे हो अब जाओ मेर लोग रास्ता दिखा देंगे.

ते कहते हुए इंसान ने अपना फैसला सुना दिया फैसला किसके साथ में थायह मुझे नहीं पता जाने का मतलब क्या था यह भी नहीं पता पता चला जब दोनों आदमी मुझे पकड़कर थाने में छोड़ आए यह थाने का इंस्पेकटर नया था मैंने तो भी हिम्मत नहीं छोड़ी सारी स्थिति को समझते हुए मैंने इंस्पेक्टर सबसे यह कहने का प्रयत्न किया कि रहमान चाचा की लड़की तथा रहमान जैसा का परिवार सारा का सारा मुश्किल में है कुछ लोग उन्हें धमकी दे रहे है उन्हें बचाना तथा उनकी मदद करना पुलिस का काम है अतः इस्पेक्टर साहब बजाएं मुझ पर वक्त ज़ाया करने के उनकी मदद करें उन्हें बचाएं.'

अमन ने इस्पेक्टर साहब से इल्तजा की पर इंस्पेक्टर साहब क्यों सुनते वेतन ताकतवर लोगों के नीचे काम करने वाले थे जो मुझे गलत कह रहे थे मेरे जरूर को हवा दे रहे थे बोलें,

' ठीक कहते हो भाई हर मुझे अपना जुर्म दूसरों पर थूकते है और खुद को बचाने की कोशिश करता है पर मुझे साईं सब कुछ बता चुके है कि शायद तुम नहीं जानते कि अगर तुमने अपना जरूर कबूल नहीं किया तो कल के अखबार में क्या खबर छापे के.

दमन ने सिर उठाकर उसकी तरफ देखा आंखों में सैकड़ों सवाल थे.

अब इंस्पेक्टर ने कहा,

‘ कल के अखबार में खबर होगी कि तुमने उस लड़की के मालिक की मर्जी के बिना उससे इश्क किया उससे ने कहा करने को राज़ी हुए यह बात लोगों तक पहुंच तो शर्म के मारेलड़की ने अपनी कलाई काट ली और इस प्रकार वह मर गई------ तुम्हें इसकी सजा भुगतनी होगी और जानते हो इसकी सज़ा क्या होगी एक लंबी की और फिर उसके बाद मैंने ही मौत.

इंस्पेक्टर की सारी बात अब अमन समझ गया था किसे साईं के जाओ कहने का मतलब भी समझ आ गया था अब उसे लग गया था कि बस आपका कोई रास्ता नहीं है वह जब तक उस चाय वाले भाई की बात को मानता और टिकट लेकर स्टेशन पहुंच जाता वापस जाने के लिए तब तक का समय भी साईं ने उसे नहीं दिया यह स्वास सामने वाले ताकत पर लोग है जिनसे अब उसे लाना होगा पर कैसे और कौन मदद करेगा .यह भी समझ गया था कि अगर वह है चला जाता तो शायद वह मान चाचा की बेटी भी बच जाते जाकर रहमान चाचा पर होने वाले अत्याचार ना होते पर यह तो उसे भी नहीं पता था ऐसा लग रहा था कि कोई कहानी चल रही है जो आगे क्या होगा कुछ नहीं पता चल रहा कोई रास्ता नहीं दिख रहा पुलिस स्टेशन के बाहर खड़ा हमारी आंखों में आंसू खरे अंधेरे अंधेरे की ओर देख रहा था जो सामने था तो नहीं पर उसे लग रहा था कि चारू और अंधेरा छा गया है कहीं रोशनी नहीं है वह बेबस है वह कुछ नहीं कर सकता दूसरे देश में जो कहने को उसका भी है उसके अब्बा का भी है पर शायद नहीं वह ना अब्बा का है ना मेरा है अजीब थी यह सोच अभी तक तो मैं समझ रहा था कि वह हिंदुस्तान में रहने वाला मुसलमान है और क्योंकि वह मुसलमान है इसीलिए पाकिस्तान की जमीन पर उसका हक है और क्योंकि वह हिंदुस्तान में रह रहा है इसलिए हिंदुस्तानी जमीन पर थी उसका अधिकार है पर स्वच्छ झूठ कुछ सही नहीं.

तो फिर यह जमीन किसकी है कौन सी जाति की है कौन से धर्म की है पता नहीं.

न सोच का कोई अंत थाना समस्याओं का कितना भी सोचता रहे और वह कोई हल तो नहीं दे सकता था वह पुलिस स्टेशन में खड़ा था उसे छूट जाने की और वापस अपने घर चले जाने की कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही कि दिमाग ने मानो काम करना बंद कर दिया था क्या करता नमन चुपचाप उन लोगों के बीच में कठपुतली सा बना खड़ा रहा उनके फैसले का इंतजार करने लगा इंतजार ही सबसे मुश्किल काम होता है जो अक्सर हम सब लोगों को दिनों बाद में करना पड़ता है पर इसके अतिरिक्त कोई चारा भी तो नहीं है.

दो लोगों ने उस कंबल को पलंग पर पटक दिया और ऐसे ही छोड़कर चल दिए कमरे से बाहर निकल कर उन्होने दरवाजा बंद कर दिया वह मालिक के पास जाकर अपने कारनामे को बताना चाहते थे और उनसे इनाम देना चाहते थे मालिक कमरे में थे मालिक कोई और नहीं सही थे जो उसे ठाठ से कमरे में सोफे पर बैठे थे साथ में एक गांव तकिया रखा दिखा था जिस पर पर हाथ रखकर बैठे थे उनका चार आधा कंधे पर था तथा आधा नीचे दिया हुआ था नीचे एक खूबसूरत खाली पूछा था कि अपनी खूबसूरती से अपनी कीमत स्वयं बना हुआ था कमरा यूं तो साधा था पर फिर भी साईं की अमीरी रुस की ताकत उसके रोकता सभी का सूचक था अजीब सी शान शौकत का प्रतीक था वह कमरा साईं के बैठने का ढंग तभी वे दोनों कमरे के बाहर तक पहुंच . गए.

साइड गिलास हाथ में लिए बैठा था कि रास्ते शरबत था या शराब कोई नहीं जानता था यह दोनों दरवाजे पर खड़े साईं के देखने का इंतजार करते रहे फिर दरवाजे पर हल्की सी दस्तक दी.

साईं ने तिरछी निगाहों से भी देखा. उन दोनों को देखकर वह हल्का सा मुस्कराया इशारा किया अंदर आने का अपने जूते उतार कर मैं दोनों अंदर आ गए पर दरवाजे के पास ही हाथ जोड़कर खड़े रहें और इंतजार करते रहे कि साईं कुछ पूछे तो जवाब दे.

श्री ने इशारे से ही पूछा कुछ बोले नहीं उन्हें लगता था कि साईं नशे में है तभी तो कुछ नहीं बोले सिर्फ इशारा किया उस इशारे को देखकर उन दोनों में से एक ने कहा,

; भाई सलाम वालेकुम. आपका काम हो गया वह कमरे में है.

सबीना को बुलाओ

जी. वह आदमी कटा और भागकर सबीना को बुलाने जल्दी आ जल्दी ही वह सबीना के साथ साए के पास वापस लौट आया.

तुम लोग जाओ और सबीना तुम यहां आओ.

देखो उधर कमरे में कंबल पर लिपटी रहे है उसे नहला दो ना कर तैयार कर दो समझा दो मैं क्या चाहता हूं मुझे रोती हुई लड़कियां अच्छी नहीं लगती उसे ठीक से समझा देना यह रोहित हुए नहीं ठीक से तैयार करना अच्छी तरह तैयार करके मुझे बताना जाओ अब अपना काम ठीक से करो.

सबीना उस कमरे में पहुंचे कंबल में लिपटी में है उसी तरह पढ़ी थी उसे खुशी नहीं था शायद सबीना ने कंबल हटाया तो वह सचमुच बेहोश थी सबीना समझ गई थी किस लड़की को अगवा किया गया है और अब यह si का शिकार बनेगी. सबीना हालांकि साईं के यहां काम करती थी पर उनकी इस आदत से बेजार थी. वह चाहती थी कि साईं की पत्नी को सब बात बता दे पर उसे अपने हामिद का ख्याल आता जो साईं साईं की नौकरी में था उसके चार बच्चे थे वह उन बच्चों को साईं के कारण ही पढ़ा लिखा रही थी अगर वह साईं का भेद खोल देती तो बच्चों का और अमित का क्या होता वह जानती थी मजबूर थी इसलिए इस

मजदूरी के तहत थी वह यह सब गलत काम करती थी जिसे वह गलत कहती थी पर ठीक नहीं कर सकती थी.

सबीना उस लड़की के होश में आने की इंतजार करती रही और उसे देखते रहिए खूबसूरत ए बच्ची सी वह लड़की कितनी भोली और कितनी भली लग रही थी उसे उस बच्चे पर बहुत तरस आया मैं उसे अपनी ही बच्ची सी लगी पर बचाए कैसे हां सोचती रही कुछ करने का ध्यान उसके भीतर बार-बार उसको उत्तेजित कर रहा था मैं चाहती थी इस बच्चे को उठाए होश में लाए और उसे इसके घर छोड़ आए मार देगा तो साईं की नौकरी को भूखे मर जाना क्या ज्यादा अच्छा नहीं होगा यह भी सोचती रही पर फिर हामिद और बच्चों का सोचकर रह गई हम सब अवश्य क्यों नहीं कर पाते थे जो हम चाहते है? इतने मजबूर क्यों होते है पर मजबूरी किस चीज की है शायद हम सब लोग मतलबी है सिर्फ अपना सोचते है अपने और अपने परिवार के बारे में.. औरों के बारे में सोच कर उनके लिए कुछ करना चाहते है घर कहां पाते है शायद यह हमारी कमजोरी है. इस कमजोरी से ऊपर उठकर के ही इंसान असली इंसान बनता है और अपनी अपनी मजबूरियों ने भरे हम लोग वही नहीं कर पाते या नहीं इंसान ही तो नहीं बन पाते. सबीना यह सब सोच रही थी और उस बच्चे की तरह देखती जा रही थी कंबल फट जाने से अचानक हवा पाकर वह बच्ची हिले थोड़ा सा होश में आई आंखें खुली और कमरे की छत तक देखने लगे उसे कुछ भी पहचाना हुआ नहीं लग रहा था इसलिए हैरान थी धीरे-धीरे तू उसे अपने उठाए जाने का दृश्य याद आया तो वह झटके से उठ गए थे सामने शबीना बैठी थी उसकी तरफ देखा और बोली,

; मैं कहां मुझे यह क्यों लाया गया है यह किसका घर है आप कौन है मुझे मेरे अब्बा मम्मी के पास छोड़ दे आप भी तो मम्मी है ना किसी की मेरी भी अम्मी जैसी ही है मुझे मेरे घर ले जाएं.

वह सबीना की और देखती रही इस भावना की शायद उन्हें उस पर तरस आता है और वह वही कर ले जो बच्ची चाहती है.

अचानक सवीना उठकर दी हुई उसने उस बच्ची को उठाया उसे खाने में ले गई उसे नहीं लाया साफ किया नया जोड़ा कपड़ों का वाला जो अलमारी में ढेर से कपड़ों के बीच में उसे मिटा सकता था उसने वह एक छटा और आकर उस लड़की से कहा,

; यह पहन लो. अच्छे से तैयार हो जाओ. तुम साईं के घर में हो हैजानते हो साईं बहुत बड़े आदमी है वह बहुत ताकतवर है. उनकी बात को ना मानना बहुत बड़ी गलती हो गई अगर वह खुश हो गए तो तुन्हें आसमान पर बैठा देंगे तूने ही नहीं तुम्हारे अब्बा अम्मा को भी मुंह की भलाई के लिए तो वो करती जाओ जो मैं तुमसे कह रही हूं फिर यह भी बता देती हूं तुन्हें कि तुम शाम को खुश कर दो चाय की खुशी तुम्हारे लिए तुम्हारी जिंदगी ही नहीं है तुम्हारी सारी जिंदगी का सुख उस पर टिका है अगर तुम सुख पाना चाहती हो अपने अब्बा मुझे भी खुश देखना चाहती हो तो मेरी बात ध्यान से सुनो तैयार हो जाओ अच्छे से चेहरे पर मुस्कराहट ले आएं और जब से आए तो वही करना जो वह चाहता है रोना नहीं साइको रोती हुई लड़कियां

पसंद नहीं है समझ रही हो ना मैं क्या कह रही हैं लेकिन तुम छोटी बच्ची हूं लेकिन यह बात तो सभी लड़कियां समझ जाती है.यह भी जानता कि कोई कोई नहीं कर सकती चाहते तो हूं लेकिन मैं मजबूर हूं हम यहां पर सब कैसी है और कैद में रहने वाले कोई किसी की मदद नहीं कर सकता अब तो तुम भी कैसी हो तुम भी यहां से बचकर नहीं जा सकती सिर्फ एक तरीका है बच कर वापस जाने का और वह ऊंचे है साइको खुश करना अगर तुमने चाय को खुश कर दिया तो बस समझ लो जिंदगी बन गई

समझाते हुए सबीना उस लड़की को तैयार करती रही और बोलती रही!लड़की चुप-चाप तैयार होती रही रोती रही पर आवाज तो मानो बंद हो गई थी कुछ बोल ही नहीं पा रही थी सबीना ने उसका नाम पूछा तो भी वह चुप रही क्या पता कि उसका नाम क्या है. वह जितना अपने बारे में सोच रही थी उससे ज्यादा से उसे अमन की थी जिससे साईं के आदमी पकड़ कर ले गए थे उसे नहीं पता था कि हम कहां है सिर्फ यह जानती थी कि अब्बा अममीके साथ वह हिंदुस्तान चली जाएगी पर उससे पहले ही उसे अगवा कर लिया गया था. पता नहीं अब क्या होगा ना मुझे अपने बारे में पता है ना अमन के बारे में उसका दिमाग सुन्न था क्या सोचती ऐसी स्थिति दे क्या जवाब देती वह तो से एक लड़की थी उसका कोई नाम नहीं था..

जिन लोगों ने उसे गोवा किया था लोगों ने मम्मी पापा की कितनी बेइज्जती की थी उसे गया खा उन्होंने मम्मी को धक्का दिया था बाबा को थप्पड़ मारा था और फिर अमन को गालियां दी थी अंत में उसे कंबल में लपेट कर भी यहां ले आए थे यह सब उसे धीरे-धीरे याद आ रहा था अचानक उसे वह वक्त याद आया तो वह हिचकियां ले ले कर रोने लगी जोर-जोर से सबीना घबरा गयी. सबीना ने उसे जल्दी से प्यार किया समझा या चुप कर आने की कोशिश की पर वह रोती ही चली जा रही थी अब सबीना को कुछ समझ ना आए वह वह भागी और साई के कमरे के बाहर पहुंच गए. भाई गई बाहर हूं हिम्मत कि यह कि लड़कों चुप नहीं हो रही अगर उसने यह कहा तो साईं का कोई भरोसा नहीं है उसे फायदा ले या लड़की को आकर कुत्ते के आगे फेंक दे फिर उसने सोचा यही ठीक रहेगा कम से कम लड़की की इज्जत तो बच जाएगी इतनी छोटी बच्ची है उसका मर जाना ही बेहतर है यह सोचते हुए सबीना ने साईं के दरबार में खड़े होकर दस्तक दी सामने देखो तो उसने बताया,

‘ साईं लड़की को अभी होश नहीं आया है वह तो बेहोश पड़ी है बहुत देर तक कंबल में लिपटी रही शायद उसे थोड़ा वक्त लगेगा आपको इंतजार करना पड़ेगा मैं वही हूं जब वह तैयार हो जाएगी तो मैं आपको आकर बता दूंगी माफ कीजिए साई मैं कोशिश कर रही हूं.

कह कर सभी ना चुपचाप सिर झुकाए खड़ी रही इस इंतजार में कि साईं कुछ कहेंगे. साईं नशे में थे लड़खड़ाते हुए उठ खड़े हुए और उसके साथ साथ कमरे की तरह चलने लगे बाहर एक गाड़ी रुकी उसमें से साईं की पत्नी बाहर निकली जिसे देखकर लड़खड़ाते हुए साईं वापिस कार की तरफ चल दिए.

अच्छा हुआ कम से कम साईं अब उस लड़की के कमरे की तरफ नहीं जाएँगे सफ़ीना ने शांति की सांस ली और फिर साईं की पत्नी की तरफ चल दी उन्हें सलामालेकुम किया उसके आने पर अपनी खुशी जाहिर की और उनका सामान लेकर कमरे की तरफ जाने लगी । का कमरा दूसरी ओर था कहां पर किसी और को एक आने की इजाजत नहीं थी शायद जब तक वह आ जाते और अपनी पत्नी की बातें सुनते उनसे मिलते महाशय अपना पति धर्म निभाते थे और यहां किसी को बुलाकर उसको लूटते थे पता नहीं यह है इंसान का कौन सा रूप था सबीना सोचती रहती पर कुछ जवाब नहीं मिलता.

मंकी नियति भी क्या है उसके पास सवालों का अंधा होता है जवाब सिर्फ सोच भर मैं सोचता रहता है घूमता रहता है घटा जमा भाग गुनाह सब करता रहता है परंतु सवाल हल नहीं होता अजीब है यह जिंदगी अजीब है इसकी रहें जो कभी लौटकर वही नहीं होती जिन्हें हम छोड़ आते हैं.

मुझे यही तो अमन के साथ हुआ यही रहमान चाचा की बिटिया के साथ यहीं आपके साथ सब के साथ वह होगा जिसकी कोई उम्मीद ना थी ना उन्होंने कोई गुनाह किया था जिसका हो नेहल मिलना चाहिए था और हल भी कैसा- जेल जाने का अजीब बात है अमन को तो चलो झील मिली अब्बा का तो पता नहीं शायद बेबी जेल में हूं किसी गुनाह के वजह से लेकिन रहमान चाचा की बिटिया उसने क्या किया था सिर्फ 16 साल की लड़कीजोर जिंदगी के बारे में कुछ नहीं जानती थी उसके साथ क्या हुआ यह सोच भी सबीना को को डरा देते हालांकि साईं की देवी का गाना उसे तसल्ली की सांस देने लगा था उसे लगा था कुछ वक्त के लिए तो मामला टला पता नहीं साइन क्या करेगा मैं सोचती रही और चुपचाप चाय की बीवी का काम करती रही है उनके लिए चाय नाश्ते का इंतजाम किया उनके बिस्तर की की और फिर वह अपने क्वाटर में चली गई.

साईं भी अपने बीवी के पास चला गया उससे बात करने लगा उसके प्रति वफादारी दिखाने लगा और वह अभी नए जो वह हमेशा करता रहा था वह करने लगा पर उस लड़की का क्या? एक दिन सोचती रही आख़िर उसका नाम क्या है? कि कोई जवाब नहीं मिला था उसी ने खुद उसका नाम रख दिया बिटिया ना तो बिटिया के साथ क्या हुआ?

इसकी तो किस्मत ही खराब थी उन दोनों आदमियों ने जो उसे उठाकर लाए थे जब देखा कि साईं की बिजी आ गई है और वह उस कि कोठी में चला गया है तो वह दोनों चुपके से उसके कमरे में पहुंच गए दोनों के चेहरे पर मुस्कराहट थी जो मूछों के बीच में से झांक रही थी उनको भीतर देखकर बिटिया घबरा गई बोली, ‘ तू आप लोग मुझे मेरे घर छोड़ दें आपको तो पता है आप ही लेकर आए हैं. मैं यहां रह कर क्या करूंगी मेरे अब्बा अम्मा बहुत दुखी होगे बहुत बेचैन हो गए मुझे खोज रहे होंगे आप से हाथ जोड़ कर इल्तजा है कि

आप मुझे मेरे घर छोड़ दे अल्लाह आपको बहुत कुछ दे गाल अल्लाह का हाथ था पर रहे यही दुआ मैं करती हूं.'

उससे बच्ची ने जिसने जिंदगी को ना देखा था ना पढ़ता था फिर भी जाने कहां से आई शब्द उसके भीतर थी जो बाहर निकल आया उसने बार-बार उन लोगों से हाथ जोड़कर इंतजार भी कि उन्हें दुआएं भी दी पर वह लोग मुस्कुराते रहें. उनमें से एक ने कहा,

' लड़की तुम क्या सोचती हो तुम यहां किसलिए लाई गई हो असल में तुम लाई तो साईं के लिए गए हो किंतु साईं के बीवी आ गई है इसलिए वह तो नहीं आ पाएंगे इस्तेमाल की चीज को इस्तेमाल तो होना ही चाहिए करना ही चाहिए अब करने वाला कौन है यह कहां मायने रखता है हमने सोचा है कि आज हम लोगों की किस्मत से असाई ने तुम्हें हमारे लिए छोड़ दिया है वह हम ही इस्तेमाल कर लें यह कहते कहते हैं वह लोग उस पर टूट पड़े जब तक वह सोच पाती जब तक वह समझ पाती कृपया करें तब तक उसके कपड़े उतर चुके थे वह शर्म से डूबी हुई आंख मत कर बैठी हुई थी उन्होंने उसे जबरन लिटाया उसके साथ वह कुछ किया जो उसने सोचा भी नहीं था इसके बारे में शायद नहीं जानती भी नहीं थी इतनी छोटी जो थी इतनी छोटी उम्र में इतना कुछ हो जाना उसकी बता सेट की रहा था वह एक व्यक्ति के जाने के बाद बेहोश हो गए दूसरा उसके देखो शरीर शरीर शरीर से खेलता रहा जब वह थक गया तो वह उसे कंबल उसके ऊपर डालकर छोड़ गया और दरवाजा बंद कर के बाहर.

बिटिया बेहोश पड़ी नहीं आखिर यह दरिंदगी कैसे संभालती कैसे सहती किस लिए सबसे अच्छा उसे बेहोश होना ही लगा पर वह कोई जानबूझ कर तो दे होश नहीं हुई थी.

साए के अमन बहुत बड़ा खतरा होता जा रहा था उसका जेल में जाना जरूरी था .

यही कारण था कि साइनस के किसी तरह अमन को जेल में डलवा दिया था कि न व्यवहार रहे न कुछ कर सके.

.

लड़की न*** बिना कपड़ों के कंबल के नीचे पड़ी रही बेहोश और धीरे-धीरे उसकी सांसे बंद हो गई उसने संसार के अत्याचार का विरोध इस प्रकार किया उसे लगा होगा कि यह संसार बहुत गंदा है इसे छोड़ देना ही बेहतर है यह उसका निर्णय था या उसके अल्लाह का कौन बताएं कौन जान सकता है कोई नहीं.

अगली सुबह उन दोनों आदमियों ने लड़की के बारे में जानने की कोशिश की चुपचाप इधर उधर देख कर वह उस कमरे में घुसे देखा की लड़की तो मर चुकी है. उन्हें समस्या का ध्यान आया दोनों घबरा गए दोनों ने सोचा अब क्या करना चाहिए.

' यह तो कहा'

‘ हमें साईं के लिए दूसरी लड़की लाकर रख देनी चाहिए रात होने से पहले चलो इसे उठाते हैं इसका कुछ इलाज करती हैं यह कहते हुए वह लोग इंतजार करने लगे कि कब शौच का दूध हल्का हो कब से दूसरी लड़की यहां लाकर बिठाएं और इसे यहां से हटायें तभी दूसरे ने कहा,’

क्यों ना हम इसका सही इस्तेमाल करें

मतलब

मतलब कि ----- इसे रहमान के यहां आ जा कर छोड़ देते हैं कह देते हैं कि इसने शर्म के मारे जान दे दी क्योंकि उसने एक हिंदुस्तानी लड़की से इश्क किया था सब लोगों ने उसको जलील किया और उस ने घबरा कर अपनी जान दे दी.

वही किया गया रहमान ने उनकी बात सुनी तो वह पागल हो था उसकी बेटी के साथ ऐसा जुल्म उसने चिल्ला कर कहा,

‘ तुम लोगों ने मेरी बेटी को मार दिया इतनी छोटी उम्र में अभी तो उसे दुनिया में बहुत कुछ देखना था तुमने उसके साथ क्या किया है मगर कुछ गलत किया है तो मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं’

रहमान की आंखों में कौन उतर आया था वह अपनी बेटी के लिए बहुत बेचैन था उसकी लाश को टटोल रहा था अम्म दहाड़े मार कर रो रही थी!एक ही तो बचची थी उसने क्या बिगाड़ा था किसी का !यह क्या हुआ?

रहमान सोच रहा था क्या करता? मुकाबला ताकतवर लोगों से था। उसे लग रहा था अल्लाह उसे ताकत दे तो वह जाकर उन सबको हलाल कर दे.

दोनों आदमी सफाई पेश कर रहे थे,

‘ भाई सारी गलती तुम्हारी लड़की की है और तुम्हारी भी है तुमसे कहा तो था कि साईं की बात मान लो साईं अच्छा आदमी है तुम लोगों पर दया बनाए रखता वह तो सबकी परवाह करता है उसने तो कहा था कि इस लड़की से वह शादी कर लेगा और इसे महारानी बनाकर रखेगा तुम्हीं नहीं माने अब क्या हो सकता है कहते हुए दोनो उठे औरलाश को कहीं छोड़ कर चले गए. थोड़ा रूक कर फिर बोले,

‘देखो रेहमान तुम हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते कल के अखबार की खबर यह होगी कि तुम्हारी बेटी ने शर्म के मारे अपने ज्ान देदी है तुम चुपचाप इसका जनाजा निकाल दो अगर कुछ करने की तो तुम्हें और तुम्हारी बीवी को भी मार दिया जाएगा साईं कितना ताकतवर है तुम जानते तो हो हमारे पास भी वही ताकत है इसीलिए उसे चुपचाप मान लो और अपनी जिंदगी जिओ

कहते हुए दोनों दोनों लोग चले गए

उधर अमन के लिए कोर्ट लगी थी वह कोर्ट में खड़ा था सुनवाई हो रही थी उसके आरोप बताए जा रहे थे ।उसे पता चला था कि रहमान चाचा की बिटिया जिसका वह अब तक नाम नहीं जानता था की मौत हो गई उसकी मौत से रहमान को बहुत धक्का लगा था उसने तो यही सोचा था कि शायद साईं सिर्फ धमकी दे रहा है ऐसा कुछ नहीं करेगा पर उसने तो कर दिखाया और वह भी बिना कारण के इधर जब मै उधर वह पर उस बच्ची का क्या कसूर था उसे तू शांति से रहने देता वह तो भोली भाली लड़की थी जो कुछ कर सकती ही नहीं थी ना रहमान चाचा कुछ कर सकते है।

अमन के भीतर गुस्से की अनेक लहरे उठ रही थी पर कोर्ट में खड़ा क्या कर सकता था.

उधर पुलिस इंस्पेक्टर ने अमन के खिलाफ रहमान के घर के आस पड़ोस से बहुत से गवाह तैयार कर लिए थे जिन्होंने कहा था कि वास्तव में अमन और रहमान की बेटी का कोई ना कोई रिश्ता था दोनों गलत रिश्ते में बंधे थे।गवाहों ने यह गवाही दी अमन का फैसला हो गया और उसे जेल में भेज दिया गया जब तक असल फैसला सामने ना अा जाए तब तक उसे जेल में ही रहना था अब यह कोई छोटी मोटी बात नहीं थी एक दिन में कोई फैसला नहीं होता यह तो महीने लग सकते हैं कोई रास्ता नहीं बचा था अमन को अब जेल में ही रहना था उसके मन में यह बात भी आ रही थी जेल में शायद अब्बा के बारे में कुछ पता चल सके इसलिए उसे जेल में जाना भी बुरा नहीं लग रहा था वह समझ रहा था कि उसकी तो जिंदगी खत्म है लेकिन अब्बा का मिल जाना एक बड़ी चाहत है जिसके कारण वह जेल जाना भी सह सकता है।

अब रह जाती है रहमान चर्चा की बिटिया।उसे याद कर उसके भीतर बहुत कुछ होता? वह उन्हें लेकर हिंदुस्तान जाने वाला था ताकि उसका विवाह हिंदुस्तान में हो सके रहमान चाचा की बात उसे सही लग रही थी कि क्योंकि वह स्वयं हिंदुस्तानी है इसलिए बिटिया का विवाह किसी हिंदुस्तानी लड़के से ही किया जाए। हालांकि रहमान के बंदे भी उस बच्चे के लिए कुछ कम रोशन थी मैं उसके प्रति संवेदनशीलता. उसका साथ उसे देखना है अक्षय जब है खाना परोस थी तब उसका मुखडे होना अच्छा लगता था आने की कोई बात कभी नहीं हुई थी ना नाम पूछा था न हाल-चाल है न कुछ और पर चुप रह कर के भी तो बहुत कुछ कहा जा सकता है बहुत सी बातचीत हो सकती है.

अमन के पास सोचने के इलावा कुछ ना था जेल में बैठा हुआ वह सोचता रहता कभी अब्बा के बारे में कभी अमीर और छुट्टी के बारे में और कभी रहमान चाचा की बिटिया के बारे में क्या वह कोई दुर्भाग्य है कोई बुरा साया है जहां भी जाता है वहां कुछ ना कुछ खराब हो जाता है मैं सोचता रहता और क्या होना था होता तो वही है जो इस समय उसके सामने था आज अगर वह देखे तो वह सबसे बुरे वक्त में जी रहा था उसे लगता मैं हिंदुस्तान से आया ही क्यों ना आता ऊना उसके साथ ब्लाउस बच्चे के साथ किसी के साथ भी कुछ ना बताना रहमान चाचा इस सब का शिकार होते हैं अब मैं क्या करूं यह सोचता रहा

‘ शायद यह भी तो लिख सकता हूं जेल से भी चिट्ठी तो जाती ही होगी ऊपर अम्मी को अगर चिट्ठी लिखूंगा और अपने बारे में बताऊंगा या अब्बा के ना मिलने के बारे में लिखूंगा तो चिंता में पड़ जाएंगी मुझे तो कुछ नहीं लिख सकता अब्बा को कहां ले यह पता ही नहीं है बदकिस्मती मेरे साथ साथ इधर-उधर घूम रही है पीछे-पीछे चल रही है अब पता नहीं मिल पाएंगे या नहीं यह सोचने उसे बहुत घबराहट थी पता नहीं क्या होगा पर आज जो स्थिति उस से उस से बुरी बूढ़ी और क्या हो सकती है यमन की स्थिति बहुत नाजुक थी जेल में उसका शरीर चाहे जमीन पर पड़ा हुआ था परंतु मन जाने कहां कहां तक भटकता था. इतना गुस्सा था कि वह खाने पर उतार सकता हूं जेल में उसने कई दिन तक खाना नहीं खाया अभी रहे उस खाने को खाने लायक समझ ही नहीं पा रहा था लेकिन असल में तो खाना न खाना भी एक तरह का विद्रोह होता जेल बस जेल के अफसर इसको कैसे बर्दाश्त करता हूं उन्होंने जबरजस्ती खाना खिलाने की कोशिश की दिल की भी अजीब हालत थी वहां की राजनीति भी अलग थी जो ताकतवर है यहां भी अपनी ताकत का इस्तेमाल करते थे जिनके पास रुपया था उन्हें सब कुछ मिल जाता था सिगरेट से लेकर मोबाइल फोन पर खाने का सामान भी मैं अलग से मिल जाता था सारी झूठ उनके लिए थी अमन को धीरे-धीरे समझा रहा था जेल के अफसरों और उन कैदियों के बीच कोई समझाता है मतलब जे के बाहर भी पर जेल के भीतर भी सभी तरफ ताकत कहीं भूल पाना है यह पैसे का हम लोगों के पास ना पैसा है न ताकत इसीलिए हमें जीने का भी हक नहीं है हमें जीना भी उन्हीं के हिसाब से हैं और मरना भी उनके फैसले कर यह बात समझ में आते ही अमन ने जेल का वह गंदा सा खाना खाना शुरू किया क्योंकि वह ताकतवर बनना चाहता था वह चाहता था कि इन ताकतवर लोगों के बीच में जाए यह इंचेस ताकत की लड़ाई सीखें और फिर दुनिया में निकले जेल में मांस के सोच विचार बदल दिए थे अब तक का भला बना अमन अब वाकई में भला ना रहना चाहता था ताकत पाकर के साइन की तरह बाहर निकलकर अपना संसार खुद बनाना चाहता था पर कैसे यह कहा जाता था पर वह उस रास्ते पर चल दिया था उसके अंदर की निराशा ने उसमें आशा भरी थी उसे लग रहा था कि इस इसकी तरह मैं अब्बा को भी घूम सकता हूं यह मान चाचा को भी दिला दे सकता हूं और इसी तरह मुझे अपनी जिंदगी बनानी होगी खुद खुदसमा देनी होगी कभी तो कहते हैं कि इंसान अपनी जिंदगी का बनाने और बिगाड़ने वाली होती है

अमन को लगा वह एक आलेख बड़ा हो गया है अब वह दबा के लिए घूमने वाला उन्हें खोजने के लिए इधर उधर भटकने वाला इंसान नहीं रह गया है अब वह बहुत कुछ लिखेगा अपने आप को बदलेगा और फिर अब्बा को खोज जाले का खुद भी जेल से बाहर निकलेगा और ताकत पाया अमन कोई और व्यक्ति बन जाएगा जिससे कि वह अपनी जिंदगी अपने तरीके से जी पाएगा.

आठ दिन इसी तरह भीग गए अमन न खाना खाता मैं किसी से बात करता हूं बस चुप चाप लोगों को देखता रहता . जेल का उसके बंद लोग लोगों जानना उससे उस से पूछते हैं लेकिन अमन कुछ जवाब नहीं देता.

ऐसा हो रहा था मानव वह बोलना ही नहीं जानता. दिमाग सुन्न आ चुका है और मुंह में बोलना बंद कर दिया है यहां तक कि वह खाना खाना भी भूल गया है.

जेल के अक्षरों को यह कहां बर्दाश्त था कि कोई यदि उनकी बात ना माने दो-तीन दिन के बाद ही जबरदस्ती उसे खाना खिलाया गया उसके साथियों ने उस पर अनेक जुल्म किए वह चुप-चाप सब सहता रहा मानव उसने कभी कोई दम था ही नहीं यह निश्चय कर निश्चय कर कि वह ताकतवर बनेगा कहीं से उसे साहस ही लाना होगा वह हाथ में दिन मानो नींद से जागा उसने अपने साथियों से बातचीत की और से असेना से बाहर निकल कर पेड़ के नीचे आकर बैठ गया था. बाहर की हवा ने उसके दिमाग को कुछ बोला मैं चारों तरफ का नजारा देखने लगा जिस देश में रह था वह खांसी बड़ी थी चार मंजिला थी उसके थी हर मंजिल पर अनेक कमरे उन्हें लगेंगे छोटे-छोटे दरवाजे ना कोई झरोखा रोशनी आने की कोई जगह नहीं ऐसे बने हुए थे ऐसे ही एक कमरे में वह भी रह रहा था अपने 78 साथियों के साथ. उन्हें वह अब तक जानता नहीं था बाहर हवा में आकर उसने एक लंबी सांस अंदर इधर-उधर सब लोगों की तरफ ध्यान से देखने लगा वह तरीका ढूढ़ने लगा जिससे कि वह ताकत है उसने बहुत से किस से सुने थी कुछ कहानियां पढ़नी भी थी कुछ कहना उपन्यास में पढ़ते थे जिस में एक अच्छा खासा व्यक्ति जेल में जाकर गुंडा बन जाता है ताकत पा लेता है और जो वह चाहता है वही पाने में झूठ जाता है शायद उसे भी ईश्वर ने जेल में इसीलिए भेजा है

केक तो इसीलिए कि वह ताकत पा सके और दूसरा अपने अब्बा के बारे में पता कर सके यूं तो दोनों ही बातें उसे ठीक लग रही थी उसे लग रहा था कैसा है अब्बा यही मिलेंगे त तबियतभी तो ईश्वर ने

उसे यहां भेज दिया है यह उसे भगवान का दिया कुछ लग रहा था मैं जानता था आज भी कुछ करता है अल्लाह ही है अल्लाह के दिन आज एक पत्ता भी नहीं मिलता. अब वह कुछ शांत हुआ उसका मन मस्तिष्क भी काम करने लगा आसपास के लोगों को उसने गौर से देखा उसे लगे यहां भी पूरा एक देश कशा है इशारे की सारी राजनीति वही है जो देश की होती है कुछ ताकतवर लोग शीना ताने इधर-उधर घूम रहे थे सब पर अपना नूर आप जमाते हुए और दूसरे कुछ लोग उनके सामने झुक जाते थे उनके कहे अनुसार चलते थे काम करते थे यहीं सामने वेक और ताकतवर आदमी जमीन पर ही लेटा हुआ था उसके आस पास बैठे हुए तीन चार लोग कोई पैर दबा रहा था कोई कंधार और कोई उससे गुप-चुप कुछ बात कर रहा था. ऐसे बोल रहा था जैसे किसी की शिकायत कर रहा हूं वह बार-बार उसकी तरफ देखता अमन ने सोचा मुझ में क्या है कुछ भी तो नहीं मेरी और क्यों देख रहा है यह आदमी. कभी लेटे हुए आदमी ने भी मुड़कर उसकी तरफ देखा अब तो मन घबरा गया उसे लग गया ओए कुछ गड़बड़ है . है लगता है यहां भी साईं के आदमी बिखरे हुए हैं जो मेरी ओर इशारा करती है कुछ करने की सोच रहे हैं. अमन चुपचाप बैठा सारे स्थिति का जैसा भी लेता रहा और सोचता भी रहा इंतजार करता रहा कि अब क्या होगा? इसके अतिरिक्त कर भी क्या सकता था उसने पर चारों तरफ निगाह घुमानी jk दरवाजे गिनने शुरू कर दिए यह अंदाजा लगाने के लिए की जेल

में कितने लोग हैं उसे लगा ऊपर की तरह बीच दरवाजे हैं चौथी मंजिल पर या नहीं चारो मंजिले पर 20 20 दरवाजे मिलाकर अच्छी हो गए अगर एक शहर मेंआज अकेली रहती हैं जैसे कि मेरे कमरे में रहते हैं कुल मिलाकर 644 कदी रह रहे हैं इसके अलावा अक्सर और कर्मचारी के लोग भी. इतनी बड़ी संख्या इतनी बड़ी जेल मेरा कसूर तो छोटा सा ही था पर क्या पता यहां के पुलिस के हिसाब से बहुत पढ़ा हूं कि मुझे इतनी बड़ी जेल में भेजा गया है.

अमन की सोच का कोई नशा था ना कोई अंत कहीं से भी शुरू करें कहीं के कहीं पहुंचाता था फिर से उसका दिमाग उस लिखे हुए इंसान की तरफ चला गया वह ऐसे लेटा था मानो कोई शहंशाह आऊं या जेल का सही हो.

दोपहर हो रही थी खाने का समय हो चला था कि अमन ने देखा कि सब लोग उठकर लाइन में लग गए हैं पहले तो बैठा रहा पर एक साथी की इशारा करने पर वह भी उठा और लाइन के आखिर में खड़ा हो गया. कभी वह दादा किस्म के आदमी जो लेटा थाउठा और लाइन में सबसे आगे आकर खड़ा हो गया.

और सब लोग धीरे-धीरे पीछे हो गए नए की शक्ति गई अमन सबसे अंत में था वह देखता रहा फिर अचानक बोल उठा,

‘ आपको सबसे पीछे आना चाहिए आप आखिर में आए हैं?’

सॉरी लाइनर मन की ओर बढ़ गई सब हैरान थे यह नया कैदी जो अभी ही जेल में आया है आठ दिन से किसी ने उसकी शक्ल भी नहीं देखी थी आज ही वह बाहर आकर बैठा है इतनी हिम्मत कर रहा है कि दादा के लिए कुछ कहे वह दादा नामक व्यक्ति भी आधे में भी डाल पर उसकी तरफ देख रहे थे दादा के पास खड़े एक व्यक्ति ने पूछा,

‘ यह यहां का रूल है यह सबसे आगे खड़े होते हैं आगे कभी भी इस बात को यह सब मानते हैं .

तुम शायद नए आए हो इसीलिए तुम्हें नहीं पता पर यह यहां के दादा हैं यहां वह होता है जो यह कहते हैं खाना जब भी आता है लाइन में सबसे आगे इनका स्थान होता है? मान लो कि यह यही खड़े रहेंगे.

अमन ने सुना चुप रहा पर लाइन से निकल कर फिर से पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया उसे विरोध का यही तरीका लगा था या उससे लगा कि मैं लाइन में इतनी पीछे है कि बहुत समय लगेगा जब तक मैं है आगे पहुंचेगा पता नहीं तब तक खाने को कुछ बचेगा भी या नहीं अगर बचेगा तो वह अंत में जाकर ले लेगा यह सोच कर वह बैठा था इधर-उधर देख रहा था कि दादा किसम का व्यक्ति उनके सामने आ कर खड़ा हो गया उसने अपने हाथ कमर पर रखे हुए थे शेक पैर आगे एक पीछे था माध्य में सैकड़ों पल थे मानव से बहुत गुस्सा आ रहा है पर शांति से पूछा

क्या हुआ भाई खाना नहीं खाना.

जी मेरा नंबर तो आखिर में है इसीलिए मैं यहां आकर बैठ गयामुझे लगा जब सब लोग ले चुकेंगे तब मैं जाऊंगा और अपना खाना लिए लूंगा आप लोग सब पहले से यहां हैं इसलिए पहले आपका ही हक है.

मुझे कुछ पता नहीं था इसलिए मैंने यह बात कह दी माफ कीजिएगा.

राधा-कृष्ण के वह व्यक्ति दमन के बोलने के ढंग से समझ गए कि वह पढ़ा लिखा व्यक्ति है पता नहीं किस जुर्म में यहां आया है यह उसने कोई जोर की यादी है या नहीं अतः पूछा,

‘ क्या जरूर किया है भाई तुमने?

जी मुझे तो पता ही नहीं मैंने तो कुछ भी गलत नहीं किया मैं तो हिंदुस्तान से अपने अब्बा से मिलने आया हूं अब तो मिले नहीं अब वापस जाने की सोच रहा था तभी मुझे यहां पकड़ कर ले आया गया मुझे नहीं पता क्या गलत किया है या अनजाने में क्या हो गया है?

अच्छा. तुम तो पढ़े लिखे भी लगते हो कितना पढ़े हो?

जी मैंने m.a. के बाद mba भी किया है मुंबई में मेरी नौकरी लग गई है मुझे पहली तारीख को वहां जाकर ज्वाइन करना है टर पता नहीं मुझे कब छुटकारा मिलेगा.

अब सब खाना छोड़कर रावण के चारों तरफ थे सब सो रहे थे क्योंकि दादा उस में दिलचस्पी ले रहे थे इसलिए सब भी दिलचस्पी से सुन रहे थे.

सबको हैरानी थी इस बात पर विजय में है सभी कह दिया तो मारकाट मारपीट चोरी जकारिया खजनी यह किसी अन्य अपराध में जेल में आते हैं यह कैसा इंसान है जो बिना बात में जेल में लिया गया है सबसे ज्यादा हैरानी दादा की थी जिस ने कुछ किया हीतुझे में क्यों है?

दादा कोई प्रश्न पूछे हैं और कोई जवाब ना मिले यह तो हो ही नहीं सकता.

वहां से गश्त पर जाते हुए अफसर ने दादा की कही बात को सलाम दादा पास आए और कहने लगे.

ओ सर कैदी ने तो कुछ भी नहीं किया? और इसे क्यों लाया गया है?

पता नहीं अभी इसका कुछ खास पता नहीं चला बस साईं के दो लोग आए थे और इसे जेल में छोड़ गए.

दादा कुछ सोचते रहे सब से कहा चलो खाना खाओ आओ भाई तुम भी आओ मेरे पास आओ आओ हम लोग सब मिलकर खाना खाते हैं.

दादा ने उसे पकड़ कर उठाया अपने साथ ले चले पहले उसे खाना लिया खाना लिया सब हैरान थे सब कुछ समझ नहीं आ रहा था क्या खेल इसने कह दी मैं क्या खासियत है कि दादा उस पर मेहरबान हो गए हैं और क्यों.

खाना खत्म हो गया अब ज्यादा नहीं मन से कहा,

‘ इधर आओ मेरे पास बैठो तुम पढ़े-लिखे पढ़े-लिखे आदमी हो पर थोड़े कमजोर हो. यही तो कमजोरी होती हैडरपोक और कमजोर होते हैं. तुम भी ऐसे ही हो जानते हो यहां जितने लोग हैं वह सभी कत्ल और मारपीट करने वाले लोग हैं तुम इनके साथ कैसे रह पाओगे पर हैं तुम शक्ल अकल वाले लग रहे तुम्हें अपनी अब्बा से मिलना है ना और अपने घर भी वापस जाना है मेरा हाल है कि मैं तुम्हारे दोनों काम करवा सकता हूं तुझे मेरी बात माननी होगी बस.

जी जनाब क्या बात है क्या बात माननी होगी

वह समय आने पर बताऊंगा अभी कुछ नहीं अभी तुम जेल में रहते रहो अपना शरीर देखो कितना पतला देखना है थोड़ी मेहनत करो थोड़ा अपना वजन बढ़ाओ अच्छे से खाओ पियो और शरीर को भी ताकतवर बनाओ मुझे मालूम है कि तुम्हारे मन में बहुत ताकत है तुम बहुत कुछ सह सकते हो बहुत कुछ कर सकते हो अगर तुम्हें कोई सही रास्ता दिखा दे मैं दिखाऊंगा तो मैं वैसे ही रास्ता अगर मेरी बात मानते रहोगे यह याद रखना कि एक बार अगर फायदा कर लेते हो तो उससे बदलना नहीं.

अमन कुछ देख सोचता रहा था बोला.

अगर आप मेरी सहायता करेंगे तो मैं आपकी सारी बात मानूंगा.

उसे अब विश्वास हो चला था कि जरूर यह सब अल्लाह ने किया है अल्लाह नहीं दादा को भेजा है अल्लाह नहीं मुझे जेल में भेजा है शायद इसी तरह वह मुझे अब्बा से मिल पाएंगे और इसी तरह मैं घर भी जा पाऊंगा.

कुछ सोचते हुए अमन ने कहा,

‘ दादा क्या यहां से मैं अपने घर बैठे भेज सकता हूं घर पर मेरी मां और छोटी बहन है वह चिंता कर रहे होंगे मैंने उन्हें कुछ भी नहीं बताया बहुत दिन से फोन पर बात भी नहीं कि उन्हें कोई खबर नहीं थी आखिरी खबर यही है कि अब्बा अभी नहीं मिले हैं अब्बा से मिलकर मैं वापस आ जाऊंगा.

मैं उन्हें कुछ खबर पहुंचाना चाहता हूं कुछ पैसे भी पहुंचाना चाहता हूं शायद उन्हें जरूरत हो और ये भी बताना चाहता हूं कि मैं ठीक हूं यहां के लोग सब अच्छे हैं परवाहा करते हैं और ध्यान रखते हैं क्या मैं ऐसी चिट्ठी भेज पाऊंगा?

अमन के कंधे पर हाथ रखा तथा तथा पाया और कहा

‘ हां हां क्यों नहीं अब तुम मेरे साथ हो मैंने वादा किया है तुम्हारे लिए सब कुछ कर लूंगा अगर तुम मेरी बात मानोगे तो यह भी हो जाएगा तुम्हारे घर चिट्ठी भिजवा दूंगा तुम यही बातें लिख देना कुछ ज्यादा मत लिखना एक छोटी सी चिट्ठी जिसमें सिर्फ अपने ठीक-ठाक होने की बात हो ऊपर कोई यात्रा से ही होगा बस पता लिखकर मुझे दे देना मैं इंतजार कर दूंगा

आखिर दादा अमन से चाहते क्या है सब लोगों के मन में यही सवाल था सब लोग सोच रहे थे कुछ तो खास है अमन ने जो दादा उस पर इतने मेहरबान है उसका सब काम करने को तैयार है अब जेल में अमन के प्रति सब का व्यवहार बदल गया था जब उसकी इज्जत करता सब उससे आप करके बात करते सब उसको उसी तरह जानते जैसे दादा लोगों को बताना चाहते हो कि अमन उनका खास आदमी है सभी लोगों यह कैसाउसका उसी तरह याद मत कर आदर करें जिस तरह वह चाहते हैं

कुछ दिन के बाद से अमन के जिंदगी बदल गई जेल में रहते हुए भी वह जेल का कैदी ना रहा वह हाथ अपने हिसाब से रह सकता था सभी साथ के लोग उसका आदर करते हैं उसे इज्जत से बुलाते वह काम कर रहा है या नहीं या कुछ और कर रहा है कहानी सुन रहा है यह लोगों से बातचीत कर रहा है अब यह सब नोटिस नहीं किया जाता पर अमन की स्थिति फिर भी अजीब थी वह जेल में समय कैसे करते थे ना वह सिगरेट पीता है ना हा श्राद्ध ना कोई और गंदी आदत कुछ मीठी बतिस्ता है जब सब लोग अपने-अपने में खोए होते कोई शराब पी रहा होता कोई शराब ज्यादा पी कर्म इधर-उधर लौट रहा होता तब अमन चुपचाप बैठा था उन सब को देखता रहता उसकी है उसको यह बात समझ नहीं आती की जेल में भी यह सब क्यों है क्या यह जेल है भी या नहीं अगर है तो यह सब झूठ क्यों ऐसा सब क्यों हो रहा है क्यों होना चाहिए गेल ने तो कैदियों को मेहनत करके पैसा कमाना है उन्हें तो डिसिप्लिन में रहना है उन्हें कुछ भी हालत करने की इजाजत नहीं है बल्कि वह है जो गलत करके आए हैं उसे सुधारना है और यह तो सुधार का कुछ नहीं दिख रहा था मैं सुधार का कोई काम नहीं हो रहा था सब सिर्फ खेल बैठे बैठे बैठे खाना खाना एक दूसरे से झगड़ा करना एक दूसरे की बुराई और भलाई करना और शराब पीना या सिगरेट पीना यह कैसी जिए अमन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था तभी एक साथी वहां आया और बोला,

‘ ए भाई तुम क्या कर रहे हो तो ना तुम शराब पीते हो ना सिगरेट ना कोई गलत काम करते हो फिर जेल में वक्त कैसे बताओगे अगर यह भी नहीं करेंगे तो फिर कैसे जिएंगे जेल में जीना आसान तो नहीं है अपने घर को छोड़ कर अपने रिश्तेदारों को छोड़ कर अपने बच्चों और पत्नी को छोड़ कर अपने माता-पिता से दूर रह कर रहना कितना मुश्किल होता है यह शायद तुम नहीं जानते अगर जानते हो तो भी कुछ नहीं कर रहे हो कुछ तो करना पड़ेगा किसी बुराई के सहारे ही जिंदगी भी तेरी यह खेल है भाई जी यहां हकीकत का मतलब है दिमाग का गैप हो जाना दिल का टूट जाना भला टूटे मन और तन से बिगड़े दिमाग से कैसे कोई जी सकता है इसलिए तुम्हें कह रहा हूं के कुछ बुराई तो सीख लो----- अच्छा चलो अब मैं तुम्हें बताता हूं कि इस शनिवार आने वाला है उसके बाद इतवार इतवार को सब की छुट्टी होती है कोई अफसर जेल में नहीं आता किसी का दौरा नहीं होता है उस समय पर यहां कुछ लड़कियां नहीं जाती है कुछ अफसरों के लिए कुछ ज्यादा लोगों के लिए और कुछ हम लोगों के लिए बोलो तुम्हारे लिए भी इंतजार करूं किसी को यह तुम्हें अपने पसंद की कोई चाहिए तो दादा से कह दो दादा इंतजाम कर देंगे अगर बाहर जाना चाहते हो जेल के बाहर मेरा मतलब कुछ समय के लिए इधर-उधर घूमने तू भी दादा रात को इंतजाम कर देंगे तुम बाहर चले जाओगे और सुबह होने से पहले वापस आ जाओगे यह भी दादा कर सकते हैं ओके.

अमन सुनकर हैरान थे में हर तरह के मुजरिम थे बस उसकी कोठरी के बगल में एक और बुड़हर सा व्यक्ति रहता था जो सारा दिन कर रहा था नॉर्थ ईस्ट रहता था ना उसको चेक करता ना प्रबंध रहता है महा कोई जल्दी नहीं आता था सिर्फखाने के समय खाने की थाली एक छोटे से टूटे हुए हिस्से की तरफ से उसकी और किसका दी जाती थी एक डॉक्टर अपनी आता था जो उसे इंजेक्शन देता था जिसके कारण वह चुप रहता

इंजेक्शन का असर खत्म होने पर स्वच्छता चिल्लाता और शोर मचाता था सभी लोग उस के शोर से बहुत तंग थी किंतु दमन जाने क्यों उसकी तरफ खींचता चला जाना था उसने सोचा दादर से बात करता हूं शायद वह जिस कैदी से मिलवा सकें उसके मन में उसके आदि के प्रति बहुत सारा प्यार से प्यार जाग रहा था किसी और को कोई फर्क नहीं पड़ता था इंटू अमन उससे बहुत अपनापन महसूस करता था ईंट वह चाहता था कि इस कैदी को किसी हस्पताल में भेज दिया जाना चाहिए जो इतना दुख पा रहा है उसे जेल में क्यों भटका हुआ है मैं दादा से यही चाहता था कि दादा आप ने रसूल का इस्तेमाल करें और उसे अस्पताल भिजवा दें उसने सोचा अगली बार दादा से मिलूंगा तो उनसे बात करूंगा.

जिस तरह आठ दिन और बीत गए है उसके दादा से कोई बातचीत नहीं हुई जब जब दादा मिले बहुत से लोगों के साथ में गिरे हुए थे ऐसे में अमन की इच्छा ही नहीं हुई थी वह बात करें यह सोच रहा था कि दादा अकेले मिले तो वह उन से बातचीत करे एक दिन दादा मिल गए दादा अकेले थे के कुछ सोचते हुए चल रहे थे हमन उनके साथ साथ चलने लगा धागा ने पूछा,

‘ कुछ कहना चाहते हो?

‘ जी दादा दादा मुझे लगता है कि मैं सिर्फ एक मुस्लिम हूं मेरा कोई भविष्य है ही नहीं ना मैं अपने घरवालों से मिल सकता हूं ना घर जा सकता हूं अब्बा का पता लगा सकता हूं अब मैं क्या करूं और वह रहमान चाचा की लड़की जिसके बारे में मैंनेबताया था कि मैं उसका नाम भी नहीं जानता वह भी अपनी जान दे चुकी है यह भी एक बेचैनी का पारस है मेरे पास ऐसा लगता है जिंदा रहने के लिए कुछ नहीं बचा है मैं क्यों जी रहा हूं यह प्रश्न बार-बार मुझे मारता है?

‘ ओ दादा कुछ पल चुप रहे अमन के कहने का मतलब समझ ना चाह रहे थे उसे गहराई तक जानना चाह रहे थे कुछ सोचते हुए उन्होंने कहा,

‘ मुझे लगता है तुम्हारी बेचैनी का सबब कोई और है तुमने यहां पर एक बूढ़े आदमी की चीखें सुननी है कहा जाता है कि वह एक हिंदुस्तानी जासूस है ऐसा लगता है यह हिंदुस्तानियों ने ही उसे धोखा दिया है लोगों का ख्याल है कि हिंदुस्तानी लोग अपने ही लोगों को धोखा देते हैं ऐसा अक्सर करते हैं उस बुरे के पास जीने का कोई कारण नहीं है उससे कोई न मिलने आता है क्या वोट सकता है मैं वह खा सकता है वह सिर दर्द से करता रहता है फिर भी वह जनता है मर नहीं सकता और सच बताऊं तो शायद यह जिंदा रहने का भाव ही है जो उसे जिंदा रहता है वह भी कहता है कि मैं बेकसूर हूं अधिकतर मुजरिम यही कहते हैं हो सकता है वह भी तुम्हारी तरह बेकसूर हो या तुम भी उसकी तरह बेकसूर एक दिन तुम मुझसे मिलना तब तुम्हें पता चलेगा कि जिंदा रहना क्या होता है ना कोई मकसद होते हुए भी कोई जिंदा कैसे रह सकता है उसी तरह तुम्हें भी रहना होगा.’

अमन के मन में उसूलों से मिलने की कोई इच्छा नहीं थी पर फिर भी जाने किस बात से खींचा हुआ वह उससे मिलने को बेचैन हो उठा उसने दादा से कहा कि वह भी उससे मिलना चाहता है क्या वह उससे मिलवा सकते हैं दादा ने कोई जवाब नहीं दिया ऊपर फिर बोले,

‘ मैंने तुम्हारे बारे में बहुत सोचा मुझे लगता है कि तुम बेकसूर हो बलके लगता नहीं मैं जानता हूंइसलिए नहीं कि तुम कह रहे हो बलके मैंने अपने तरीके से पता लगाया है तुम पढ़े-लिखे हो मन से ताकतवर हो बहुत सी बातें जिंदगी से सीखी है तुम्हें अगर एक ट्रेनिंग और दे दी जाए तो तुम बहुत अच्छे बंदे बन सकते हो मैं चाहता हूं कि तुम्हें ट्रेनिंग दिलवाई जाए. मैं कौन कोशिश कि निकल निकलवाइएगा देखो खुदा की मर्जी अगर कुछ दिन के लिए मैं तुम्हें यहां से बाहर कर सकूं तो तुम एक आजाद पंछी की तरह होगी तुम वापस तो नहीं जा सकते पर तुम्हारे जीने का एक मकसद होगा तो सकता है तुम कुछ सीखो कुछ बनो और कुछ असली काम कर सकूं असली काम क्या है यह तुम्हें बाद में पता चलेगा.

अमन सोचता रहा कि ऐसी काम क्या है वह चौका उसने अपने भीतर कुछ गंदा सा दिया ऊपर मैं सही था या नहीं मैं नहीं जानता था उसने दादा सीधे पूछा,

‘ पर मैं जेल कैसे यह कैसे हो सकता है यह तो संभव ही नहीं है यहां तो रोज आज ही लगती है रोज गिनती होती है रोज नंबर बोले जाते हैं मेरा नंबर 11 है तो वह फिर से सुबह और शाम बोला जाएगा तब मैं पकड़ा जाऊंगा तब को पता लग जाएगा कि मैं जेल में नहीं हूं.

‘ हां यह तो है यह तो तुम ठीक कह रहे हो पर हम कुछ ऐसा इंतजाम करेंगे कि तुम बाहर गए होंगे और भीतर ही भीतर दिए.

चमन चुप-चाप दादा का चेहरा क्या कह रहे हैं यह कैसे हो सकता है उसकी शकल पर अनेक सवाल थे प्रश्नचिन्ह बने हुए नीचे वालों को देखकर दादा थोड़ा उसे हंसते बोले.

यह मुझ पर छोड़ दो यह सब मेरा काम है मैं कैसे करूंगाक्या करूंगा यह बताने से क्या फायदा पर चलो बता देता हूं इस दुनिया में बहुत से बेकार लोग हैं जिन्हें एक वक्त का खाना भी नहीं मिलता अगर उन्हें बताया जाए कि तुम्हें मुफ्त में खाना मिलेगा तो वह 11 नंबर बंद कर यहां जेल में आकर रह जाएगा और वक्त का खाना खाता रहेगा उसे तो बस इस बात से मतलब होगा की वह 11 नंबर होगा और उसे खाना यह सब तो मैंने नहीं सुना थामिल रहा है उसका मकसद ही जीने का यही है इसी तरह जिएगा यही करता हुआ मर जाएगा.’

दादा ने मुस्कुराते हुए कहा अमन हैरान परेशान उसकी समझ में नहीं आया कि यह कौन रोक है कैसे लोग हैं और यह खेल है मगर जल है तो यह कैसे यह है यहां क्या हो रहा है क्या-क्या नहीं हो रहा है इसे जेल कहा भी जाए या नहीं और मैं कहती हूं भी या नहीं अगर कहती हूं तो फिर जेल से कैसे निकल जाऊंगा पर यह भी अजीब बात है कि कोई मेरी जगह मेरा नंबर मेरा नाम सब कुछ ले लेगा और जेल काट लेगा और मैं बाहर मस्ती से घूमता रहूंगा. .इसका मतलब यह हुआ के बाहर है जो कुछ गलत होता रहता है वह जेल से

निकले हुए सभी जाने पहचाने बड़े ताकतवर लोग करते हैं उन्हें जेल में बंद कर दो तो भी क्या मैं तो निकल जाएंगे और जो चाहेंगे वह करेंगे मतलब यह कि इस संसार से यह बुरे काम बंद हुए ही नहीं सकते अत्याचार बंद होंगे नकत बंद होंगे अबे गुनाहों को सजा देनी बंद होगी नाम आदमी का यूं ही बिना बॉस बिना देश के मर जाना बंद होगा ना एक देश और दूसरे देश में होने वाली लड़ाइयां बंद होगी नहीं इंसानियत का कत्ल बंद होगा.

अमन की तो आंखें ही खुल गई यह हो क्या रहा है यह सब तो ना मैं जानता था ना मैंने किसी से सुना था ना मैंने पढ़ा था इसका मतलब इतना पढ़-लिख कर सब बेकार सिर्फ 15 दिन जेल में आना है दुनिया को जानने के लिए काफी था यानी ज्यादा मुझसे ज्यादा पढ़े-लिखे हैं राधा मुझसे ज्यादा जानते हैं तो फिर मेरा mba करने का क्या फायदा हुआ मेरा नौकरी करने का भी क्या लाभ होगा मैं इस संसार में आम आदमी की तरह रहता रहूंगा बिना कुछ जाने की क्या स्वच्छ है क्या झूठ क्या हालत क्या सही और अंत में मर जाऊंगा ना मुझे कोई जानता होगा ना मैं पहचानूंगा कैसे जिंदगी बिताते हैं क्या लूं मैं तो ऐसे ही बितानी की सोच रहा था और सोच रहा था कि मैं सफल इंसान हूं मैं जो चाहता हूं वही तो मुझे मिल रहा है यह तो अब नहीं मिले तो इतनी सारी बातें सामने आएंगे क्या यह रोशनी है जिसे सब कुछ खोल कर रख दिया है पर जेल में और रोशनी यह तो दो विरोधी चीजों में हुई जिन को मैं बुद्धू बना देख रहा हूं और समझने की कोशिश कर रहा हूं.

अमन की परेशानी यह थी इसके इतना पढ़-लिख कर बड़ी मूर्ख रहा उसे असलियत तो समझ ही नहीं आई उसे ताकत का मतलब भी नहीं समझ आया उसे कुछ पाने और खोने की परिभाषा समझ नहीं आएगी वह तो ने कौनसा अदनान सामी व्यक्ति रह गया और इसकी पढ़ाई लिखाई सब बेकार थी समझता रहे वह अपने आप को पढ़ा लिखा ज्ञानवान कर कहा असलियत कहीं और होती है यह असलियत है यह सच यह भी कोई बताएगा.

सोने का हार मन कोई हल नहीं था उसने सोचा अभी बार दादा से पूछूंगा दादा ही बताएंगे कि आखिर का असलियत में और सच में क्या अंतर है? ईंटो क्या ज्यादा कोई कोई बुला मौलवी ऋषि मुनि है जो जेल में रहकर भी बहुत से गुनाह करके भी बहुत सी जिंदगी का सच और असलियत जानते हैं क्योंकि संसार छोड़कर जाने वाले ज्ञानी मुनि भाई वह सब नहीं जानते हो संसार में रहकर बल्कि जेल में रहकर सैकड़ों गुनाह करके जो दादा कैसे व्यक्ति जानते हैं तो क्या दादा जेल में बैठकर भी राज्य करते हैं देश को चलाते हैं लोगों को बताते हैं कि क्या है और कैसे करना चाहिए क्या बे मुखिया हैं क्या भी साइट से भी ज्यादा ताकतवर है कौन है यह दादा कैसे दादा बने क्या करते हैं क्या जानते हैं और मुझे कहां ले कर जाएंगे मुझे क्या दिखाना चाहते हैं पर वह तो अलग बात है अभी तो मुझे उन बूढ़े व्यक्ति से जो बराबर की कोठी में रहते हैं जो हर वक्त चूसते हैं करते हैं उन से मिलना है उनसे मिलवा को देता था फिर सब ठीक है कैसे करेंगे यह उन्हें सोचना होगा मुझे यह सब छोड़ देना चाहिए.

उस बूढ़े आदमी की चीखें मन को बहुत बेचैन करती वह हमसे मिलने के लिए बेचैन रहता लेकिन उस रात ठीक है आना बंद हो गई जब कि अमन की मुझसे मिलने की इच्छा बहुत अधिक हो चुकी थी अब वह क्या करें अब वह उन पूरे बाबा से नहीं मिल सकता पता नहीं क्यों अमन को बार-बार अब्बा की याद आती है और वह अपने भीतर हो जाता है मैं जानना चाहता था कि यह बूढा आदमी उसके अब्बा को जानता है आ सकता है किसी जेल में उन्होंने देखा हो शायद यह भी एक कारण हो सकता है कि वह उन से मिलना चाहता था

दोपहर होफिर खाने का वक्त हो गया मैं जिस साथी के पास बैठा था उसका नाम करीम था करीम सबको कुछ ना कुछ बताता रहता मैं बहुत कुछ जानता था खास तौर पर जेल के कैदियों के बारे में . उस समय मैं हूं बूढ़े कराने वाले व्यक्ति पर तरस खा रहा था और कह रहा था,

अब तो उस बेचारे को छुटकारा मिलना चाहिए बहुत दर्द में जीने से क्या फायदा अब तो उसे मौत ही आ जानी चाहिए ऐसा लगता है उसके दिमाग की नसें फट गई है पता लगा है की उससे कुछ याद भी नहीं है इस कोठरी में मैं भी कुछ दिन रहा था तब वह मेरे साथ रहता था अचानक वह कहीं गया जब लौटकर आया तब से वह कर रहा रहा है उस के हालात बिगड़ने लगे अब तो वह लगातार दर्द से सीखता है उस कोठी के साथ रह पाना मुश्किल है उसे कहीं भेज क्यों नहीं दिया जाता जैसे अस्पताल सही या फिर वह मर जाता.'

करीम बताता रहा था कभी अमन ने बताया कि कल रात को उसके चीज की आवाज नहीं क्या वह कहीं भेज दिया गया है क्या नाम था बूढ़े बाबा का तुम जानते हो करीम?

बुरा लगा कि उसने दादा से बात क्यों की करीम ने कहा असल नाम तो नहीं पता परंतु सरकारी कागजों में उस का नाम उबर श्रद्धा बाबा रखा था लिखा था.

अमन की सांस रुक गई अब पता चला कि वह क्यों मुझ से मिलना चाहता था तो वह तो अब्बा से अब्बा की यह हालत कैसे किसने की वह मेरे पास इसी जेल में थे तू और मुझे पता ही नहीं लगा पर यह जरूर है कि मैं मेरा मन महसूस कर रहा था कि कहीं यह बात नहीं मैं उन से मिलना चाहता था पर वह यहां से ले जाए गए हैं.

अमन को बुरा लगा कि उसने दादा से बात क्यों की क्यों के बारे में पूछा यह शायद दादा कहीं किया धरा है क्योंकि उसने बात की थी दादा ने उनको भेजने का इंतजाम कर लिया है.

यह क्या हुआ है इतनी बड़ी गलती हुई है मुझसे मैं समझ भी रहा था कि कुछ तो है जो मुझे बूढ़े बाबा की ओर खींचता है मैं उनसे मिलना भी चाहता था और मैंने दादा से कहा भी था कि मैं उनसे मिलना चाहता हूं

किंतु दादा ने मेरी बात को समझा ही नहीं तब पता नहीं है मैं मुझसे क्या काम निकलवाना चाहते हैं रमन यह सब सोचता रहा और मन ही मन करता रहा कि उसे जेल में होते हुए भी अपने अब्बा को नहीं मिल पाया हूं कैसे माफ करूं खुद को मैं तो उन्हें हिंदुस्तानी जासूस के रूप में जानता था इसीलिए बहुत ध्यान नहीं दिया पर फिर भी ये भीतर कुछ था जो मुझे कुछ पूछ रहा था मैच क्यों नहीं समझ पाया की पुलिस कुछ भी कर सकती हैं. अब्बा के साथ ही कुछ ऐसा ही हुआ होगा जो मेरे साथ हुआ है शायद यहां जेल के अधिकारियों को भी पता चल गया होगा कि मैं अब को खोजना चाहता हूं और वह मेरे अब्बा है शायद इसलिए भी उन्हें मुझसे दूर कर दिया.

अमन के लिए यह और भी दुखद हो उठा कैंटीन की बात को ध्यान से सुनते हुए अमन उसे और और सुनाने को कहता रहा उसका घोड़े बाबा के बारे में ज्यादा ज्यादा जानना लोगों के लिए आश्चर्य बन रहा था पर वह चाहता था के करीम जितना हंगामा के बारे में जानता है वह सब बताएं आखिर उसने खुलेआम पूछ लिया कि क्या बूढ़े बाबा को सिर पर चोट लगी थी क्या कोई एक्सीडेंट हुआ था यहां जेल में हुआ था या बाहर>

उसको इतना जान लेने को चतुर देखकर करीम ने पूछा,

‘ क्यों भाई इतना सब क्यों जानना चाहते हो क्या बे तुम्हारे कुछ लगते थे.

अरे नहीं मैं तो उनसे मिला भी नहीं हूं यही बस उनकी कर आहट में अजीब सी कशिश की मैं खींचा चला जाता था उसकी से मिलने के लिए मुझे लगता था कि अगर मैं उनके पास जाऊं उनके सिर पर हाथ रखो तो शायद उन्हेंबस यही भावना थी जिसकी वजह से मैं उन से मिलना चाहता था या उनके बारे में जानना चाहता था.

उसी में होकर भी वह अब्बा से नहीं मिल पाया इसका उसे बेहद अफसोस तो वह सोच रहा था शायद अब कभी अब्बा से मिल पाएगा या नहीं और नहीं मिल पाया तो क्या खुद को माफ कर पाएगा पर वह करता भी क्या लोगों ने कहा था कि वह एक हिंदुस्तानी जासूस है पर पता नहीं शायद अब्बा को हिंदुस्तानी ही माना गया होगा क्योंकि वह हिंदुस्तान जा रहे थे और वह क्या कर सकता है कुछ भी तो नहीं यह जान कर भी और सोच कर भी अब अमन धीरे-धीरे जेल के माहौल में ढूंढने लगा उसे जेल में आए सभी कैदियों से अब नफरत नहीं हो रही थी लग रहा था हर किसी के कैदी बन जाने के पीछे कोई कारण है और वह कारण परिस्थिति वश हो जाता है वह भी खुद भी तो किसी कारणवश यहां गया है अब अगर मैं है किसी गुंडे में बदल जाए तो क्या खास बात यानी इंसान के बस में कुछ नहीं है जो कुछ होता है वह कोई और करवाता है वह तो मात्र कठपुतली है जिन्हें किसी को जिन्हें कोई पकड़ कर चलाता रहता है और वह वह करवा देता है जो वह नहीं करना चाहते कौन कहेगा जेल में आकर रहना कौन चाहेगा अपने माथे पर किसी की हत्या का

चोरी का या बुरे काम का कलंक लगवाना सब हो जाता है अचानक से बिना सोचते हुए यह सोचकर भी होता हो तो भी तो कोई उसके भीतर यह सब चीजे हैं पैदा कर देता है तभी तो वह व्यक्ति बुरा बन जाता है या नहीं हम पैदा सही होते हैं ठीक होते हैं अच्छे होते हैं रूम पर धीरे-धीरे यह संसार संसार के कारनामें संसार की परिस्थितियां हमारे साथी दोस्त सभी लोग मिलकर कुछ ऐसा कर देते हैं कि हमें बुरा आदमी बना देते हैं.

नमन सोचता रहता इसका मतलब कभी भी किसी बुरे व्यक्ति को बुरा नहीं कहना चाहिए क्योंकि बुरा वह है नहीं उसे बना दिया गया है यही देखो कि अगर मैं जेल से बाहर निकल लूंगा कभी किसी तरह तो लोग मुझे बुरा ही समझेंगे क्योंकि मैं जेल में रह कर आया हूं जत की जेल में जाना मेरी मजबूरी थी किसी और का किया धरा था जिसे मैं भुगत रहा था जाने कितने लोग होंगे यहां पर भी जो किसी के कारण यहां ला दिए गए होंगे अब अगर दादा कहते हैं कि मेरी जगह पर कोई और सजा काट लेगा और मैं बाहर जाकर कुछ भी और कर सकता हूंबन सकता हूं तो इसका मतलब है सजा काटने वाला तो बुरा हो गया उसे तो बुरा बना दिया गया मैं सजा काट कर निकलेगा तो क्या कहलाएगा.

कितना भी सोचे सोच का कोई अंत नहीं था.

अमन को लग रहा था कि गेल एक अनुभव स्थल है यहां आकर उसे स्वर्ग के लोगों का अनुभव भी करना चाहिए उसे दादा से मिलकर यह भी पता चला साईं जैसे ताकतवर सभी जगह फैले हुए हैं या नहीं हम कितना भी आगे बढ़ गए हो कितना भी स्वंय बन गए हो हमें अभी भी कोई जानवर है जिनकी राजनीति ही है की हर ताकत अपने से कम ताकतवर को इस्माल करेगा अपने तरीके से जैसा हो चाहता है अभी तक यह संसार सिर्फ ताकतवर होता है अब यह ताकत शारीरिक भी हो सकती है हत्यारों के भी हो सकती है और पैसे की भी हो सकती है यह तीनों ही दे चीजें हैं जो इंसान को ताकत देती हैं और ताकत इंसान को बड़ा बना देता है तो क्या सब बातें वह बेकार है जो हमने कहती थी यह पढ़ना-लिखना काम करना एक अच्छी जिंदगी बिताना सच्चाई का रास्ता लेना दूसरों की भलाई करना यह सब चीज है बेकार की हैं इनका कोई मतलब नहीं संसार में यह नीति नहीं चलती है अगर कोई चलती है तो वह है ताकत का राज यानी कुल मिलाकर राजनीति यही है नीति भी यही है समाजशास्त्र भी यही है और विज्ञान भी यही है.

अमन की आंखें और दिमाग खुल रही थी यह बार-बार रहीम के पास जाता और कभी मनोवैज्ञानिक बनके कभी अन्य कैदियों की बात करते हुए बीच में उसके भी पर आ जाता जिसके सिर में चोट लगी थी और जो उसे अब्बा जैसे लगता था यह हमको यह सोचने देना नहीं चाहता था कि वह उस कैदी में ज्यादा दिलचस्पी ले रहा है जैनियों की आम इतिहास पर बात करते हुए बात करते हुए उनके बारे में उनके द्वारा किए गए गुनाह के बारे में जानते हुए गुनाह करने का कारण उसके हुए गए धीरे-धीरे बात-बात में फिर उस गधी पर आता जो उसे अपने अब बालक देते. देती हो

देते यह वह जानने भी नहीं देना चाहता था कि वह अब्बा की खोज में है ना ही वह अपने बारे में बहुत अधिक बताना चाहता था पर अब जेल के कवियों के बारे में उसके एजेंसिस भी कहीं ज्यादा हो गई थी वह जड़ तक जाना चाह रहा था आकर कोई खोने क्यों बन जाता है कोई चोर क्यों बन जाता है या कोई डाका जमी क्यों करता है यह औरतें क्या गुनाह करती है क्यों करती है कि यहां आ जाती है बातचीत मैं ही उसे उस छोटे बच्चे के बारे में पता चला जो अभी शायद 16 साल का ही था उसने उसूल करने के बाद इंजीनियरिंग में दाखिला लिया था वह जेल में लाया गया क्यों आखिर क्यों इस छोटे बच्चे ने क्या किया होगा रहीम से बातचीत करते हुए अमन ने अपनी चिंता जाहिर की. ऐसा लग रहा था कि नहीं जरूर कुछ पढ़ा लिखा है जरूर ही वह जेल के कैदियों के बारे में अच्छी जानकारी इकट्ठा करता है क्यों शायद वह कोई किताब लिखना चाहता होगा मैं भी जेल से निकलकर एक किताब जरूर लिखूंगा जिसमें जेल की सही स्थिति जेल के कैदियों की सही हालत और जेल के कैदियों की इस मजबूरी का वर्णन होगा अमन सोचता रहता और रहीम से बातचीत करता रहता है वह छोटे बच्चे के बारे में रहीम ने बताया था कि वह अभी अभी स्कूल से निकलकर इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लेकर गया था वहां उसकी रैगिंग हुई जो एक आम बात है और वह लेकिन इस हद तक थी कि वह बच्चा मानसिक तौर पर बेचैन हो गया हालांकि वह मरने की सोचता रहा पर मरने की कोई योजना नहीं बनाई थी और उसके सहयोग पीयू ने जो उसकी रेगन कर रहे थे उन लोगों ने एक सुसाइड नोट लिखा उसके कमरे में रख दिया और अपने सीनियर स्कूल जाकर खबर कर दी प्रिंसिपल से लेकर सभी प्रोफेसर तक कमरे में गए नोट देखा और उसे बेहोश पाया लगा शायद उसने कोई दवाई ली है यह जांच किसी ने नहीं की उसने दवाई ली थी या नहीं मैं बेहोश किया था बस पुलिस को बताया गया पुलिस आई और उसे जेल में डाल दिया वह बच्चा अपने एग्जाम की तैयारी महा जेल में रहकर ही करता रहा था कि वह जब छोटे कारण सही पता चले तो वह जाकर परीक्षा दे सके पर उसके सेल के दादा रुमा लोगों ने उसका गलत इस्तेमाल करने का सोचा मैं छोटा बच्चा था अभी अभी कोमल था मन से भी और तन से भी पर यह कहते लोग सगी मन और तन से पक चुके थे किसी तरह के गलत काम में ने उन्हें कोई शर्म नहीं आती थी उन्होंने उस बच्चे को लड़की की तरह इस्तेमाल करने का सोचा अब जेल में हमेशाफोन मिल सकती उनके घरवाले सब बाहर थी उनकी पत्नियां दूर थी वह सब के सब किसी ने किसी कमी से जूझ रहे थे सब जानवर में बदल गए थे उन्हें सिर्फ सेक्स से मतलब था और उन्होंने उस बच्चे का इस्तेमाल उसी के लिए करना शुरू कर दिया उस कमरे में रहने वाले आठ लोग और उसके एक बच्चे का जो सिर्फ 16 साल का था उसका दुरूपयोग बनाकर वह कहां तक संहिता कहीं तक सेहत आता है वह इतना सहन गया कि चुप हो गया सारा दिन पागलों की तरह इधर-उधर देखता रहता मानव में जिंदा ना होकर इलाज है और उस लाश का दुरुपयोग जो चाहता कैसे करता है रहीम ने उस लड़के के साथ कुछ वक्त बिताया था मैं उसी के कमरे में रह रहा था पर वहां के दादा रुमाल लोगों की हरकतें देख कर वह इतना घबराया की उसने दादा से रिक्वेस्ट की कि नहीं कि मुझे इस साल से निभा दिया जाए उसके दादा को

बताया भी था कि क्या हो रहा है परदादा का अपना तरीका था वह सभी कैदियों के बीच में नहीं पड़ना चाहते थे उन्होंने कुछ नहीं किया वह जानते थे यह कुछ हो ही नहीं सकता मैं लड़का आज नहीं तो कल पर ही जाएगा मौत ही उसका छुटकारा है मौत ही उसे छुटकारा दिलाएगी और हुआ भी यह ही कह दे कह दे रहे दुर्वासा हो गया अमन तू मानव सन्नाटे में आ गया उसका तो सारा शरीर सुन्न हो गया क्या अंदर क्या बाहर जेल के बाहर भी कोई बचाव का रास्ता नहीं है वह एक बड़ी की है जिसमें आप समझते रहते हैं कि आप आ सकते हैं आप अपनी मर्जी से जी रहे हैं पर नहीं ऐसा नहीं है उस बड़ी जेल में भी तरह-तरह के गलत काम होते रहते हैं और यहां इस जेल में जिसे मैं छोटा तो नहीं मानता लेकिन बहुत ही गलत काम होते हैं तो क्या हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जो गलतियां पालते हैं गलतियां करता है जानबूझकर और उन गलतियों में ही हम एक आद अच्छा काम करके यह समस्या रहते हैं कि हम इंसान हैं हम सही हैं हम कुछ गलत नहीं कर रहे हम जी रहे हैं पर सही मायने में हम जी ही कहां रहे हो.

दादा ने अमन को कहा था कि वह उससे यहां से बाहर भेज देंगे पर अमन अब बाहर नहीं जाना चाहता था वह जेल के कैदियों के बारे में जानना चाहता था उनकी असलियत पहचानना चाहता था मैं जानना चाहता था कि कोई क्यों गुनहगार बन जाता है क्या कोई गुनाह था उसके भीतर छिपा होता है उसके चारों और का माहौल उसे गुनेहगार बना देता है फिर एक दिन रही हमसे बात करते-करते उसे पता चला हिंदुस्तानी आदमी है जो हिंदुस्तान जाना चाहता था या जा रहा था उसके साथ बहुत खुश हुआ उसने बताया था कि वह यहां काम करता है पर यह नहीं बताया था कि क्या काम करता है यहां कमाकर वह पैसे हिंदूस्तान अपने परिवार के पास भेजता है यह बताया था उसने अमन जानना चाहता था कि आखिर वह काम क्या करता था.

परंतु रहीम को यह नहीं पता था शायद उसने पूछा ही नहीं था यह जरूरी है नहीं समझा था.

यह तो तो स्पष्ट हो चला था कि वह उसके अब्बा ही थे वह और बहुत सारी बातें उनके बारे में जानना चाहता था जो अब्बा ने अब्बा ने उसे बताई थी . किंतु रहीम को कुछ खास ध्यान नहीं आ रहा था उसे जितना जब जब याद आता था यह बता देता था उधर अमन भी यह नहीं बताना चाहता था कि उसकी उसके दिल में हाथ दिलचस्पी क्यों है पर इस समय तो अमन और कैदियों के बारे में भी जानना चाह रहा था.

उस दिन हम पेड़ के नीचे बैठे थे कवि एक नया चेहरा दिखाई दिया उसे देखा तो था सिर्फ इस लाइन में जब हाजिरी ली जाती थी ऊपर बहुत ध्यान से नहीं देखा था कुछ खास बात नहीं थी उसमें तेजस्वी भी जाती उस दिन वह अचानक थे धूप में आकर पेड़ के नीचे बैठ गया रहीम भी बाहर आ गया था मैंने ही उससे पूछा कहो भाई आज बहुत दिन बाद बाहर धूप में आकर बैठे हो आ जाया करो बाहर रहोगे तो अच्छा लगेगा कुछ दिमाग खुलेगा वह चुप-चाप सुनता रहा जैसे उसने सुना ही नहीं है कुछ कहा नहीं है उसमें उसका मन ही नहीं था बोलने का फिर धीरे-धीरे खाने का समय हुआ और हम सब उठे और खाना लेने चले गए कभी तक सब लोग दादा के अनुसार चलते थे क्योंकि दादा पहले खाना मुझे पकड़ाते और बाद में खोज लेते उसके बाद सारे लाइन आ जाता था वह चल ही रहा था जो खाते हो मैंने भी कुछ नहीं था दादा हालांकि मेरी तरफ देख रहे थे मैं मुस्कुरा भर दिया था मैंने उन्हें दोबारा याद नहीं दिलाया था कि मुझे जेल से बाहर भेजना है तो ज्यादा खुद ही पूछ बैठा.

तो क्या सोचा तुमने तुम जेल के बाहर जाओगे और मैं जो काम तुमसे करवाना चाहता हूं वह करोगे क्या तुम तैयार हो?

थोड़ी देर तो मन चुप रहा मैं समझ नहीं रहा था उससे क्या काम करवाया जाएगा परदादा कर कहना वाली नहींमैं उनकी बातें सुनकर मुझे बहुत प्रभावित दादा उसे जेल से बाहर निकाल कर किसी काम के लिए तैयार करना चाहते हैं भेजना चाहते हैं और काम हो जाने के बाद वह उसे हिंदुस्तान वापिस अपनी फैमिली से मिलने भेज देंगे यह बात बार-बार अमन को याद आती है और उसे लगता है कि उसे दादा की बात मान कर यहां से चले जाना चाहिए परंतु इस समय परंतु धीरे-धीरे जो दिलचस्पी उसकी जेल के कुल कैदियों में हुई थी वह उसे भी नहीं छोड़ना चाहता था.

उस दिन उसके दिल में दिलचस्पी इतनी ज्यादा चाहती कि मैं उसके बारे में जानने के लिए बेचैन हो उठा मेरा मन भी अजीब बेचैन किसका है किसी भी चीज को जानने में जुट जाता है तो फिर उसी में लग जाता है अब अब्बा को ढूंढने आया था भला उन्हें ढूंढो नाइस सब से क्या मतलब है कि मैं इधर-उधर की बातें जानना चाहता हूं पहले तो जेल में आना ही है एक बहुत बड़ा हादसा है जिसका मैं शिकार हो गया हूं बिना बात हुआ कारण नहीं पर वह कौन समझेगा कोई नहीं कौन समझता है किसी के भीतर के जख्मों को कॉल दे पाता है कौन उनका दर्द महसूस कर पाता है कोई नहीं मैं समझ गया हूं कि मैं इस संसार और में अपने भीतर से अपनी बहार से अपनी मां से अपने गम से सब में अकेला हूं कोई मेरे साथ नहीं है बोलकर कोई किसी के साथ होता ही नहीं है जब अकेले ही आते हैं सोचते रहते हैं कि मैं यहां पर बहुत होकर साथ हैं पर होते हैं भरी प्यार में अकेले ऐसे ही मैं भी हूं पर यह कह दी यह कह दी भी मुझे आकर्षित क्यों कर रहा है शायद इसलिए आप इसके चेहरे पर फिर कोई खास बात है इस साल में रहने वाले अगर आप बात है कराने

वाले अगर अब बात है तो तभी तो मैं उन की ओर आकर्षित हुआ था या यूं ही अभी भी स्पष्ट नहीं है की वह कौन था मेरा दिल नहीं मानता कि अब्बा को कोई कैद कर सकता है और कोई क्यों करेगा उनका किसी बात से कोई मतलब ही नहीं था मैं तो एक सीधे साधे साधारण से पाकिस्तान में काम करके अपने परिवार को पालने वाले इंसान थे भला उनके साथ ऐसा क्यों होना चाहिए कि वह जेल में आए और फिर इस तरह घायल भी हो और फिर इतना दर्द नहीं क्यों क्यों शहर चाहिए उन्हें यह सब कुछ नहीं मैं अब्बा नहीं बोल सकते एक ही नाम के भी तो कहीं लोग होते हैं मला हां से हो सकती हैं उनका इस तरह के काम से कोई मतलब ही नहीं था और फिर मेरी अब मेरी अब बात इतने प्यारे इतने ममता मैं इतने अच्छे व्यक्ति थे कि मैं सोच भी नहीं सकता की जेल में पड़े हुए करता हुआ वह व्यक्ति मेरा अंधा हो सकता है अच्छा छोड़ो अब होते तो मुझे मिल ही लेते पर अब ढूंढता हूं तो जाऊंगा दादा से पूछूंगा कभी कि अब्बा कहां होगे उन्हें में कहां-कहां खुश हूं वह तो बाद की बात है परंतु इस कैदी के बारे में बहुत कुछ जानना है मैं रहीम को कहना चाहता था कि वह इस कैदी के बारे में जाने दे कुछ सच जानकर मुझे बताएं आखिर यह इतना चुप पासा इतना सीधा-साधा सा यह व्यक्ति क्या कर क्या होगा कि उसे जेल में डाल दिया गया वह शायद गुनाहगार ही नहीं है तभी तो तभी तो चुप है मेरे साथ भी यही तो हुआ था क्योंकि मैं गुनहगार नहीं था इसलिए मेरा मन ही नहीं होता था की मैं और लोगों से बात करूं या उनके बारे में जान वह तो दादा ने मुझे अपनी ओर खींच लिया और और इस तरह में जेल के इस माहौल में जस होता गया है

तो फिर एक दिन रहीम ने में उस चुप रहने वाले व्यक्ति के बारे में बातचीत शुरू कर दिया और बताया कि वह एक हिंदुस्तानी है उन बूढ़े बाबा के बारे में तो पक्का नहीं पता था कि वह हिंदुस्तानी है या पाकिस्तानी में नौकरी तो हिंदू पाकिस्तान में ही कर रहे थे अतः पाकिस्तानी भी हो सकते हैं फिर उनके नाम के आगे हाथ भी लगा था तो मैं तो पाकिस्तानी ही हुए ना परंतु यह व्यक्ति तो हिंदुस्तानी है हिंदुस्तान की सरहद नहीं पकड़ा गया है वह हिंदुस्तान मैं सफर कर रहा था कि पकड़ा गया मैं जिस ट्रेन में सफ़र कर रहा था उसी ट्रेन में सबसे पीछे के डिब्बे में कोई कोई बहुत लगा था यह सूचना जब पुलिस को मिली तो ट्रेन वर्धा स्टेशन से पहले ही रुकवा दी गई और चैटिंग होने लगी जब से पिछले डिब्बे में बंद मिल गया फटने तो नहीं पाया था ब्लास्ट तो नहीं हुआ था लेकिन जब चैटिंग हुई तो यह है व्यक्ति मिला जिसे जिस पर शक किया गया क्यों शक हुआ यह तो नहीं पता इसका नाम इसका नाम भला सा शायद जानिफ था अब जानिब नाम किसी मुसलमान का हो सकता है यह हिंदू का कौन जाने जिसने अपनी जात इंसानियत बताई थी और कुछ कहने को तैयार ही नहीं था पुलिस पता नहीं क्यों इस जिस पर शक करती हुई थी से पकड़ ले गई अब है अकड़ा गया पुलिस के हथकंडे चढ़ गए एक अजीब बात और बतानी थी इस व्यक्ति ने वह यह किसके साथ बैठा हुआ व्यक्ति जो इसका दोस्त बन गया था उसी ने इसके बारे मेंऔर यह भी जाना के लिए है

पाकिस्तान में नौकरी करता है आजादी से पहले से कर रहा है अब वह इतने दिन के बाद अपनी नौकरी करने जिससे जा रहा है उस दोस्त ने इसका फायदा उठाया और इसे पाकिस्तानी करा दे दिया और यह भी बता दिया की जिस में सब कुछ नाम वगैरह सब बदला हुआ है मैं जो कुछ कह रहा है वह सब झूठ है यह बंब लगाने के पीछे इसे ही का हाथ है आया इसके साथ और वह भी होंगे जो इसका साथ दे रहे होंगे यह सब इन्हीं लोगों का किया धरा है कि हिंदुस्तान में कुछ नहीं होता है तो उसके लिए यह मुसलमान लोग ही जिम्मेदार होते हैं उस पर यह सब कहने से यह तो लग रहा था की वह पाकिस्तान का विरोधी है वह मुसलमानों को पसंद नहीं करता लेकिन उसने जानिब का नाम क्यों लिया उसमें उस से क्या दुश्मनी थी यह बताना तो मुश्किल था पर मुसीबत बेचारे जाने की आ गई है उसे पकड़ लिया गया उसे दिल्ली ले गए और दिल्ली में उस पर मुकदमा हुआ बार-बार उसे अपने साथियों का नाम पूछा गया वह एक ही बात कहता रहा मुझे कुछ नहीं मालूम मैंने कुछ नहीं किया है मैं तो सिर्फ अपनी नौकरी पर जा रहा था क्योंकि इतने महीने से खाली घर में बैठा था अब बैठे-बैठे तंग आ गया था मैंने हिंदुस्तान में नौकरी खोजने की कोशिश भी थिएटर अंतु जल्दी मिलने की कोई संभावना नहीं नजर आ रही थी इसलिए मैं वापिस अपने पुरानी नौकरी पर जा रहा हूं.

आखिर अच्छा समय आया जाने पर लगे सारे जान हटा दिए गए ऊपर से हुक्म आया कि उसे छोड़ दिया जाए लेकिन पुलिस वालों का क्या उनके भी धरती संवेदना शायद मर ही झुकती है तभी तो दे कोई भी व्यक्ति को पकड़ लेते हैं और और उसे अपना शिकार बना लेते हैं शायद उनके भीतर पुलिस का काम करते-करते शिकारी वृद्धि ज्यादा हो जाती है उन्हें शिकार को कोच में काटने तोड़ने है और मारने में मजा नहीं लगता है तभी तो उन्होंने जाने तो पुलिस वैन में चढ़ाया और कही बहुत दूर जंगल में है लेकर चले गए बिल्कुल अकेला रास्ता कोई भी देश नहीं रहा था और कोई राह भी नजर नहीं आ रही थी वहां जाकर उसे छोड़ दिया ना पानी न खाना देना जाने की कोई जगह नंगे पांव जाने उस रास्ते पर छोड़ कर वह चल दिए और कह दिया.

जाओ अब तुम जहां तक जीवित रहो गे म ह तक चले जाओगे जाओ हो सकता है तुम पाकिस्तान पहुंच ही जाओ अपनी नौकरी पर चले जाओ और नौकरी शुरू कर दो और अब तुम्हारीक्या है हम नहीं जानते हमने तुम्हें ईश्वर पर छोड़ दिया है.

जानी चलता रहा इन चारों तरफ बंदर था सूखे पढ़ते बहुत दूर तक कुछ दिखाई नहीं दे रहा था सन्नाटा था अकेलापन था उसे प्यास लगी पर कुछ नहीं देखा तो कुछ नहीं मिला पाने की एक बूंद तक नहीं दिख रही थी प्यासा भूखा वह चलता रहा पता नहीं कितना चला कि उसे दूर कहीं एक रोशनी दिखाई दिए उस रोशनी की तरफ देखता हुआ तू उसे ही अपना दिया बनाता हुआ उसी को अपना नक्शा बता हुआ वह इस सोचने की तरफ चल दिया.

सचमुच ईश्वर उसके साथ था क्योंकि वह एक छोटा सा गांव था जहां पर 1012 घर थी उस गांव में कुल मिलाकर 4250 लोग रहते थे मानव है एक छोटा सा कबीला हो दिल जहां पर यह लोग इकट्ठे होकर रहने आ गए हैं पर यह छोटा सा गांव भी जाने को एक बहुत बड़ा जीवनदान जैसा लगा है उसने वहां रुक कर मन सिरहाने की प्रार्थना की पानी मिला पानी पीकर वह वही बाहर किसी झोपड़ी के बाहर लेट गया और सो गया उसे नहीं पता कब तक मेरे सूट आ रहा शायद सांझ हो गई सोते-सोते उसे नहीं पता अगली सुबह भी हो गई उसे नहीं पता जब मैं उठा तो उसके सिर के ऊपर एक गांव का व्यक्ति झुका हुआ था उस गांव वाले व्यक्ति ने उससे पूछा कि भाई कुछ खाओगे.

अब उसे लगा कि हां सचमुच उसे भूख लगी है अगर वह कुछ खाएगा नहीं तो शायद उठी नहीं पाएगा आगे जा ही नहीं पाएगा उसकी हिम्मत जवाब दे चुकी थी मिल गई उसने तो यह सोचा था कि अगर यहीं रूक जाएगा यही इन लोगों के साथ कुछ करने लगेगा कहीं नहीं जाएगा उसे अपनी नौकरी पर वापस नहीं जाना है इसे छोड़ देना है किसी चीज का कोई मतलब नहीं है पता नहीं जिंदगी में क्या लिखा होता है कब क्या हो जाता है?

यह बंजारों का परिवार था जिसके मुखिया मेरे पास खड़ा था असल में यह गांव भी बंजारों का ही था यहां आकर सबके सब अपना सारा घर समेट कर इन झोपड़ियों में रुक जाते कुछ दिन रहते हैं और आगे चल देते उसका सौभाग्य था कि वहां उस रेगिस्तान में भी वह लोग मिल गए उन्होंने उसे उठाया खाना खिलाया और घर के भीतर ले गए आ सकी वह एक टूटी-फूटी ca झोंपड़ी थी जिसने से धूप के अंदर झांक रही थी रेट भी भी करा रही थी गर्मी भी पूरी थी फिर भी जाने दो अच्छा लगा अच्छा तो फास्ट और पर इसलिए भी लगा की कोई इंसान तो है जो इंसानियत के नाते उसकी देखभाल कर रहा है अब शायद वह बच जाएगा खाना खाने के बाद उसने पानी पिया लखनौर उन लोगों से इजाजत लेकर आगे चलने लगा ऊंचे पूछा कि कौन से रास्ते पर उसे जाना चाहिए खाना खाने के बाद उसे कुछ थकावट भी होने लगी थी परंतु वह लगातार चलता रहा उसे नहीं पता था कि वह कहां जा रहा है किस दिशा में जा रहा है और कहां पहुंचेगा जाने कितने दिन कितनी रातें इसी तरह वह चलता रहा बंजारों ने उसके साथ कुछ रोटी बांधी थी कुछ पानी भी दे दिया था उसी के सहारे वह धीरे-धीरे चलता रहा यह सोच कर कि या तो वापस हिंदुस्तान पहुंचाएगा या पाकिस्तान या फिर किसी और देश कहीं भी पहुंचना किसी भी देश पहुंचना उसका मकसद था नहीं जा कर वह सोचेगा कि उसे क्या करना है यह भाग्य था या दुर्भाग्य मैं नहीं जानता अचानक उसने देखा है कि पाकिस्तान की सीमा वाला गांव देख रहा है उसे लगा तो फिर यह पाकिस्तान पहुंच गया थोड़ी दूर पर उसे एक गांव दिखाई दिया एक गांव दिखाई दिया जहां के लोगों ने फिर उससे फिर उससे नीचे फ्रेंड से बात की उसे खाना दिया सोने का इंतजाम किया . और उसने आराम किया अगले दिन सुबह मैं उठा और कराची का रास्ता मिले हुए जाने लगा व गांव वालों ने उसके लिए कुछ रोटी और कुछ पाने का इंतजाम किया और उसे रास्ता समझाते हुए भेज दिया सफर और भी काफी लंबा था उसे काफी चलना था थकावट भी बहुत हो

रही थी जर्मन में उत्साह भी नहीं बचा था उसे लाभ उठा था कि सब कुछ गलत हो रहा है और सचमुच सब कुछ गलत भी हो रहा था तभी उसे पीछे दिखाई दिया कि कोई मोटरकार चली आ रही है वह जीत थी जिसमें कुछ पुलिसवाले बैठे थे मैं फिर से पुलिसवालों को देखकर डर गया उसने सोचा कि कहीं यह पुलिस वाले अब मुझे जिस रास्ते में आया हूं उससे उल्टी तरह ना ले जाकर छोड़ दे तब तू मुझे दूसरी तरफ भी इतना ही चलना पड़ेगा पता नहीं क्या होगा अब वह सोचने के लायक भी ना रह गया था उसने अपने आपको खुदा के लिए छोड़ दिया था खुदा जो चाहे वही होगा जीत में कुछ पाकिस्तानी पुलिसवाले बैठी थी उन्होंने जो भर्ती पहन रखी थी उसी से पता चल रहा था कि भी पाकिस्तानी हैं उन्होंने जीरो कि रूके अजनबी के बारे में पूछा और जब जान इतने अपना मकसद बताया तो वह कह रहे थे चलो हमारे साथ चलो हम कराची ही जा रहे हैं हम तुझे वहीं छोड़ देंगे जान इतने बहुत-बहुत धन्यवाद कहते हुए शुक्रिया कहते हुए जीतने कदम रखा गया खुदा के सामने झुक गया या भगवान के सामने उसने कुछ नहीं सोचा बस मौके पर हाथ रखा और अपनी किस्मत को सलाम किया.

मिलिट्री पुलिस मिलिट्री पुलिस थाना चिनहट इंसानों की बहुत पहचानती सच और झूठ का पता करना उनका उनकी ड्यूटी थी उन्होंने जानिब से सब कुछ पूछा यह जानने के लिए कि वह कितना स्वच्छ बोल रहा है और कितनागलत? पुलिस उससे पूछताछ करती रही उसके चेहरे को पढ़ती रही उस ने मान लिया की वह पाकिस्तानी नहीं है यूं तो सचमुच ही जाने पाकिस्तान ही नहीं था किंतु मैं पाकिस्तान की ओर जा रहा था तब नौकरी करना एक बहाना भी हो सकता है जरूर यह कोई भी दिया है जो देश बदल कर अपने आप को हिंदुस्तानी कहकर नौकरी का सहारा लेकर पाकिस्तान में घुसने की कोशिश कर रहा है और कुछ ना कुछ गड़बड़ जरूरत जलाएगा यह हिंदुस्तानी जासूस है यह बात सोचकर पुलिस वाले सतर्क हो गए थे उन्होंने कराची पहुंचते ही उसे वहां की जेल में भेज दिया और इस प्रकार जेल वाले लोग उस से स्वच्छ सुगंध पाने के चक्कर में बहुत कुछ विचार ही करने लगे तरह-तरह के हथकंडे इस्तेमाल करने लगे शायद यही कारण रहा होगा कि यह बूढ़ा व्यक्ति चुप सा रहने की कोशिश करता हुआ अपने गम को भुलाना चाहता होगा.

अमन के लिए यह सब कहानियां बात थी और कोई कहानियां नहीं थी यह सब सच था किसी इंसान की जिंदगी इन रचनाओं से जुड़ी हुई थी जिससे वह प्रभावित था मैं बार-बार सोचता कि ऐसा क्यों होता है कि एक आम आदमी बेकसूर आदमी इस तरह दुर्घटना का शिकार हो जाता है और फिर जेल में पहुंच जाता है और यहां आकर गुनहगार बन जाता है और धीरे-धीरे वह गुंडा भी हो जाता है उसके सारे जीवन को दाग में करके यह लोग क्या करना चाहते हैं? एक साधारण सीधे-साधे आदमी की जिंदगी का यह अंक मन हैरान था पर सोच रहा था उसे ऐसा होना क्या संभव है कौन करना चाहता है यह है और क्यों पर प्रश्नों के उत्तर

कहीं सोचने से मिलते थोड़े ही है असल जिंदगी ए जिंदगी के मुहावरों से कहीं अलग होती है मुहावरे हम कुछ भी बनाने पर असल जिंदगी तो कुछ और दिखाती है कुछ और सिखाती है और हम कुछ और करते हैं जिस पर हमारा कोई बस नहीं होता.

ए करीम ने जितनी जानकारी थी वह सब बता दी वह लगातार बोल रहा था आगे भी वह बोलता रहा और बताता रहा,

‘ जेल में सारे हथकंडे इस्तेमाल किए गए पर वह 10 तक से बना हुआ है वही तोहरा तारा जो उसने पहली बार कहा था कि वह एक हिंदुस्तानी है और पाकिस्तान नौकरी के लिए आया है इसके अतिरिक्त वह कुछ नहीं जानता.

जब कोई जबाब नहीं मिला तो उसे अधिकारियों उसे चेंज चैन चेंज है डंडे डंडे से मिठाई एक शाम डंडा उसके उसके सिर्फ सिर फट गया खून देने लगा सब छोड़कर चले गए मैं बेहोश हो गया था काफी देर यूं ही पड़ा रहा ,

कुछ वक्त ऐसे ही बीत गया था तब जेल के अधिकारियों को याद आया फिर वह खून में सना पड़ा है उसे झटपट अस्पताल ले जाया गया काफी खून पहुंच चुका था मैं बेहोश था मैं डॉक्टरों ने उसकी दवा दारु की बोतल काफी दिन तक वह बेहोश रहा जब होश में आया तब से उसकी यही हालत थी.

मैं उसके दिमाग में चोट लगी थी परिणाम वह गुमसुम हो गया था हमेशा सोचता था बस दर्द से रहता रहता था यही कर आहट थी जो अमन ने सुनी थी.

है उसने अंदाजा लगा लिया था यह जरूर उसके अब्बा ही है रहीम के सारे घटना सुनाने से ले उसे यही समझ में आ रहा था लेकिन मैं साथ कहना नहीं चाहता था पर उसने सोच लिया था कि वह दादा से कहेगा कि दे उसे बूढ़े कैदी से मिल पाते यदि हो सके तो चाहे आधे घंटे को ही. यह सोच कर वह है और जगह और लोगों में दिलचस्पी लेने लगा अफजल उसके लिए एक शिक्षा स्थल बन गया था एक मदरसा सा जहां पर उसे इंसान की वितरित के बारे में जानना हर सीखना था इन लोगों के बीच में रह करके सीखना और बात है और किसी किताब में पढ़ना और बात है अब तो इंकार मनोविज्ञान भी जाना जा सकता है.

धीरे-धीरे जेल के माहौल में पूरी तरह रह गयारहीम उसका अच्छा दोस्त बन गया था शायद रहे उनको भी वह पसंद आया था तभी तो जब भी दे अपने कमरों से बाहर निकलते आस पास बैठे हुए दिखाई देते रहे एक अच्छा कहा नहीं कहा था वह हर घटना को बहुत अच्छे तरीके से सुनाता ऐसा लगता है जैसे कि कोई चित्र चल रहा हूं और हम घटना को अपने सामने होता हुआ देख रही हो

अगले दिन दादा से मुलाकात हुई वही खाने की जगह पर खाने के समय पर दादा ने पूछा .,

तो तुमने क्या सोचा? क्या करना चाहते हो? हूं बाहर जाना है या अभी यहीं रहना.’

दादा मैं वही करूंगा जो आप चाहेंगे बस काम करना एक काम करवा दीजिए मुझे और बूढ़े कैदी से एक बार मिलवा दीजिए पता नहीं क्या आकर्षण है कि मैं उनसे मिलना चाहता हूं. जब तक पर यहां थे तब तो मैंने मिलने की कोशिश नहीं की पर अब जाने क्यों बार-बार उनका सपना आता है और मैं उनसे मिलना चाहता हूं प्लीज दादा यह काम कर दीजिए मैं उन्हें जानता भी नहीं हूं फिर भी यह इच्छा मेरे भीतर बार-बार पैदा हो रही है क्या आप मेरी यह इच्छा पूरी कर पा करवा पाएंगे प्लीज दादा एक बार बस एक बार फिर आप जो कहेंगे वही करूंगा.

फिर थोड़ा रूक कर अमन बोला,

‘ एक बात और दादा. मेरे अंदर का बैठा हुआ इंसान बार-बार यहां के कैदियों के बारे में जानना चाहता है मुझे समझ नहीं आ रहा कि यहां जेल में आना रहना इतने दुख सह ना अपने ऊपर सैकड़ों इंसान लगवाना और फिर उनके बदले में बहुत ही सजा मिल ना अपने घरवालों से अलग रहना अपने परिवार से छूट जाना और जेल से बाहर निकल कर भी संसार में अनेक एक लांछन सहना यह सब करके भी लोग गलत काम करते रहते हैं वह सब जानते हैं समझते हैं फिर भी करते हैं इतने वर्षो से जेलें बनाई गई है लोगों को सजा दी गई है फिर भी यह गुनाह कम क्यों नहीं होता कोई इनसे सीखना क्यों नहीं है? क्या यह जिलों का होना सजा का मिलना सब बेकार है तू अगर सब बेकार है तो अभी तक यह नीति चल ही क्यों रही है किसी बुरे काम के बदले में सजा मिलेगी और जेल जाना पड़ेगा आखिर जेल जाना और सजा पाना भी कोई फालतू नहीं हुआ मेरे मन में बार-बार यह सवाल उठता है मैं बार-बार कह दो की शकल देखता हूं कुछ को छोड़ कर मुझे सभी भले लोग लगते हैं लगता है कि मैं खून खराबा कर ही नहीं सकते फिर यह सब क्या है?

दादा चुपचाप सुन रहे थे अमन बागे बोलता रहा,

‘ और और दादा यह तो सब आदमी हैं औरतों की तरह की जेल में भी मैंने कई औरतों को काम करते हुए देखा है उनकी हर आपसे हद होती है उन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ती है वह बेहद दुखी दिखती है कुछ को छोड़ दीजिए जो बहुत धाकड़ होती है वह तो ठीक दिखती हैं ज्यादा कर औरतें शर्म से झुकी जाती हैं उन्हें समझ नहीं आता कि जेल कैसे काटी फिर कुछ औरतें गर्भवती भी होती हैं उनके बच्चे भी यहीं होते हैं वह उन बच्चों के साथ अपना समय बिता लेती हैं पर फिर बच्चे के बनेंगे बच्चों का क्या होगा क्या अभी जेल में रहकर जेल के लोगों की तरह ही बनेंगे अगर ऐसा है std का क्या होगा?

मैं नहीं जानता दादा कि मेरे अंदर यह शब्द क्यों हो रहा है इतने प्रश्न क्यों पैदा हो रहे हैं क्या मेरी फितरत है कि मेरी यह पढ़ाई-लिखाई है जो मुझे इस तरह की बातें जानने के लिए कुछ आती रहती है पता नहीं पर मुझे इन सब के उत्तर खोजने के लिए लगता है की जेब में रहना पड़ेगा कुछ समय तो.

ए दादाप्रार्थना है कि आप मुझे कुछ समय जेल में रहने दें फिर बांटते जी का प्रोग्राम बनाएं और मुझे उन बूढ़े व्यक्ति से एक बार मिलवा दे बस यह जेल के लोगों के बारे में जानना भी मैं मैं भी मैं आपकी मदद चाहूंगा मैं जानता हूं कि आप इंसानी फितरत के बहुत अच्छे जानकार हैं आप बहुत समय से यहां हैं यह तो

जानते ही चाहूंगा कि आप क्यों यहां रह रहे हैं किंतु यह भी जानना चाहूंगा और लोग किस कारण किस वजह किस मजबूरी के कारण आए हैं आखिर कोई तो मजबूरी होती होगी .

मजबूरी है भूख-- यह भूख तन मन धन किसी की भी हो सकती है यह तक की ताकत की भी आने की भी हो सकती है अब किसी भी भूख के लिए कभी इंसान को यह करने के लिए कोई विवश कर सकता है या वह खुद ही मजबूर हो जाता है यह कौन सा मनोविज्ञान है इंसान के भीतर क्या होता रहता है बताएं ना दादा मैं क्या जानना चाहता हूं उसका हाल आप ही के पास है मुझे हमेशा लगता है कि आप एक ऋषि मुनि की तरह बहुत ज्ञानी है आपने यह रहकर बहुत सी तपस्या की है पहाड़ों पर जाकर कहीं तपस्या हो यह जरूरी नहीं है इसके लिए जेल भी किसी पहाड़ी से कम नहीं है.'

दादा पता नहीं किस सोच में हो गए थे काफी देर चुप रहे फिर रूठे से स्वर में बोले,

' देखता हूं क्या कर सकता हूं तू अभी कुछ वक्त जेल में रहो खुद जो जान सकते हो जानू फिर कभी इस बात पर बात करेंगे ठीक अभी सोचेंगे की जेल में आने वाले लोग क्यों आते हैं और यहां रह कर क्या बंद कर जाते हैं यहां कोई क्या सीख सकता है और क्यों आती है उनका गुनाह कैसा होता है वह क्यों करती है बहुत मुश्किल है सारे के सारे सवाल जितने मुश्किल सवाल है उससे कहीं ज्यादा मुश्किल है उनका जवाब? जिसके जवाब को जानने के लिए एक जन्म काफी नहीं है अनेक जन्म लेने होंगे अनेक इंसानों को पढ़ना होगा इंसानी फितरत के बारे में पहले से जानना होगा तब कहीं जाकर इनके कुछ उत्तर मिल पाएंगे वह भी अधूरी ही होगा पूरा तो कुछ भी नहीं है ना इस दुनिया में ना इस इंसान ने आना इस सृष्टि में 10 पूरा तो एकमात्र अल्लाह है जो सब कुछ जानता है जो कुछ करवाता है वही तो सब कुछ करवाता है हम तो सिर्फ कर कर दे जाते हैं अब क्या करवाता है वह और हम क्यों करते हैं इसका उत्तर भी वही दे सकता है कभी मिला तो तुमसे भी मिल पाऊंगा रहा उस बूढ़े आदमी का सवाल तो मैं कोशिश करूंगा पसली ध्यान रखूंगा पर फायदा नहीं करता.

कहकर दादा चुप हो गए.

दादा के चुप हो जाने का मतलब यह था कि अब बात खाता मैं समझ गया अमन समझ गया मैं उठा और यह पेड़ के नीचे कीघर पर आकर बैठ गया जहां बैठाया बैठता था सामने बैठा हुआ वह आदमी नहीं नहीं कहती कि वह मेरी निगाह में आया और मैं उसके बारे में सोचने लगा. .

मैंने उसके बारे में जानने के लिए रहीम को खोजने की कोशिश की पर रही हूं कहीं देखा नहीं आज पता नहीं रहे हैं बाहर नहीं निकला था मैंने सोचा उसके कमरे तक जाओ और गोकू में से जहां कर देखो कि वह क्यों नहीं आया ना मैं रहीम की ओर गया उस के जंगले में से जहां झांककर आवाज .

‘ कहां हो रहे भाई तबीयत तो ठीक है आज बाहर क्यों नहीं आए हो मैं धूप में आओ आओ कुछ बातचीत भी करते हैं और कुछ तुम्हारी तबीयत का हाल भी पूछते हैं नहीं भाई सुन रहे हो ना आओ बाहर आओ कभी एक अप्सरा तो दिखाई दिया मैं अमन बोल कर चल दिया ऊंचा सिर झुकाए है फिर अपने पेड़ के पास आ गया है आकर पत्थर पर बैठ गया दूर से रहे माता दिखाई दिया सामने वाला कह दी अभी तक सिर झुका है उसी तरह बैठा था पता नहीं यह कहती है या मरीज है सबके सब पर ऐसी लगती हैं शरीर के नाते ही मन के दोहे तो इसका मतलब मन की बीमारी के कारण भी बहुत से लोग गुनाह करते होंगे और जेल में चले आते हैं कोई इन जिलों को देखकर इन की समस्याएं समझता क्यों नहीं है और उन्हें समझाने की कोशिश क्यों नहीं करता मैंने सुना है कि कुछ खेलों में इन को सुधारने की कोशिश भी की गई है कुछ खेलों में कुछ पढ़े-लिखे कैदियों को पढ़ाने की कोशिश की की है यह भी सुना है कि दो तीन कैदी तो अपनी अच्छी पढ़ाई के कारण नौकरी पर भी लग गए हैं फिर बाकी सब के साथ भी ऐसा क्यों नहीं हो सकता क्या जेल के अवसर इन कैदियों को सिर्फ नंबर मांगते हैं इंसान नहीं तभी तो इनसे जड़ वस्तु जैसा व्यवहार किया जाता है जिनका खाना-पीना ढंग का ना सोना रहने की जगह नाम के पंजे का इंतजाम बस मजबूर व्यक्ति की तरह और एक मजदूर की तरह काम कराया जाना और भैंस जानवर की तरह वीट देना या जानवर के साथ व्यवहार करना यह सब कितना दुखद है.

अमन जितना सोचता ऊंचा होता उसके भीतर एक बार उठता उसका मन करता कि मैं उठे एक भाषण दे सारे जेल के अधिकारियों को जगा दें सारे कैदियों के मन में कुछ करने की इच्छा पैदा करें और फिर जेल जे ल में रहकर देश स्कूल बन जाए जिसमें सब विद्यार्थियों सब पढ़ने के लिए है सब पढ़े सीखें जिंदगी जीने का ढंग सीखे तब यह जेल जेल नहीं कहलाएगी तब इसे चेंज फूल कहा जाएगा कितना मजा है की जेल जगहकी ग है जिसका नाम स्कूल हो जाए.